जन भगत कहण

(निहकलंक हरि शब्द भंडार विच्चों)

सोहँ महाराज शेर शिंघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर शिंघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर शिंघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर शिंघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर शिंघ विष्नूं भगवान दी जै

जन भगत कहे वेख मातलोक, प्रभ आपणा ध्यान लगाईआ। तेरी कोई ना रक्खे ओट, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुरानां विच्चों पढ़ के सलोक, रसना जिह्वा रहे गाईआ। मन वासना मंगदे मोख, मुफ्त झोली अग्गे डाहीआ। तेरा नूर तक्के ना कोई निर्मल जोत, साध सन्त अक्ख ना कोई खुल्हाईआ। तूं बैठा रिहों ख़ामोश, गुंग मुख नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरवैर लै अंगढ़ाईआ।

जन भगत कहण उठ वेख तक्क, ताकतवर आपणी लै अंगढ़ाईआ। चार कुण्ट नव खण्ड सत्त दीप सभ ते पिआ शक़, विष्न ब्रह्मा शिव शंकर बैठा अक्ख चुराईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरे दवारे आए नट्ठ, लोकमात नाता जगत तुड़ाईआ। जुग चौकड़ी मार्ग लिख के आए दस्स, अक्खरां हरफ़ां नाल समझाईआ। अन्तम सारे कर के बस, बस्ते आपणे बैठे बंधाईआ। किसे दा चले ना कोई वस, वास्ता सारे रहे पाईआ। सिख्या दे दे गए थक्क, थकावट सभ दे उत्ते छाईआ। तेरा मिले ना नाम रस, रस्ता हक़ हकीकत विच्चों ना कोई दरसाईआ। सति दवारा नज़र ना आए हट्ट, वणजारे घर घर बह बह कूड़ा वणज रहे कराईआ। फिरी दरोही मनमत, गुरमत ना कोई रखाईआ। बिन तेरे पारब्रह्म कोई ना रक्खे पत्त, सच सहाई नज़र कोई ना आईआ। नेत्र खोल्ह अगम्मी अक्ख, लोचण आपणा नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान हो सहाईआ।

जन भगत कहण उठ प्रभ जाग, जागण वेला आईआ। सृष्ट सबाई होई काग, बुध्धी काग वांग कुरलाईआ। घर घर लग्गी कूड़ी आग, अगनी तत्त जलाईआ। अन्तर उपजे ना किसे राग, गीत अनाद ना कोई सुणाईआ। कन्त मिले ना कोई सुहाग, नार दुहागण

दए दुहाईआ। सच सरनाई कोई ना जाए लाग, चरन कँवल ना कोई वडयाईआ। तेरे नालों बिन भगतां सभ ने कीता त्याग, नाता तोड़ बैठे मुख भवाईआ। दीपक जोत ना जगे चिराग़, शमा सच ना कोई चमकाईआ। सच दवारिउँ दूर दुराडे रहे भाग, नेरन नेरा हो के नेत्र दरस कोई ना पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर होए लाजवाब, लेखा तेरी झोली रहे सुटाईआ। परम पुरख सुल्तान श्री भगवान जन भगत तेरे मुहताज, मुहब्बत तेरे नाल रखवाईआ। सीस जगदीस सोहे ताज, तख़्त निवासी इक्को नज़री आईआ। सच स्वामी कारज कर रास, करता पुरख कुदरत तेरा रूप तेरे विच्चों तेरी धार प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, उठ वेख आपणा घर, निरगुण आपणा फेरा पाईआ।

जन भगत कहण प्रभ हो दलेर, बल आपणा आप धराईआ। पिछला छड्ड दे हेर फेर, अग्गे साचा राह चलाईआ। लेखा चुक्के ज़बर ज़ेर, हमज़ा हरफ़ ना कोई पढ़ाईआ। दूर दुराडे वेख नेरन नेर, पान्धी आपणा पन्ध मुकाईआ। कूड़ी क्रिया लहणा देणा दे नबेड़, शिरकत मिटे जगत लोकाईआ। दो जहानां वाली धुर दे शेर, शाह पातशाह आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान आपणा वेस वटाईआ।

जन भगत कहण श्री भगवान, दो जहानां वाली दोज़ख़ बहिश्त तेरा राह तकाईआ। निरगुण सरगुण बण पाली, प्रितपालक हो सहाईआ। लक्ख चुरासी जीव जंत बण अयाली, मूर्ख मुग्ध पार कराईआ। सति दवारा होया ख़ाली, साचा नाम झोली विच्च ना कोई टिकाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुरान माया भुल्ल करन दलाली, वणज हक़ ना कोई कराईआ। तेरा नूर नज़र ना आइ जोत अकाली, अकल कलधारी तेरा भय सिर ना कोई टिकाईआ। फल दिसे ना किसे डाली, पतझड़ बैठी रूप वटाईआ। मन वासना मत होई मतवाली, मतलब आपणा अग्गे सभ नूं रही वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग वेख अगनी तत्त तपे कुठाली, सांतक सति सति ना कोई कराईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा खेल बेमिसाल, मिसल आपणी अगली दे समझाईआ। (२५ चेत २०२१ बि किरपा सिँघ दे गृह)

✻ ✻ ✻ ✻ ✻

जन भगत कहण प्रभ किरपा कर, मेहरवान दया कमाईआ। कूड़ी क्रिया सभ दी हर, हिरदे हरि हरि सच वसाईआ। अन्तर आत्म आ के वड़, दूई द्वैती पड़दा लाहीआ। साचे मन्दर मुनारे खड़, घर घर विच्च कर रुशनाईआ। सुरती सुरत आपे फड़, शब्दी अक्खर खुल्हाईआ। पारब्रह्म प्रभ दे सच्चा वर, सच तेरी सरनाईआ। इक्क सरनाई जाईए पड़, दूजा इष्ट ना कोई मनाईआ। धुर दा अक्खर लईए पढ़, बोध अगाध वखाईआ। जीवदिआं जग जाईए मर, मरयां जीवण दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर ठांडे लए बहाईआ।

जन भगत कहण प्रभ हो मेहरवान, दीन दयाल दया कमाईआ। शब्द अगम्मा दे दान, झोली सच भराईआ। दर बेनन्ती कर परवान, मेहर नज़र उठाईआ। सच संदेसा सुणा कान, धुर दा राग अलाईआ। भाग लगा काया मकान, मन्दर वज्जे वधाईआ। नाम दे इक्क फ़रमाण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सज्जण साचे लए मिलाईआ।

जन भगत कहण प्रभ तेरी सच सरोत, सुण सुण बैठे ध्यान लगाईआ। जगत लभ्भयां लभ्भे ना कोई खोज, खोज खोज थक्की सर्ब लोकाईआ। भेव अभेदा खोल्ह लोक परलोक, पड़दा दए उठाईआ। अन्तर आत्म दस्स इक्क सलोक, अन्तश्करन दे बदलाईआ। तेरे नाल मिल के माणीए मौज, मौजूदा हो के दरस दिखाईआ। कूड़ी क्रिया मिटे हउमे रोग, ब्रह्म भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मन्दर दए सुहाईआ।

जन भगत कहण प्रभ गृह मन्दर सुहा, सोभावन्त डेरा लाईआ। निरगुण निरवैर महल्ल अट्टल कर रुशना, दीवा बाती इक्को डगमगाईआ। शब्द अनादी धुर दा राग सुणा, बाहरों करे ना कोई पढ़ाईआ। जुग जन्म दे विछड़े कर किरपा लए मिला, आवण जावण लक्ख चुरासी पन्ध रहे ना राईआ। फड़ फड़ बाहों साचा मार्ग दए वखा, कूड़ी क्रिया परे हटाईआ। तूं दाता मालक बेपरवाह, मालक हो के हो सहाईआ। ख़ालस ख़ालसा लए बणा, चार वरन दए वडयाईआ। नेत्र रोवे नैण उछाले धरनी धरत धवल जगत मां, खुल्ही मेंढी दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लए मिलाईआ।

जन भगत कहण प्रभ क्यों बैठा छुप, प्रभ आपणा आप छुपाईआ। कलिजुग अन्तम वेख अन्धेरा घुप्प, पड़दा सके ना कोई उठाईआ। केहड़ी कूटे रिहों लुक, आपणी नज़र लए उठाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां पैंडा रिहा मुक्क, मुकम्मल बैठे खैहड़ा छुडाईआ। मेहरवान हो के ठाकर तुठ, भगवन दया कमाईआ। साजण हो के घर घर पुच्छ, आपणा पन्ध मुकाईआ। ख़ाली भण्डारे नहीं कोल कुछ, सारे देण दुहाईआ। तेरा नज़र ना आए कोई साचा पुत्त, पिता पुरख अकाल ना कोई मनाईआ। सति निशानउँ सारे गए उक, चिल्ला तीर कमान कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आ के दे साचा वर, आपणा भेव खुल्हाईआ।

जन भगत कहण क्यों दित्ती पिठ्ठ, करवट लै बदलाईआ। तेरा धाम प्रभू अनडिठ, बिन तेरी किरपा नज़र किसे ना आईआ। तूं आदि जुगादी धुर दा पित, पतिपरमेश्वर तेरी सरनाईआ। ग़रीब निमाणयां नाल कर हित, हितकारी हो के वेख वखाईआ। ठाकर हो के वस चित, ठगोरी रहण कोई ना पाईआ। तेरा दरसन करीए सदा नित, स्वच्छ सरूपी रूप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत लए उठाईआ।

जन भगत कहण प्रभ लए अंगड़ाई, सभ तेरा ध्यान लगाईआ। झल्ली ना जाए अन्त जुदाई, जुदा जुज़ ना कोई रखाईआ । आत्म परमात्म कर कुड़माई, साचा सगन मनाईआ।

साढ्हे तिन्न हत्थ मन्दर अंदर वज्जे वधाई, मिल सखीआं राग अलाईआ। सेज सुहाणी चाईं चाईं, आसण सिँघासण डेरा लाईआ। निर्मल नूर जोत करीं रुशनाई, नूरो नूर डगमगाईआ। मैं सच स्वामी वेखवां चाईं चाईं, चाओ घनेरा देणा प्रगटाईआ। आसा मनसा हिरस हवस पूर कराई, करते तेरे हत्थ वडयाईआ। दिवस रैण अट्ठे पहर घड़ी पल इक्को रंग रंगाईं, धुर दा रंग इक्क चढ़ाईआ। तूं ही मालक ख़ालक पिता माई, पिता पूत लैणे गोद उठाईआ। गोबिन्द बूटा पुटिआ इक्को काई, जिस दी कागत कलम शाही देवे ना कोई गवाईआ। जिस दे पिच्छे निरगुण निरँकार बण राही, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। तेरे जन बैठे तेरा ध्यान लगाई, दूजी ओट ना कोई तकाईआ। तूं मन का मणका फेर मन, मनसा मोह मिटाईआ। नाम पदार्थ दे धन, दौलत इक्क वरताईआ। भाग लगा छप्पर छन्न, महल्ल अट्टल परे सुटाईआ। पंच विकारा दे डन्न, घर घर विच्च रहण ना पाईआ। गढ़ हँकारी भाण्डा भन्न, भरम दए चुकाईआ। कर प्रकाश अन्धेरे अंन्, साचा नूर दए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां बेड़ा मात बंन्, अन्तम बेड़ा बंने दए लगाईआ।

जन भगत कहण प्रभ आ छेती, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। बन्दे बन्दगी विच्चों भुल्ले तेरी नेकी, निहकर्मी साचा कर्म ना कोई कमाईआ। अंदर वड़ के धुर दा बणे कोई ना कोई भेती, नौ दवारे भज्जण वाहो दाहीआ। माया ममता कलिजुग खेल कूड़ी खेडी, चारों कुण्ट खेह उडाईआ। तेरी खाणी बाणी वस्त जो मात अमोलक भेजी, सो भजन बन्दगी सारे रहे भुलाईआ। आपणे घर विच्चों निकल के सारे होए परदेसी, मालक मकान नज़र ना कोई आईआ। जिउँ नानक निरँकार भेजिआ धर के मोढ्हे भूरी खेसी, ख़ालस आपणा रूप प्रगटाईआ। जिउँ गुरू गोबिन्द दे के गिआ संदेशी, धुर दा ढोला राग अलाईआ। सृष्ट सबाई नेत्र लोचण नैण आपणे पेखी, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। जन भगतां बण के सच्चा हेती, गुरमुख गुर गुर गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान फेरा पाईआ।

जन भगत कहण प्रभ आ के वेख साड्डी झुग्गी, हड्ड मास नाड़ी पिंजर सोहणी बणत बणाईआ। जिस दी औध जांदी पुग्गी, पैंडा आपणा पन्ध चुकाईआ। गफ्लत विच्च अंदर सुरती सुत्ती, सवाणी सके ना कोई जगाईआ। तूं कन्त सुहाग हो के पुच्छीं, पतिपरमेश्वर दया कमाईआ। जुग जुग जगत जे कर्म कर के रुस्सी, रुसिआं लए मनाईआ। जे मार्ग पै गई पुट्ठी, रहबर हो के दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाईआ।

जन भगत कहण प्रभ आ वड़ अंदर, मंज़ल पन्ध मुकाईआ। आपणी हत्थीं तोड़ जंदर, जो दित्ता सच लगाईआ। भाग लगा अन्धेरी कंदर, गृह मन्दर कर रुशनाईआ। सोहणा लग्गे कूड़ा खण्डर, सच सुच्च वरताईआ। रुत्त मौले काया कलर बंजर, नाम फुलवाड़ी पत्त डाली महकाईआ। मनुआ मन भवे ना बन्दर, दह दिशा ना उठ उठ धाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर आपणा दए वखाईआ।

जन भगत कहण प्रभ असीं होए वैरागी, बिरहों रोग सताईआ। जगत सृष्टी रहे त्यागी, तेरा ध्यान लगाईआ। नाम पदारथ देवे दाती, वस्त सच वरताईआ। दिने जागदिआं दरस दे सुत्यां राती, रूप अनूप आपणा इक्क प्रगटाईआ। अमृत आत्म बख्शीं बूंद स्वांती, अगनी तत्त तत्त बुझाईआ। नज़री आवीं इक्क इकांती, सचखण्ड आपणा डेरा लाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां आउण तों पहलों जो लिख के दित्ती पाती, धुर दा लेख दृढ़ाईआ। ओस दे अंदर सानूं मरवा इक्क झाकी, झाकी नाल रलाईआ। थोड़ी खिड़की खोल् ताकी, इशारे नाल समझाईआ। मंज़ल चढ़ के वेखीए वाटी, आपणा पन्ध मुकाईआ। दर्शन करके कमलापाती, कँवल नैण बिगसाईआ। फिर जाणीए प्रभ तेरी सच्ची साखी, जो जुग जुग जगत सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच पड़दा दे चुकाईआ।

सच साखी दस्स साख्यात, सखी सुल्तान तूं ही नज़री आइंदा। जो लेखा लिखया बिन कलम दवात, काग़ज़ शाही वंड ना कोई वंडाइंदा। जिस दे हरफ़ लभ्भण ना विच्चों किसे लुगात, शब्दां विच्च ना कोई समझाइंदा। जिस दा कन्ना सिहारी बिहारी कोई ना लग मात, मात्रा विच्च वंड ना कोई वंडाइंदा। जिस दी हरफ़ां विच्च ना कोई किताब, कुतबख़ाने ना कोई टिकाइंदा। उस दा पड़दा चुक्क नक़ाब, जनभगत मंग मंगाइंदा। असीं वेखीए पिछला लहणा देणा आपणा हिसाब, जो हिस्सा तेरे घर नज़री आइंदा। अगों कहे पुरख अकाल गुरू महाराज, महिंमा साची विच्च समझाइंदा। खेलणहार खेल आदि जुगादि, जुग चौकड़ी वेख वखाइंदा। जन भगतो सम्मत वीह सौ इकी अन्त अख़ीरी दस्सो उस दा राज़, जिस दे विच्चों रोज़ा निमाज़ अञ्जील कुरान शास्त्र सिमरत वेद पुरान बाहर कढाइंदा। जिस दे विच्चों गुर अवतारां पीर पैगम्बरां दा होवे आग़ाज़, निराकार साकार रूप वखाइंदा। जिस दे विच्चों अगम्मी बिन पिता मात जम्मी निकले धार, सति सतिवादी सोभा पाइंदा। एहो खेल रखिआ हत्थ आपणे करतार, जिस दा अन्त ना कोई सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां नाल कर के प्यार, प्रेम रीती प्यार विच्चों प्रगटाइंदा। (२७ भादरों २०२१ बि जगीर सिंघ दे गृह)

जन भगत कहण प्रभ तेरी ओट, आदि अन्त तकाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, घर घर विच्च होवे रुशनाईआ। शब्द अगम्मी ला चोट, धुन नाद शनवाईआ। कूड़ी क्रिया कढ्ढदे खोट, सच सुच्च समझाईआ। भेव चुका दे लोक परलोक, दो जहानां अक्ख खुल्हाईआ। नाम सुणा दे सच सलोक, ढोला बेपरवाहीआ। चरन कँवल दी दे दे मौज, मजलस सच वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग विछड़े लए मिलाईआ।

जन भगत कहण प्रभ किरपा कर, हत्थ तेरे वडयाईआ। निरभउ चुका भय डर, नूरो नूर कर रुशनाईआ। घर विच्च खोल् के आपणा घर, गृह मन्दर दे सुहाईआ। नज़री आ नरायण नर, दूजा इष्ट ना कोई वखाईआ। आत्म परमात्म लए फड़, सुरती शब्द जुड़ाईआ।

साचे मन्दर आ के वड़, क्यों बैठा मुख छुपाईआ। किल्ला तोड़ हँकारी गढ़, हँ ब्रह्म दे समझाईआ। तेरा खेल नरायण नर, निरगुण आदि जुगादि नज़री आईआ। सच दवारे दे वर, वस्त अमोलक झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

जन भगत कहण प्रभ चुक्क दे उहला, पड़दा रहण कोई ना पाईआ। शब्द अगम्मी बण विचोला, आपणा मेल मिलाईआ। बोध अगाधा सुणा ढोला, अक्खरी शब्द ना कोई जणाईआ। लेख चुका दे धरनी धरत धौला, आपणा घर वखाईआ। तेरे बिरहों विछोड़े अंदर होया कमला, बुद्धी रही ना राईआ। हत्थां नाल वजाया ना जाए तबला, ढोलक छैणा ना कोई खड़काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत लै तराईआ।

जन भगत कहण प्रभ आ अग्गे, निरगुण आपणा दरस दिखाईआ। तेरा दीपक जोती इक्को जगे, दो जहान करे रुशनाईआ। तेरे पिच्छे सज्जण साक सैण छड्डे, नाता तोड़िआ भैण भाईआ। अमृत रस दे दे मज़े, मंज़ल आपणी दे वखाईआ। प्रेम प्रीती अंदर बद्धे, अन्तर आत्म ध्यान लगाईआ। सच सिँघासण बहि बहि सजे, आत्म सेजा इक्क विछाईआ। काग रूप बग्ग बपड़े बग्गे, हँस दे बणाईआ। धुन आत्मक वज्जा नद्दे, अनहद राग दे सुणाईआ। पंच विकार जाण भज्जे, काम क्रोध लोभ मोह हँकार रहण ना पाईआ। पवण अगम्मी ठंडी वगे, तत्ती वा ना लागे राईआ। दिवस रैण रहणा सॅजे खब्बे, चारों कुण्ट सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जग आपणा मेल मिलाईआ।

जन भगत कहण प्रभ खोल्ल अक्ख, आपणा नैण उठाईआ। सर्ब स्वामी हो प्रतक्ख, शहनशाह बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग तेरा गा गा थक्के जस, वेद पुरान शास्त्र सिमरत सलाहीआ। सच दवार हो प्रगट, प्रगट आपणी धार चलाईआ। कलिजुग कूड़ी क्रिया वेख अन्धेरी रात, नूरी चन्द ना कोई चमकाईआ। दीन मज़हब झगड़ा पिआ ज़ात पात, सच जमात नज़र कोई ना आईआ। अलफ़ ये वाली पढ़के थक्के लुगात, तेरा निर अक्खर समझ किसे ना आईआ। लेखा लिखदे रहे नाल कलम दवात, शाही जोड़ जुड़ाईआ। सारे मंगदे, गए आबे हयात, पीर पैगम्बर तेरे अग्गे झोली डाहीआ। भगतां दी सभ दी वक्खरी बात, बातन मंग मंगाईआ। पूरा कर भविख्त वाक, जो वाकिआ गिआ लिखाईआ। सच महल्ला वेख महिराब, महिबूब आपणा फेरा पाईआ। तेरे क़दमा इक्क आदाब, चशमदीद नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मुरीद मुशर्द लए मिलाईआ।

जन भगत कहे उठ प्रभ ठाकर, ठोकर आपणा नाम लगाईआ। कलिजुग वहण डूंघा सागर, बिन तेरे तरन कोई ना पाईआ। बेड़ी नईआ पार ना करे काग़ज़, चप्पू नाम ना कोई लगाईआ। पंडत पन्धे मुल्ला शेख़ भुल्ले तेरी इबादत, कलमा हक़ ना कोई पढ़ाईआ। सच वस्त दी करे ना कोई सखावत, नाम निरँकारा झोली कोई ना पाईआ। मन मनुआ

घर घर दिवस रैण करे बग़ावत, भय भउ ना कोई रखाईआ। तूं मालक ख़ालक आदि जुगादी सही सलामत, शहनशाह अखवाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिन्नां दी दे के गए ज़मानत, अन्तम बरी दे कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ जन भगत कहण प्रभ चुक्क दे पड़दा, मुख नक़ाब उठाईआ।

सन्त सुहेला वेख सड़दा, त्रैगुण अगनी रही तपाईआ। गुरमुख तेरा सृष्टी कोलों डरदा, नेत्र नैण नीर वहाईआ। गुरमुख घर आपणे मूल ना वड़दा, बेवतन होयां होई जुदाईआ। मुरीद मुर्शद किसे ना मिलदा, चौदां तबक रहे कुरलाईआ। तूं मालक हर घट दिल दा, दिलबर इक्क अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वेख वखाईआ।

जन भगत कहे प्रभ तेरी उडीक, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां दस्सया ठीक, शब्द निशाना तीर चलाईआ। कलिजुग अन्तम होए अन्धेरा तारीक, साचा नूर ना कोई रुशनाईआ। सतिगुर नाल करे ना कोई प्रीत, हिरदे हरि ना कोई वसाईआ। झगड़ा पै जाए ऊँच नीच, आत्म प्रेम ना कोई दृढ़ाईआ। तैनूं घर विच्च वेखे ना कोई नज़दीक, दूर दुराडे सारे रहे सुणाईआ। पारब्रह्म तेरे बिन बण जाण सारे शरीक, लाशरीक तेरी समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, जन भगत मंग मंगाईआ।

जन भगत कहण प्रभ हो मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। सचखण्ड निवासी बख्श दान, नाम निधाना झोली पाईआ। नज़री आ इक्को काहन, ओम रहीम बेपरवाहीआ। साचा मन्त्र दस्स गाण, गहर गम्भीर समझाईआ। तेरा झुल्ले इक्क निशान, दो जहान सीस निवाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुरान, पढ़ पढ़ रहे गाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दे के गए बयान, लेखा लिख के कलम शाहीआ। जोधा सूरबीर इक्क बलवान, पुरख अकाल इक्क अखवाईआ। जो सिध्धा जन भगतां मिले आण, राह विच्च ना कोई अटकाईआ। निरगुण सरगुण खेल करे महान, निरवैर वडी वडयाईआ। हरिजन वेखे बाल अंञाण, गुरमुख गोद उठाईआ। गुरमुखां दे फ़रमाण, फुरने कूड़े बन्द कराईआ। सच्चा मन्दर दस्स इक्क मकान, महिबूब दए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ।

जन भगत कहण प्रभ दस्स दे जोग, जुगत इक्क जणाईआ। जन्म जन्म दा कट्टया जाए विजोग, विछोड़ा रहण कोई ना पाईआ। तेरे नाल होवे संजोग, सुरती शब्द कुड़माईआ। साड्डिआं चरनां हेठ दबा दे मुकती मोख, मेहरवान मेहर नजर उठाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, जोती जोत डगमगाईआ। आवण जावण लक्ख चुरासी दी मिट जाए सोच, अवण गवण ना कोई भवाईआ। नाम खुमारी दे मदहोश, मधुर धुन ना राग सुणाईआ। खैहड़ा छुट्ट जाए लोक परलोक, झेड़ा चुक्के जगत लोकाईआ। वसेरा मिले धुर दे कोट, सचखण्ड साचा दे वखाईआ। जिथ्थे बिन तेरी किरपा कोई ना सके पहुंच, शाह सुल्ताना हत्थ किसे

ना आईआ। प्रभू तेरे चरन दवारे माणीए सच्ची मौज, ग़मी ख़ुशी नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां तेरी आस रखाईआ।

जन भगत कहण प्रभ पूरी करदे आसा, इक्क तेरा ध्यान लगाईआ। चरन कँवल दा दे भरवासा, भावनी पूर वखाईआ। अन्तर आत्म दे दे साथा, सगला संग निभाईआ। बिन अक्खरां वाला दस्स दे पाठा, पूजा इक्क जणाईआ। प्रेम प्यार दा जोड़ दे नाता, होवे ना कदे जुदाईआ। धुर दा मालक बण जा सज्जण साथा, सगला संग वखाईआ। तैनूं पैगम्बरां मन्नया आपणा आका, गुर गुर पुरख अकाल जणाईआ। तूं सदा सहाई अनाथ अनाथा, ग़रीब निमाणयां गोद उठाईआ। कबीर जुलाहा मार के गिआ आवाज़ां, सुत्यां जगत हिलाईआ। जिन्हां मिल्या पुरख समराथा, उहनां हरस रही ना राईआ। कलिजुग अन्तम वेख खेल तमाशा, चारों कुण्ट अक्ख खुल्हाईआ। कूड़ी क्रिया भोग बिलासा, सृष्टी दृष्टी रही वखाईआ। लेखा चुक्कया पिता माता, पिता पूत ना कोई वडयाईआ । भईआ भैण ना कोई साका, नार कन्त दोहागण रूप वटाईआ। झगड़ा पिआ विच्च समाजां, धीरज धीर ना कोई रखाईआ। किरपा कर गरीब निवाज़ा, ग़रीब निमाणे रहे कुरलाईआ। गोबिन्द दस्सया सम्बल नगर तेरा वासा, जिस दी समझ कोई ना पाईआ। जन भगतां तेरे उत्ते भरवासा, भटकणा सभ दी दे बुझाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल तेरे घर की घाटा, देंदिआं तोट कोई ना आईआ। तूं शाहो भूप वड राजन राजा, शहनशाह इक्क अखवाईआ। सन्त सुहेला रक्खें लाजा, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा मेला लए मिलाईआ।

जन भगत कहण प्रभ कर मिलाप, मिलणी जगदीश कराईआ। आपणा दस्स अगम्मी जाप, जिस दा छत्ती राग भेव ना पाईआ। धुर दरबारों मार आवाज़, बिन कन्नां दे सुणाईआ। वस्त अमोलक बख़्श दात, सति खज़ाना दे भराईआ। उठ के वेख आपणी ज़ात, आत्म परमात्म तेरा रूप नज़री आईआ। सज्जण सुहेले जोड़ नात, आपणा बंधन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल मिलाईआ।

जन भगत कहे उठ निरँकार, निरगुण आपणी लै अंगढ़ाईआ। सन्त सुहेले कर ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। तैनूं मन्नया सभ दा सांझा यार, जुग चौकड़ी फेरा पाईआ। कलिजुग द्वापर त्रेता सतिजुग विच्च संसार, वेखें चाईं चाईंआ। सदी वीहवीं हाहाकार, अगनी तत्त ना कोई बुझाईआ। कूड़ी क्रिया वज्जे नगार, डंका नाम ना कोई सुणाईआ। ग़फलत विच्च सुत्ते पैर पसार, नेत्र अक्ख ना कोई खुल्हाईआ। कूड़ीआं सखीआं मंगलाचार, सुरती शब्दी गोपी काहन रूप ना कोई वटाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द राम नाल प्यार, आत्म राम मिलण कोई ना पाईआ। अक्खरां वाला पढ़न सतिनाम, सति सरूप ना कोई समाईआ। वाहिगुरू कह के सारे गाण, गुर गुर रंग ना कोई रंगाईआ। पढ़ पढ़ थक्के वेद क़ुरान, शास्त्र सिमरत गीता ज्ञान रहे जणाईआ। कलमयां नाल कर कल्याण, तीस बतीसा राग अलाईआ। मसले करके अञ्जील कुरान, काअबे सीस झुकाईआ। तैनूं मिले ना कोई

श्री भगवान, पारब्रह्म तेरा दरस कोई ना पाईआ। मन्दर मस्जिद गुरदवारे मठ तेरा करन ध्यान, अंदरों अक्ख ना कोई खुल्हाईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले परबत फिरन सवान, बजर कपाटी कुण्डा कोई ना लाहीआ। अठसठ तीर्थ गंगा गोदावरी जमना सुरसती करन इशनान, आत्म सरोवर नहावण कोई ना जाईआ। पूजा पाठ करके वंडदे दान, दाते दानी तेरे चरनां सीस ना कोई निवाईआ। गुर अवतार कहण असीं होए हैरान, पीर पैगम्बर कहण साडी अक्ख शरमाईआ। तेरा साचा सुणे ना कोई फ़रमाण, जो दिवस रैण अठ्ठे पहर काया मन्दर रहे जणाईआ। कूड़ी क्रिया जगत होया अभिमान, माया ममता करे लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, धुर मस्तक वेख वखाईआ।

धुर मस्तक लेखा वेख आप, आपणी दया कमाईआ। रूह बुत्त दिसे ना कोई पाक, ख़ाकी ख़ाक ना कोई चतुराईआ। बन्द कुआड़ी खुल्लया ना किसे ताक, पड़दा सके ना कोई उठाईआ। जगत नैणां नाल सारे रहे झाक, निज नेत्र अक्ख ना कोई प्रगटाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दस्स के गए भविक्ख वाक, रागाँ नादां विच्च सुणाईआ। जन भगतां आपे देवे साथ, सगला धुर दा संग निभाईआ। प्रगट हो पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता फेरा पाईआ। काया मण्डल पा के रास, अचरज लील्हा दए वखाईआ। जन भगतां रक्खे पास, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। भेव चुका के पृथ्मी आकाश, ब्रह्मण्ड खण्ड लेखा दए मुकाईआ। अन्त मिला के आपणी ज़ात, जोती जोत जोत विच्च समाईआ। किरपा करे कमलापात, पतिपरमेश्वर वड वडयाईआ। सच महल्ल वखा महिराब, अर्श कुर्श दोवें पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वडयाईआ।

जन भगत कहण प्रभ तेरा सहारा, दूजा नज़र कोई ना आईआ। निरगुण रूप तेरा निरँकारा, जोती जोत डगमगाईआ। शब्द अगम्म तेरा जैकारा, दो जहानां करे शनवाईआ। महल्ल अट्टल तेरा मनारा, सचखण्ड साचा सोभा पाईआ। दीआ बाती तेरा उजिआरा, निरगुण जोत इक्क अरववाईआ। अगम्म अथाह तेरा नगारा, नौबत नाम सुणाईआ। तेरा अमृत ठंडा ठारा, जलधारा इक्क वहाईआ। त्रैगुण माया तेरा अंगिआरा, पंज तत्त तेरी वडयाईआ। जुग चौकड़ी खेल न्यारा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आप वखाईआ। निरगुण सरगुण तेरा अवतारा, गुर अवतार तेरा रूप नजरी आईआ। पीर पैगम्बर तेरा अखाड़ा, लोकमात रहे वखाईआ। जन भगत तेरा नज़ारा, बेनज़ीर नज़री आईआ। कर किरपा दे उह इशारा, जिस विच्च आशक माशूक रहण कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ।

जन भगत कहण तेरी महिंमा अकथ्थ, कथनी कथ ना सके राईआ। जुग चौकड़ी चलावणहारा रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। वसणहारा घट घट, लक्ख चुरासी रिहा समाईआ। सच दवारा खोल्हण वाला हट्ट, बण वणजारा फेरी पाईआ। लक्ख चुरासी वेखे आपणी अक्ख, चारे खाणी फोल फुलाईआ। भगत सुहेले विच्चों कढ्ढ, गुर चेले मेल मिलाईआ।

जगत रीती विच्चों कर के अड्ड, मन्दर मसीती खैहड़ा दए छुडाईआ। जगत दवारा करके पार हद्द, नव नौ चार लेख मुकाईआ। धुर दरगाही सुणा के छन्द, संसा सारा दए मिटाईआ। आत्म परमात्म चाढ़ के रंग, कसुम्बड़ा रूप दए गवाईआ। निझ घर दे के सच अनन्द, परमानंद विच्च समाईआ। भेव खुल्हा के हँ ब्रह्म, सो पुरख करे पढ़ाईआ। लेखा जाणे आपणा मंम, मेहरवान वड गुसाईंआ। भगत उधारन जिस दा कम्म, निहकरमी इक्क अखवाईआ। नित नवित्त बेड़ा बन्नृ, नईआ नौका नाम टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान इक्क अखवाईआ।

जन भगत प्रभ मारन ताहना, इक्को वार जणाईआ। कलिजुग वेख जगत जहाना, आपणी अक्ख खुल्हाईआ। सति धर्म ना दिसे कोई निशाना, कूड़ी क्रिया वज्जी वधाईआ। चारों कुण्ट माण अभिमाना, हँकार विकार करे लड़ाईआ। मनुष दिसे ना कोई दाना, मूर्ख मुग्ध नज़री आईआ। भरमे भुल्ले राज राजाना, शाह सुल्ताना सार ना पाईआ। किरपा कर श्री भगवाना, हरि भगत रहे जणाईआ। साड्डा तेरे उत्ते माणा, सिदक तेरे नाल रखाईआ। तूं हर घट जाणी जाणा, गृह गृह वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कल आपणा फेरा पाईआ।

श्री भगवान सच दृड़ौंदा ए। अबिनाशी करता आख सुणौंदा ए। सो पुरख निरञ्जण साची कार कमौंदा ए। हरि पुरख निंरजण नर निरँकार वेस वटौंदा ए। सुहावणहारा साचा सचखण्ड देस, दसन्तर आपणा फेरा पौंदा ए। मालक दो जहानां नरेश, निरगुण आपणी खेल वखौंदा ए। ना मुच्छ दाड़ी ना कोई केस, मूंड मुडाया नज़र कोई ना आउँदा ए। जिस नूं पुरख अकाल मन्नया दस दसमेस, दह दिशा खोज खुजौंदा ए। जो आदि जुगादि रहे हमेश, जीवण मरन ना रूप वटौंदा ए। गुर अवतार पीर पैगम्बर भेजे दे संदेश, सुनेहड़ा इक्क सुणौंदा ए। लक्ख चुरासी रचके खेड, अंडज जेरज उत्भुज सेतज खाणी बाणी आपणा राह वखौंदा ए। नज़री आ के नेतन नेत, दूर दुराडा पन्ध मुकौंदा ए। रुत्त सुहावे बसन्ती चेत, गुलशन आप महकौंदा ए। जन भगतां अंदर वड़के दस्से भेत, बाहरों विद्या ना कोई पढ़ौंदा ए। सच स्वामी बण के खेवट खेट, बेड़ा आपणे कंध उठौंदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आप जणौंदा ए।

जन भगतां आप जणौंदा ए। दीन दयाल दया कमौंदा ए। श्री भगवान वेख वखौंदा ए। नौजवान फेरा पौंदा ए। लोकमात डेरा लौंदा ए। सम्बल नगर इक्क सुहौंदा ए। संभल संभल चरन टिकौंदा ए। जग नेत्र नज़र किसे ना औंदा ए। जन भगतां दया कमौंदा ए। आपणे मिलण दा सोहणा समां, सुहञ्जणी रुत्त वखौंदा ए। नाम दृढ़ावे दम दमां, दामन पलू आप फड़ौंदा ए। राग सुणाके धुर दा कन्नां, अनुरागी राग अलौंदा ए। फड़ उठावे उठ मेरया चन्नां, चन्द चांदना नूर चमकौंदा ए। नेत्र वेख शरमाए धन्ना, नामा निउँ निउँ सीस झुकौंदा ए। धुर दा ठाकर जिन्हां नाल मन्नां, मनसा आसा पूर करौंदा ए। कलिजुग अन्तम जीव जहान अंन्हां, हरि का दरस कोई ना पौंदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वेख वखौंदा ए।

जन भगत कहण प्रभ तेरा नगारा, इक्को इक्क वजाईआ। जिस दा अन्त ना पारावारा, बेपरवाह अखवाईआ। तन्द तार ना कोई सतारा, रूप रंग ना कोई वखाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, माण मिले ना किसे शाहीआ। जिस घर बह के भगतां करे प्यारा, मन्दर महल्ल अट्टल इक्क अखवाईआ। ना कोई दीसे चार दवारा, मिट्टी गारा ना कोई लगाईआ। ना कोई बाडी बणाए तरखाणा, घाड़त आपणे हत्थ रखाईआ। दीवा बाती करके इक्क उजिआरा, कमलापाती सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां रंग रंगाईआ।

जन भगत कहण प्रभ चाढ़ रंग, रंगण इक्क रंगाईआ। धन्न भाग जे मिल्या तेरा संग, संजोगी बेपरवाहीआ। अन्तर आत्म दे अनन्द, अनन्द इक्क वखाईआ। तेरे नाल मिल के सांझा ढोला गाईए छन्द, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोई ना आईआ। सच दुआरा हरि करतारा लईए मंग, बणके मांगत भिक्खक आपणी झोली डाहीआ। तूं साहिब सूरा सर्बंग, दाता गहर गम्भीर अखवाईआ। नाम वस्त अमोलक वंड, आपणी हत्थीं झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कल अन्तम वेख वखाईआ।

जन भगत कहण वेख कलिजुग आया, प्रभ आपणी धार चलाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरा छाया, चार वरन रिहा डराईआ। चारे खाणी होए हलकाया, चारे बाणी माण मिटाईआ। चार जुग दा लहणा देणा नज़र ना आया, दह दिशा वेख्या अक्ख उठाईआ। वेद पुरन शास्त्र सिमरत रहे कुरलाया, ऊँची कूक कूक सुणाईआ। मन्दर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ देण दुहाया, गुरूदवार ना कोई वडयाईआ। साचा मेल ना कोई मिलाया, पुरख अबिनाशी घट घट वासी तेरा रंग ना कोई वखाईआ। कोटन कोट सिफ्ती नाम जीव जंत रहे गाया, साध सन्त रसना जिह्वा बत्ती दन्द हिलाईआ। प्रभू सन्मुख हो के तेरा दरस किसे ना पाया, स्वच्छ सरूपी नज़र किसे ना आईआ। किसे नूं जंगलां विच्च फिराया, किसे नूं धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। किसे नूं पाणी विच्च ठराया, किसे नूं अगनी नाल जलाईआ। किसे नूं निओली कर्म विच्च लाया, किसे नूं कर्म कांड दित्ता समझाईआ। किसे नूं माया भरम भुलाया, किसे नूं चक्करां विच्च चलाईआ। किसे नूं पत्थरां दी पूजा करन डाहिआ, किसे नूं सत्थरां सेज सुआईआ। किसे नूं अक्खरां नाल पढ़ाया, किसे नूं वक्खरा राह बताईआ। किसे नूं सफ़रां विच्च पाया, सेली टोपी सीस टिकाईआ। किसे नूं मंतरां विच्च गाया, किसे नूं नेत्रां नाल करी कुड़माईआ। किसे नूं मन्दरां विच्च बहाया, किसे नूं जंगलां विच्च रुलाईआ। किसे नूं कंदरां विच्च फसाया, किसे नूं चोटी परबत टिल्ले दित्ता चढ़ाईआ। किसे नूं मुंदरां नाल भरमाया, किसे दे मुरली हत्थ फड़ाईआ। किसे नूं सीता नाल परनाया, किसे नूं जंगलां विच्च जुदाईआ। किसे नूं गीता नाल समझाया, किसे नूं प्रीतां विच्च मेल मिलाईआ। किसे नूं अंगीठे विच्च तपाया, किसे नूं तत्ती लोहां उत्ते टिकाईआ। किसे नूं जीते जी दित्ता बदलाया, किसे नूं रीत आपणी इक्क समझाईआ। किसे नूं नीचो नीच दिता दरसाया, किसे नूं ऊँचो ऊँच नज़री आईआ। किसे नूं दहिलीज़ां विच्च बहाया, किसे नूं गोदी रिहा उठाईआ। किसे नूं क़मीज़ां नाल परचाया, किसे नूं नगन कर कर ओढन सीस ना कोई टिकाईआ। किसे

नूं घर घर मंगण डाहिआ, किसे नूं देवे रिज़क सबाईआ। किसे नूं गुर अवतार जणाया, किसे नूं पीर पैगम्बर दित्ती वडयाईआ। किसे नूं भगत भगवान अखवाया, किसे नूं सन्त सज्जण जणाईआ। किसे नूं गुरमुख वंड वंडाया, किसे नूं गुरसिख राह वखाईआ। किसे नूं चारे बाणी नाल पढ़ाया, किसे नूं भंडारा वरतावण सेवा लाईआ। किसे नूं मारन हक रखाया, लए दीबाण आप जणाईआ। प्रतक्ख रूप साख्यात ना किसे वखाया, आखर सभ नूं आपणे विच्च मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी वस्त दे वरताईआ।

जन भगत कहण तैनूं मंगदे वेखे असंख, संख्या गणित विच्च ना आईआ। तैनूं लभ्भदे परम हँस, चोटीआं सीस मुनाईआ। तैनूं सन्त बणौंदे कन्त, नार सुलक्खणी रूप वटाईआ। तैनूं मालक कहन्दे जीव जंत, ख़ालक ख़लक खुदाईआ। तेरे दर ते बैठे कोट मंगत, दर दरवेश अलख जगाईआ। तैनूं पढ़दे सारे पंडत, विद्या नाल दृढ़ाईआ। तैनूं समझण जेरज अंडज, उत्भुज सेतज रिहा समाईआ। तैनूं विष्न ब्रह्मा शिव करदे बन्दन, करोड़ तेतीसा सीस निवाईआ। तैनूं आरती करदे लगा के मथ्थे चन्दन, त्रिसूली रूप वटाईआ। तैनूं लभ्भदे बण बण मात मलंगण, भज्जण वाहो दाहीआ। जन भगत तैनूं घर आपणे सद्दण, प्रभू बाहर खोजण कोई ना जाईआ। तूं आ के वेख भगतां दा गगन, जो काया मन्दर अंदर दित्ता टिकाईआ। जिस भूमिका रहें मग्न, मगध देस उह अखवाईआ। दीपक निराले अगम्मी जगण, जागरत जोत होवे रुशनाईआ। तेरा रूप सरूप अनूप मूरत मदन, पंज तत्त बदन नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे फेरा पाईआ।

जन भगत कहे तैनूं घर मंगाउंणा, इक्को ओट रखाईआ। प्रेम प्यार दा वास्ता पौणा, बिरहों तीर चलाईआ। आहिस्ता आहिस्ता तेरा पन्ध मुकाउणा, वास्ता तेरे नाल जुड़ाईआ। सिमरत शास्त्रां पन्ध मकौणा, गायत्री मन्त्र ना कोई वडयाईआ। नाम गातरा इक्को पौणा, जिस नूं लुहार तरखाण ना कोई घड़ाईआ। पृथ्मी आकाश दा डेरा ढौणा, गगन गगनंतर वेख वखाईआ। समरथ स्वामी तेरा दर्शन पौणा, दूजा इष्ट ना कोई मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहणा पूरब दे चुकाईआ।

जन भगत कहे तूं मेरा मक़रूज़, कर्ज़ेदार अखवाईआ। साडा असल नाल देदे हुण सूद, लेखा सभ दा झोली पाईआ। भगत वी हाज़र भगवान वी मौज़ूद, दोहा जुड़िआ जोड़ा इक्को थाईआ। दोहां दी सांझी बणी हदूद, वंडण वंड ना कोई वंडाईआ। मैं नफ़र तूं मालक मेरा महिबूब, मंज़ले मकसूद चढ़के आपणा पन्ध मुकाईआ। तेरे दर ते देवां सच सबूत, सबर नाल समझाईआ। ठाकर तेरे प्रेम प्यार अंदर भगत गए झूज, झुक झुक आपणा सीस निवाईआ। विच्चों कढ्ढके द्वैती दूज, दूए नाल सिफ़रा दित्ता मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी इक्क समझाईआ।

जन भगत कहण की तैनूं ख़तरा, प्रभ सच दे समझाईआ। तेरे नूर दा इक्को कतरा, कातल मकतूल पार कराईआ। तेरे नाम दा इक्को पतरा, बिन हरफ़ां नज़री आईआ। तेरे

नाम दा इक्को अक्खरा, निरअक्खर रिहा जणाईआ। तेरे नुहार दा अनोखा नख़रा, जग नेत्र वेखण कोई ना पाईआ। तेरे प्रेम प्यार दा सोहणा सथरा, गोबिन्द गिआ हंढाईआ। तेरा धाम निराला वक्खरा, सचखण्ड सोभा पाईआ। जिथ्थे कोई भेटा देणा पए ना बकरा छत्तरा, वढ्ढी खोर ना कोई अखवाईआ। पंडत पांधा मुल्ला शेख़ मुसाइक कोई पढ़ाई करे ना विच्च सतरां, कलम शाही ना कोई लिखाईआ। जन भगत कहे प्रभ लै जा ओस वतना, जिस वतन दा मालक तूं अखवाईआ। साड्डा चले कोई ना यतना, यातरू तेरे दर ते सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वडयाईआ।

सद वड्डिआई देवे भगवन्त, जन भगतां माण रखाइंदा। लेखा जाण जुगाँ जुगन्त, जुग चौकड़ी भेव खुलाइंदा। सति धर्म बणा के बणत, कूड़ी क्रिया मेट मिटाइंदा। गढ़ तोड़ के हउमे हंगत, हँ ब्रह्म इक्क समझाइंदा। बोध अगाधा बण के पंडत, निवण सो अक्खर इक्क पढ़ाइंदा। नाता तुड़ा के स्वर्ग बहिश्त जन्नत, चरन कँवल इक्क समझाइंदा। लेख मुका के उतर पूरब पच्छिम दक्खण सिमत, सिरफ़ इक्को राह जणाइंदा। जन भगतो तुहाड्डी अगम्मी सिफ्त, अबिनाशी करता आपे गाइंदा। जिस दे प्रेम प्यार अंदर होया गरिफ़त, पल्लू अवर ना कोई छुडाइंदा। नाता तोड़ के सारी सृष्ट, जन भगतां मेल मिलाइंदा। काया मन्दर खोल के दृष्ट, दृष्टी आपणी इक्को पाइंदा। आत्म परमात्म मिल के माणो साचा गृहस्त, आश्रम इक्को इक्क जणाइंदा। जन भगत सदा रहो निसचिन्त, चिन्ता रोग सर्ब गवाइंदा। पुरख अकाल साचा पित, पतिपरमेश्वर गोद उठाइंदा। एथ्थे ओथ्थे दो जहान करे हित, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। धुर दा लेखा देवे लिख, पिछला अगला लहणा झोली पाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म करे हित, निहकरमी आपणा कर्म कमाइंदा। अबिनाशी करता वसे चित, चेतन्न सुरती आप उठाइंदा। करवट लै बदले पिठ, सन्मुख आपणा रूप धराइंदा। जन्म कर्म दा लहणा लए नजिठ, लेखा धुर दा झोली पाइंदा। कर के खेल प्रभू अनडिठ, अनडिड्डी कार वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वेख वखाइंदा।

जन भगतां वेखे चार कुण्ट, कुण्डा खिड़की आप खुलाईआ। मेहरवान हो निवासी बैकुण्ठ, दहि दिशा फोल फुलाईआ। लेखा जाणे जिन्हां कराई सुनत, मूंड मुंडाए खोज खुजाईआ। केसा धारी दस्से मुलक, मालक बेपरवाहीआ। जो आपणी धारों परत के आया उलट, उलटी आपणी खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां हत्थ रखाए पुशत, पनाह इक्को घर वखाईआ।

साचे घर देवे पनाह, मेहरवान नज़र टिकाईआ। कोट जन्म दे बख्श गुनाह, दुरमत मैल धवाईआ। साचा मंतर सुणा के नां, नाउँ निरँकार दित्ता दृढ़ाईआ। साचा खेड़ा वसाके गराम, साढे तिन्न हत्थ खुशी वखाईआ। नौ दवारे कर इंतजाम, नौ रस बैठे डेरा ढाहीआ। धुर दा दे के इक्क पैग़ाम, परा पसन्ती मद्धम बैखरी रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां रिहा तराईआ।

जन भगत कहे प्रभ तेरी तरनी तरना, तरल जवानी तेरी झोली पाईआ। तेरे दवारे हरि जू मरना, बौहड़ मरन ना कोई रखाईआ। तेरे दवारे अन्तर वड़ना, बाहरों पन्ध मुकाईआ। तेरे मन्दर साचे चढ़ना, सोहणी सेज सुहाईआ। तेरा ढोला नाम इक्को पढ़ना, सोहँ राग अलाईआ। नाता तोड़ के वरनां बरनां, साची सरन इक्क रखाईआ। नेत्र खोल्ह के हरना फरना, निज घर तेरा दर्शन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मिल्या मेल ना होए जुदाईआ।

जुदाई जगत गवावांगा। जन भगत वड्डिआई इक्क रखावांगा। घर साचे कर कुड़माई, खुशी इक्क प्रगटावांगा। गृह मन्दर वज्जे वधाई, अगम्मी राग सुणावांगा। लेखा जाण के थाउँ थाईं, रातीं सुत्यां आप उठावांगा। करां प्यार जिउँ पुत्तरां माई, पूत सपूत गले लगावांगा। चार वरन दिआं वड्डिआई, झीवर छींबे नाई आपणे रंग रंगावांगा। कर के खेल बेपरवाही, बेपरवाही विच्च समावांगा। जन भगतां साचे मन्दर दिआं बहाई, बह के आपणा दरस दिखावांगा। जिथों सके ना कोई हिलाई, हालत सभ दी वेख वखावांगा। जन भगतो तुहाढ्ढी झल्ले ना जुदाई, जुदा रूप ना कोई वटावांगा। जैंह वेखो तैंह होवां सहाई, उगण आथण खेल करावांगा। लिखया लेख कोई ना मेटे राई, रईअत दो जहान बणावांगा। कूड़ा रहे ना कोई कसाई, कज़ल अज़ल सभ दे नाल परनावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमावांगा।

भगत कहण प्रभ ना दे लारा, इक्को वार सुणाईआ। तैनूं लभ्भदे रहे जुग चारा, चार कुण्ट दहि दिशा वेख वखाईआ। अठारां मिल्या तेरा सहारा, अठ्ठ दस करी कुड़माईआ। गुरू दस कीता प्यारा, नस्स नस्स पन्ध मुकाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद कर उजिआरा, रमज़ इक्को इक्क लगाईआ। नाता जोड़ तेई अवतारा, निरगुण सरगुण माण वधाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दे भंडारा, वस्त अमोलक झोली पाईआ। शब्दी सुत कर प्यारा, थिर घर साचे दिता टिकाईआ। सचखण्ड सच मनारा, अस्थिल दवारा लिआ बणाईआ। दीवा जगा के अगम्म अपारा, जोती जोत करे रुशनाईआ। शाहो भूप बण सिकदारा, शहनशाह हो जाईआ। सीस जगदीस ताज अपारा, तख्त निवासी सोभा पाईआ। हुक्मे अंदर कर वरतारा, हुक्मी हुक्म फिराईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, सारे बैठे मुख भुआईआ। जन भगत कहण प्रभ तेरे मिलण दा उह इशारा, जिस नूं अश अश करके सारे रहे गाईआ। तैनूं मिल के कबीर जुलाहे तेरा शुकर गुज़ारा, रविदास चमारा तेरा रंग रंगाईआ। तूं सदा सुहेला भगतां प्यारा, गुर चेला मेल मिलाईआ। कलिजुग अन्तम खेल नयारा, निरगुण निरवैर दिता कराईआ। प्रीतम हो के मिल सच्चे दिलदारा, दिल दी आस पूर कराईआ। वाहिद नूर तेरा उजिआरा, इक्क इकल्ला आदि जुगादि अखवाईआ। जन भगत तेरे चरन करे निमस्कारा, दूसर सीस ना किसे निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जागरत जोत कर रुशनाईआ।

जागरत जोत कर उजाला, कल अन्धेर मिटाईआ। किरपा कर हरि गोपाला, गोपीआं

वाला काहन ध्यान लगाईआ। भगत दवारा वेख सच्ची धर्मसाला, महल्ल अट्टल वज्जे वधाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाला, जीवन जुगत दे बदलाईआ। अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर सद वसे नाला, विछड़ कदे ना जाईआ। आ के वेख मुरीदां हाला, मुर्शद फेरा पाईआ। जन भगत तेरे अंञाणे बाल, बुद्धि चले ना कोई चतुराईआ। तूं आ के सुरत संभाल, सुरती शब्द मिलाईआ। तेरा लेखा शाह कंगाल, कोझे कमले गले लगाईआ। तूं दो जहानां बण दलाल, अदालत इक्को इक्क लगाईआ। तेरा नाउँ श्री भगवान, भगवन हिस्सा सभ दा झोली पाईआ। तूं देवणहारा दान, दाता दानी इक्क अखवाईआ। तेरे भगत तेरा मंगण दरस महान, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, लेखा आपणे विच्च रखवाईआ।

श्री भगवान आप जणौंदा ए। जन भगतां आख सुणौंदा ए। साची रंगत नाम चढ़ौंदा ए। पांधिआं पंडतां कोलों पल्लू छडौंदा ए। साची संगतां विच्च मिलौंदा ए। किसे दर होण ना देवे मंगता, प्रेमी भुक्ख्यां आप रजौंदा ए। गढ़ तोड़ के हउमे हंगता, प्रेम प्रीती इक्क सिखौंदा ए। दरस दखा के बहु बिध अनन्ता, अकल कल धारी आपणी कल वरतौंदा ए। दीन दयाल हो बख्शंदा, बख्शिश आपणी इक्क वखौंदा ए। मालक बण के गुजरी चन्द दा, चन्द चांदना आप चमकौंदा ए। लेखा मुका के जेरज अंड दा, उत्भुज सेतज पार करौंदा ए। भेव खुल्हा के आपणे छन्द दा, शमा बुझी फेर जगौंदा ए। जन भगतां वेला सुहाए आत्म अनन्द दा, परमात्म जोड़ जुड़ौंदा ए। पड़दा लाह के द्वैती कंध दा, आपणा मुख वखौंदा ए। लेखा चुका के कूड़ी क्रिया गंद दा, अक्खर नाम पढ़ौंदा ए। माण गवा के ढोलक मरदंग दा, अनहद राग सुणौंदा ए। लक्ख चुरासी विच्चों गुरमुख विरला पार लंघदा, जिस सिर आपणा हत्थ टिकौंदा ए। एह आदि जुगादी खेल सूरे सरबंग दा, जन भगतां वेख वखौंदा ए। नाता जोड़ के आपणे अंग दा, अंगीकार करौंदा ए। इशनान बख्श के साची गंग दा, चरन धूड़ नहौंदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नेत्र लोचण अक्ख खुलौंदा ए।

नेत्र लोचण अक्ख कहे मैं खुल्ही, भगतां अंदर डेरा लाईआ। सोहणी लग्गे साढ्ढे तिन्न हत्थ दी कुली, जिस विच्च प्रभ ने आपणी कुल उपजाईआ। भगतां नाल मिल के होई बहुमुली, मेरी कीमत ना कोई चुकाईआ। मैनूं गौणा हुण किसे नहीं बुल्हीं, रसना नाल सालाहीआ। मैनूं ओढण देणा नहीं किसे कोई जुली, तकीआ लेफ़ निहाली नज़र कोई ना आईआ। जिस तों विछड़ के रही भुल्ली, अन्तम ओसे लिआ मिलाईआ। मैं खुशीआं अंदर फुल्ली, दुगणी चौगणी हो के नज़री आईआ। मेरे नेत्रां विच्चों प्रेम दी धार इक्को डुल्ही, जेहड़ी समुंद सागराँ विच्चों हत्थ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वेख वखाईआ।

अमृत धार कहे मैं बूंद स्वांती, मेरी समझ किसे ना आईआ । जुग चौकड़ी मैं वेखां मार झाती, झरोखा आपणा इक्क खुल्हाईआ । मेरी समझ ना आई किसे नूं ताकी, पड़दा

सके ना कोई उठाईआ। मेरे कोल सभ दा लहणा बाकी, लक्ख चुरासी दिआं जणाईआ। मैं वेखां माणस मनुक्ख तन ख़ाकी, पंजां तत्तां फोल फुलाईआ। मेरे कोल जोत नुरानी बाती, बातन ज़ाहर करां रुशनाईआ। मेरा संगी कमलापाती, पतिपरमेश्वर इक्क अखवाईआ। मैं उस दी गाथा गावां बातीं, वातावरन दिआं जणाईआ। जिस वेले जन भगतां कोल सुत्यां जावे रातीं, रंग रतड़ा सच्चा माहीआ। हौली जेही खोलू के अंदरों ताकी, मन्दर अंदर डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवणहार वडयाईआ।

ताकी कहे मेरा कोई ना जाणे कुण्डा, कुण्डलीआं सारे रहे पाईआ। पुरख अबिनाशी इक्को मुंडा, बिरध बाल ना रूप वटाईआ। बिन भगतां किसे नाल कदे ना कूंदा, सनमुख हो ना दरस कराईआ। लभ्भयां हत्थ ना आवे ढूंडा, ढूंड थक्की जगत लोकाईआ। जुग चौकड़ी प्रभू रिहा गूंगा, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां कोलों कीती पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर मस्तक भाग लगाईआ।

सिर मस्तक लग्गा भाग, भगत मिले वडयाईआ। घर दीपक जगे चिराग़, चार कुण्ट रुशनाईआ। निरगुण सरगुण दर्शन दे के आप, आपणा मेल मिलाईआ। पिता पुरख अकाल बण के बाप, सन्त सुहेले गोद उठाईआ। जिन्हां सोहँ जपिआ जाप, कोटन पाप गए गवाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सदा साथ, सगला संग निभाईआ। (४ मध्घर २०२१ बि ठाकर सिँघ दे घर)

जन भगत कहण की पढ़ीए पुस्तक पोथी, पुशत दर पुशत मिले वडयाईआ। साडी मंज़ल हो जाए सौखी, बिखड़ा पन्ध चुकाईआ। जिस नाल चढ़ीए धुर दी चोटी, सो सिख्या देणी समझाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुरान गीता ज्ञान अञ्जील कुरान सानूं लम्मी चौड़ी दिसे बहुती, सिफ्तां वाली राणी नज़री आईआ। बिन तेरी किरपा पढ़न वालिआं किसे ना आई सोझी, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। हत्थ फेरदे रहे उत्ते बोदी, ब्राह्मण जञ्जूआं हार बणाईआ। चौंके रहे सोधी, गोबर नाल पोचाईआ। झुकदे रहे उत्ते गोडीं, सीने हत्थ टिकाईआ। अक्खरां वाले बणदे रहे खोजी, रागाँ ताल अलाईआ। जां तक्कया दिसे सर्ब वजोगी, धुर संजोगी नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे साचा वर, पुस्तक धुर दी इक्क समझाईआ।

जन भगत कहण प्रभ दस्स दे ग्रंथ, जिस विच्च तूं ही नज़री आईआ। ना मज़हब दीन कोई पन्थ, ज़ात पात ना कोई जणाईआ। राग नाद ना कोई संख, ना कोई सन्धया आरती दए जणाईआ। ना कोई तिलक लगावे पंडत, ललाट त्रिसूल ना कोई वखाईआ। ना कोई काअबा होवे मस्जिद, निमाज़ पंज ना कोई पढ़ाईआ। ना कोई गेरू पावे बस्तर,

ना कोई माला गल लटकाईआ। ना कोई हवन पूजा होवे जंतर, घृत दीप ना कोई जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची पुस्तक दे फड़ाईआ।

पुस्तक दे प्रभ उह कुरान, जिस दा कुरा नज़र कोई ना आईआ। जिथ्थे वसे ना कोई शैतान, शरअ ना कोई लड़ाईआ। ना हिंदू ना मुस्लमान, बोदी टिक्का वंड ना कोई वंडाईआ। ना कोई दिसे बेईमान, बेवा रूप ना कोई वखाईआ। जूठ झूठ ना कोई नज़ाम, कूड़ा राज ना कोई कमाईआ। ना नफ़र ना कोई गुलाम, सफ़रां विच्च पन्ध ना कोई मुकाईआ। ना सजदा ना सलाम, तोबा तोबा ना कोई सुणाईआ। ना पैगम्बर ना अमाम, ना मसले कोई पढ़ाईआ। ना हुजरा ना निशान, मुजरा नाच ना कोई नचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची पुस्तक दे पढ़ाईआ।

साची पुस्तक दस्स उह अंजील, जिस विच्च अज़ल नेड़ ना आईआ। आत्म ना होए कुचील, जुदा रूप ना कोई वटाईआ। तेरे हुक्म दी होए ताअमील, सिर सके ना कोई उठाईआ। ओथ्थे देवे ना कोई दलील, वकील नज़र कोई ना आईआ। चार कुण्ट दीवारां ना दिसे फ़सील, फ़ैसला हक्को हक़ सुणाईआ। अग्गे होर ना कोई अपील, बरीखाना अवर ना कोई रखाईआ। इक्को तेरे रहीए मस्कीन, मुशकल धुर दी हल्ल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या देणी समझाईआ।

सच्ची पोथी दे भगवान, आपणी दया कमाईआ। नाता छुट्ट जाए अठारां पुरान, अठ्ठ दस ना कोई सुणाईआ। बिन पढ़यां आवे ज्ञान, पाठशाले दी लोड़ रहे ना राईआ। सिल पाथर पूजन कराए ना कोई इशनान, संधूर तिलक ना कोई लगाईआ। लभ्भणा पए ना बंसरी वाला काहन, सीता वाला राम जंगल ढूंडन कोई ना जाईआ। मसलिआं वाला पैगम्बर करीए ना किसे सलाम, सजदा अवर ना कोई जणाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद तक्कीए ना कोई निशान, निशाना इक्को देणा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी पुस्तक इक्क दृढ़ाईआ।

साची पुस्तक दे दे गीता, ज्ञाना विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। आपणे मिलण दी दस्स दे रीता, रीतीवान तेरी सरनाईआ। त्रैगुण तपे ना तत्त अंगीठा, पंज तत्त ना कोई लड़ाईआ। भेव चुका दे ऊँचां नीचां, नीचों ऊँच दे बणाईआ। तेरे प्रेम दा खा लईए सीधा, अमृत रस मुख चखाईआ। मिल सज्जण पाईए गिध्धा, दो हत्थां ताल वजाईआ। तैनूं मिल के धुर दे पिता, बहु खुशी खुशी विच्च समाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दे समझाईआ।

साचा लेखा दस्स दे आप, आपणी दया कमाईआ। तूं वड्डा कि वड्डा तेरा जाप, किस दी सेव कमाईआ। तूं पिता कि तूं माई बाप, दोवें अंग वखाईआ। तूं सज्जण तूं सगला साथ, आदि जुगादि तेरी ओट तकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग जो उपजिआ सो

गिआ विनास, थिर कोई रहण ना पाईआ। एसे कर के कोटन कोट तेरे सिफ्ती नाम रसना करदी पाठ, जिह्वा नाल मिलाईआ। कोई कहे रसूल पाक, कोई राम राम धिआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दे इक्क वर, धुर दा लेखा दे समझाईआ।

जन भगत कहण प्रभ दस्स दे अक्खर, अक्खरां विच्चों आप प्रगटाईआ। जिस नाल होईए सभ तों वक्खर, तेरे विच्च समाईआ। बजर कपाटी पाड़ के पत्थर, पत्तण आपणा दे जणाईआ। तेरा सदा विछाईए सत्थर, यारड़े तेरा राह तकाईआ। विछोड़े अंदर वहाईए अत्थर, नैणां नीर इक्क वखाईआ। अग्गे रहण ना देवे कोई कसर, कसम खा के कहीए कट्टी ना जाए जुदाईआ। जे तूं आदि जुगादि भगत वछल, जन भगतां मेल मिलाईआ। क्यों कीता सानूं बे वतन, घर आपणे लै बहाईआ। पढ़या सुणिआ कीते बहुत यतन, यथा योग आपणी ताकत दित्ती लाईआ। तेरा मुख ना लग्गा सोहणा सगन, सगली चिन्त ना कोई मिटाईआ। जिध्धर वेखीए लग्गी अगन, पढ़न वालिआं दी अग्ग ना कोई बुझाईआ। बिन तेरी किरपा दीपक सच मूल ना जगण, घर घर विच्च ना कोई रुशनाईआ। असीं आए इक्को दात मंगण, दर तेरे अलख जगाईआ। साथों दरोही खुदा दी बन्दगी कल ना हुंदा भजन, बन्दगी कहण कोई ना पाईआ। बिन हरि करतार फिरदे नंगन, ओढन सीस ना कोई टिकाईआ। सच स्वामी कर दे आपणा अदल, अदालत इक्को इक्क लगाईआ। साड्डी क्रिया दे बदल, बदला दे चुकाईआ। साडा तोलीं मूल ना वज़न, तोले माशे टांक रत्ती नाल ना कोई चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची पोथी दे समझाईआ।

साची पोथी दस्स दे पुस्तक, प्रभ तेरे अग्गे अज़ीईआ। इक्को तेरी करीए उस्तत, उस्तवा इक्को इक्क मनाईआ। बाकी सभ तों लईए रुख़स्त, छुट्टी लईए कराईआ। सानूं बिना तेरे मिलण दी दूजी रहे कोई ना फुरस्त, फ़ुरने सारे बन्द कराईआ। तूं डाहढा पीर अगम्म मुशर्द, मुरीदां ईदां दीदां चन्द चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या दे वखाईआ।

ओथे पोथी दस्स दे प्रभू निराली, जन भगत मंग मंगाईआ। तेरी वेखीए जोत अकाली, अकल कलधारी नज़री आईआ। किस बिध सचखण्ड दवारे बाली, आपणी आप करी रुशनाईआ। तूं धुर दा बण के माली, बैठा मुख छुपाईआ। साडे चिहरयां तों उठ गई लाली, बिन तेरे रो रो दईए दुहाईआ। कलिजुग वेख रैण अन्धेरी काली, चारों कुण्ट चन्द ना कोई चमकाईआ। पढ़ पढ़ थक्के तूं हत्थ ना आया भाली, चार कुण्ट भज्जे वाहो दाहीआ। जां तक्कया गुर अवतार पैगम्बर तेरे दर दे सवाली, बैठे सीस निवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव झोली ख़ाली, निउँ निउँ लागण पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्त्र दे जणाईआ।

पोथी पुस्तक दे दे एक, एकँकार तेरी सरनाईआ। जिस विच्च मिले साची टेक, टिक्का इक्को नूर खुदाईआ। बुद्धी होई बिबेक, मन मत ना कोई वडयाईआ। तेरे मिलण दा लभ्भे

भेत, बाहर खोजण कोई ना जाईआ। तूं अन्तर करें हेत, प्रीतम हो के प्रेम कमाईआ। तेरा दर्शन करीए नेतन नेत, निज नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। तेरी गोदी लईए खेड, बहि बहि खुशी मनाईआ। तेरा जलवा वेखीए तेज, नूरी जोत रुशनाईआ। तेरी माणीए सोहणी सेज, सुहञ्जणी रुत्त सोभा पाईआ। साड्डा जन्म कर्म दा बदल दे रेख, रेखा आपणी दे जणाईआ। मिलीए तेरे देस, देस दसन्तर पन्ध चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा दे दृढ़ाईआ।

श्री भगवान कहे जन भगतो लउ गुटका, इक्को इक्क जणाईआ। जिसदा मेरे बिना समझे कोई ना नुक़ता, मुफ्त मात ना कोई वरताईआ। उस नूं पढ़यां पैंडा मुक्कदा, एथे ओथे ना रहे जुदाईआ। उह आपे आ के भगतां पुच्छदा, सुत्यां लए उठाईआ। उह मालक लोक परलोक दा, दो जहानां होए सहाईआ। उह आपणी सोच अगम्मी सोचदा, जिस दी समझ अगम्मी ना किसे पाईआ। उह मालक ख़ालक मुक्ती मोख दा, मुक्ती गुरमुखां चरनां हेठ दबाईआ। उह लक्ख चुरासी जीव जंत साध सन्त खोजदा, भगतां अन्तर फोल फुलाईआ। उह रसीआ आपणे भोग दा, कुड़ावी सेज ना कोई हंढाईआ। उह मालक आपणे चोज दा, चोजी प्रीतम इक्क अखवाईआ। उह तबीब दुखड़े रोग दा, बिरहों रोग रिहा गवाईआ। उह कन्त सुहागी संजोग दा, हरिजन मेले चाईं चाईंआ। लेखा जाणे दोश निरदोश दा, गुरमुख मनमुख वेखे थाउँ थाईंआ। पढ़ना जाणे रसना जेहवा होंठ दा, बत्ती दन्द भेव चुकाईआ। रस्ता जाणे आपणी जोत दा, जिस घर बहि करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वडयाईआ।

श्री भगवान कहे मेरा गुटका निक्का, निक्कयों वड्डा दए बणाईआ। उह मेल मिलावे इक्को पिता, पतिपरमेश्वर जोड़ जुड़ाईआ। उह देवे साची सिखा, सिख्या इक्क समझाईआ। जिस दा तीर निराला तिक्खा, अणयाला दए चलाईआ। जिस दा लेख गोबिन्द लिखा, अन्तम गिआ समझाईआ। सो रूप अगम्म अनडिठ्ठा, हँ ब्रह्म करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

जन भगत तेरी पोथी सोहँ सो, सुरती शब्द मिलाईआ। दूजा अवर ना जाणे को, कोटी कोट बैठे ध्यान लगाईआ। सिध्धा आत्म परमात्म नाल होवे मोह, मुहब्बत इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मन्त्र सति सच समझाईआ।

जन भगत गाउणा सोहँ ढोला, तूं मेरा मैं तेरी करां वडयाईआ। साहिब स्वामी बण विचोला, विछड़े लए मिलाईआ। आदि जुगादी धुर दा बोला, अनबोलत दए समझाईआ। दीन मज़हब दा इस विच्च रहे कोई ना रौला, झगड़ा ज़ात ना कोई वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर एसे दा इकरार करदे रहे कौला, इशतिहार खाणी बाणी मात चलाईआ। कलिजुग अन्त श्री भगवन्त जन भगतां मिले प्रभ साचा मौला, मौलवी मुल्ला शेख़ मुसायक पंडत करे ना कोई पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वडयाईआ।

गुटका कहे मैं फड़ां गुट, आपणा बल धराईआ। भगत नाता ना जाए छुट, छुट्टे सर्ब लोकाईआ। सन्त सुहेला ना जाए रुठ, रुठिआं लवां मनाईआ। गुरमुखां उप्पर आपे तुठ, वस्त अमोलक झोली पाईआ। गुरसिखां दे के साचा सुख, सुख आत्म इक्क समझाईआ। पिता नालों विछड़यां फेर मिले पुत्त आत्म परमात्म विच्च समाईआ। सच दवारे मौले उह रुत्त, जिस रुत दी रुत्त बसन्त बहार समझ सकी ना राईआ। खेल खलाए अबिनशी अचुत, चतर सुघड़ सुजान दए वडयाईआ। भगतन मीता ठांडा सीता नीकण नीका घर आ स्वामी लए पुच्छ, पुशत दर पुशत खोज खुजाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ सरूप पैंडा जाए मुक्क, पान्धी पन्ध ना कोई कराईआ। परम पुरख जननी जन भगत वछल रक्खे आपणी कुक्ख, कुक्ख सुहञ्जणी इक्क सुहाईआ। जन भगतां आवण जावण जन्म कर्म मेट के दुख, सुख सागर सागर सुख चरन हरि सरनाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पिछला बदल के सारा रुख, अगे रुख़सत छुट्टी सभ तों दिती दवाईआ। (७ मध्घर २०२१ बि महिंदर कौर दे गृह)

✵ ✵ ✵ ✵ ✵

जन भगत कहे प्रभ तेरा नाम केहड़ा, निरअक्खर दे समझाईआ। दीन मज़हब दा रहे ना झेड़ा, झगड़ा ज़ात पात ना कोई वखाईआ। नज़री आवे नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ । इक्को रंग वखाए संझ सवेरा, काली रैण रहण ना पाईआ। आत्म परमात्म कहे तूं मेरा मैं तेरा, धुर दा साचा मेल मिलाईआ। जगत धार डुब्बे ना बेड़ा, शौह दरया ना कोई रुड़्हाईआ। काया मन्दर वसे खेड़ा, बन्द खिड़की दे खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच नाम दे समझाईआ।

जन भगत कहण प्रभ नाम दस्स, आपणा भेव खुल्हाईआ। कूड़ी क्रिया होवे भड्ड, अगनी तत्त बुझाईआ। निझर मिले तेरा रस, अमृत बेपरवाहीआ। मनुआ मनसा होवे वस, दहि दिशां ना उठ उठ धाईआ। निज लोचण दर्शन पाईए अक्ख, स्वच्छ सरूपी इक्को नज़री आईआ। अगला पिछला मुक्के पन्ध, मंज़ल रहण कोई ना पाईआ। सच सुणा दे ढोला छन्द, अगम्मी भेव खुल्हाईआ। जुग चौकड़ी गए लंघ, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आपणा पन्ध मुकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ ।

जन भगत कहण तेरा नाम की, इक्को इक्क जणाईआ। निर्मल होवे आत्म जी, पतित पवित्र पुनीत बणाईआ। लेखा चुक्के साढ़े तिन्न हत्थ सीं, जन्म मरन रहण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दे खुल्हाईआ।

जन भगत कहण की तेरा नाम मलाह, खेवट खेटा नज़री आईआ। अबिनाशी करते दे सलाह, सिख्या सच समझाईआ। कोटन कोट तेरे सिफ्ती नां शास्त्र सिमरत वेद पुरान

रहे गा, अञ्जील कुरान हू हू नाअरा लाईआ। अक्खरां नाल रहे पढ़ा, खाणी बाणी वंड वंडाईआ। सतरां नाल रहे लिखा, नाता जोड़ कलम शाहीआ। तेरा भेव निहकेव सके कोई ना पा, आपणा पड़दा दए उठाईआ। जिस नाम विच्चों गुर अवतार पीर पैगम्बर लए प्रगटा, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। उस दा मतलब दे समझा, आपणी मेहर नज़र उठाईआ। जिस दे विच्च ज़ाहर करे नूर खुदा, जलवागर तेरी रुशनाईआ। सच दवारे मुकामे हक़ डेरा बैठा ला, नेत्र नज़र किसे ना आईआ। रहबर इक्को दे समझा, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। जो सिध्धा भगतां मिले आ, दूजी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मंतर दे जणाईआ।

जन भगत कहण प्रभ तेरा नाम मन्त्र, समझ किसे ना आईआ। खेलें खेल जुगा जुगन्तर, जुग चौकड़ी वेस वटाईआ। लक्ख चुरासी बणाएं बणतर, अंडज जेरज उत्भुज सेतज सोभा पाईआ। बोध अगाधा बण के पंडत, निरगुण सरगुण करे पढ़ाईआ। माण दवा के जगत सन्त, सन्त सज्जण होएं सहाईआ। तेरा किसे ना पाया अन्त, बेअन्त कहि सुणाईआ। सानूं दस्स दे उह मंत, जो तेरा तेरे विच्चों नज़री आईआ। जिस दी महिंमा सदा अगणत, कथनी कथ ना सके राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ।

एका नाम दस्स दे मंत, की उस दे विच्च वडयाईआ। जो मेल मिलावा करे नार कन्त, सुरती शब्दी जोड़ जुड़ाईआ। जो चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। जो गढ़ तोड़े हउमे हंगत, हँ ब्रह्म बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मंतर दे दृढ़ाईआ।

जन भगत कहण प्रभ तेरा नाम निधाना, नैण नज़र किसे ना आईआ। जो आदि पुरख आदि दित्ता फ़रमाणा, सो हुक्म दे सुणाईआ। जिस दा रागाँ नादां विच्चों बाहर तराना, तुरीआ समझ सकी ना राईआ। जिस दा गुर अवतारां पीर पैगम्बरां कोलों बाहर टिकाणा, दूर दुराडा डेरा लाईआ। जिस दा थिर घर होए मकाना, सचखण्ड निवासी दे समझाईआ। जिस दा कोई समझ ना सके माप पैमाना, पैमाइश विच्च कदे ना आईआ। जिस नूं विष्न ब्रह्मा शिव गावण बिन रसना ज़बाना, इक्को धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मंतर दे समझाईआ।

जन भगत कहण तेरे नाम दी की वड्डिआई, हरि करते दे दृढ़ाईआ। जुग चौकड़ी जिस ने धार बंधाई, चार कुण्ट करे रुशनाईआ। निरगुण सरगुण जिस खेल खलाई, लक्ख चुरासी रिहा समाईआ। छप्पर छन्न जिस नाल छुहाई, महल्ल अट्टल डेरा लाईआ। जिस दी नज़र ना आई कोई माई, पिता पूत ना गोद उठाईआ। जिस दा सज्जण ना कोई भाई, सगला संग ना कोई बणाईआ। जिस दा शास्त्र सिमरत वेद पुरानां ना कोई लिखवाई, कागज़ कलम ना दए कोई वडयाईआ। जिस दी घाड़त बणत बण ठठिआर ना किसे घड़ाई, रूप

रंग समझ किसे ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाम दे दरसाईआ।

जन भगत कहण प्रभ आपणे नाम दा दे दरस, दूजा दरस कोई ना पाईआ। बिन रसना जिह्वा बोलिआं मिट जाए हरस, हस्ती दे बदलाईआ। रहमत करके कर तरस, मेहर नज़र उठाईआ। बिरहों विछोड़े रहे भटक, भटकणा दे बुझाईआ। तेरे मिलणा दा सुहञ्जणा होवे वक़त, घड़ी पल पिछला पन्ध मुकाईआ। लहणा जगत मुक्क जाए अर्श फर्श, ज़िमीं असमान चरनां हेठ दबाईआ। तेरे नाम दी अगम्मी सुणीए तरज, नादां विच्चों बाहर जणाईआ। तेरा कुछ नहीं होणा हर्ज, शहनशाह शाह पातशाह तेरे हत्थ वडयाईआ। जन भगत सुहेले करन अर्ज, निउँ निउँ लागण पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा नाम दे समझाईआ।

धुर दा नाम दस्स श्री भगवान, आपणी दया कमाईआ। वाहिगुरू अल्ला सारे कहन्दे राम, गॉड खुदा कृष्न कह कह रहे ध्याईआ। जिस नाल सभ दा करें इंतजाम, बन्दोबस्त उसे दे हत्थ फड़ाईआ। जिस दा बदल ना जाए निज़ाम, रईअत रूप ना कोई वटाईआ। जिस दा आदि जुगादि इक्को कलमा इक्क कलाम, इक्को मन्त्र दए दृढ़ाईआ। जिस नूं गुर अवतार पीर पैगम्बर करन सलाम, बिन हुजरिउँ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, धुर दा मन्त्र इक्क दृढ़ाईआ।

जन भगत कहण तेरा मन्त्र कोई ना सके समझ, समझ विच्च किसे ना आईआ। कर किरपा मार उह रमज़, इशारा इक्को इक्क वखाईआ। जिस नाल मिले मेल सूरबीर मरदाने मरद, मददगार इक्को नज़री आईआ। जो दो जहानां वंडे दर्द, दीनां होए सहाईआ। जिस दे हत्थ किसे ना आए छुरी कसाई करद, खण्डा खड़ग ना कोई उठाईआ। जिस दे हुक्मे अंदर स्वर्ग नरक, दोज़ख़ बहिश्त वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो नाम देणा समझाईआ।

सो पुरख निरञ्जण दस्स आपणा नाम, नर हरि नरायण इक्क जणाईआ। हरि पुरख निरञ्जण दस्स आपणा नाम, निरगुण निरवैर दे दृढ़ाईआ। एकँकार दस्स आपणा नाम, शाह पातशाह सच्चे शहनशाहीआ। आदि निरञ्जण दस्स आपणा नाम, बेअन्त बेपरवाहीआ। अबिनाशी करते दस्स आपणा नाम, नाउँ निरँकारा इक्क दरसाईआ। श्री भगवान दस्स आपणा नाम, बिन अक्खरां दे समझाईआ। पारब्रह्म दस्स आपणा नाम, भेव अभेदा दे खुल्हाईआ। ब्रह्म आत्म करे सलाम, बन्दना सीस झुकाईआ। कलमयां वाली सानूं ना चाहीए कलाम, अलफ़ ये दी लोड़ रहे ना राईआ। बिन रसना जिह्वा दे पैग़ाम, पैगम्बर इक्को इक्क आवाज़ सुणाईआ। हउँ बालक बाल निधान, हत्थ तेरे वडयाईआ। की ढोला गाईए गाण, रसना ज़बान नाल हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा नाम वर, वर दाते तेरी सरनाईआ।

साचा नाम दे इक्क, इक्क इकल्ला तूं ही नज़री आईआ। साचा नाम दे इक्क, इक्क दवारे सीस जाए टिक, चरन कँवल इक्क वडयाईआ। इक्क घर बाहरे मिले भिख, भिच्छया इक्क वरताईआ। इक्क निरँकारा आवे दिस, दूजा इष्ट ना कोई मनाईआ। इक्क बैठा साहिब अनडिठ, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। इक्क आदि जुगादी मात पित, पतिपरमेश्वर नाउँ धराईआ। इक्को करे सच्चा हित, प्रीती आपणे नाल रखाईआ। इक्को चार कुण्ट आए दिस, दूजा रूप ना कोई धराईआ। इक्को नाम निरँकारा लईए लिख, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक्क वर, जन भगत मंग मंगाईआ।

सच नाम दा खोलू पड़दा, आपणा भेव चुकाईआ। कोट नाम कलिजुग जीव पढ़दा, तेरा मेल ना कोई मिलाईआ। त्रैगुण अगन विच्च सड़दा, पंज तत्त करे लड़ाईआ। भय भउ विच्च कोई ना डरदा, निर्भय तेरा माण ना कोई रखाईआ। तेरा भगत अन्तर आत्म तेरा राह तक्कदा, नेत्र नैण अक्ख खुलूाईआ। रसना जिह्वा बोल कुछ ना दस्सदा, बत्ती दन्द ना कोई वडयाईआ। शब्द उडारी अगम्मी नस्सदा, भज्जे वाहो दाहीआ। जिस घर स्वामी प्रीतम वसदा, वेखां सहज सुभाईआ। एह लेखा ओस अक्ख दा, जिस दा नेत्र ना कोई समझाईआ। तूं मालक खालक घट घट दा, प्रितपालक बेपरवाहीआ। तेरा भगत प्रभू केहड़ा नाम रटदा, जिस नाल रट्टे दईं मुकाईआ। माण रखावें धन्ने जट्ट दा, नामे गऊ जिवाईआ। कबीर जुलाहा घर सद्दा, रविदास चुमारे वज्जे वधाईआ। नाता जोड़ के पिउ पुत्त दा, घर साचे मेल मिलाईआ। होवे वेला सुहञ्जणी रुत्त दा, रुतड़ी इक्क महकाईआ। तेरा भगत तेरे कोलों पुच्छदा, सच सच दे समझाईआ। नाता तुटे उलटे रुक्ख दा, मात गरभ ना फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाम दे दरसाईआ।

आपणे नाम दा चुक्कदे उहला, दर ठांडे मंग मंगाईआ। तेरा गाईए इक्को सोहला, सो पुरख निरञ्जण सिफ्त सालाहीआ। अगम्म अथाह दस्स दे ढोला, धुर दा ढोआ झोली पाईआ। निरगुण सरगुण बण विचोला, विचला भेव दे खुलूाईआ। मिलणी जगदीस मिले मौला, मुहब्बत नूर खुदाईआ। लेखा चुक्के धरनी धरत धौला, धाम इक्को दे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची भिच्छया झोली पाईआ।

जन भगत कहे तेरे नाम दा की रंग, रंगाँ विच्चों नज़र कोई ना आईआ। अबिनशी करते दे दे संग, सगला संग तजाईआ। अनोखा वक्खरा बख्श अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। नूर नुरानी चाढ़ दे चन्द, जोती जोत जोत रुशनाईआ। पन्ध मुका के खण्ड ब्रह्मण्ड, ब्रह्मण्ड डेरा ढाईआ। सच दस्स दे आपणा चिन्नू, जिस दा रूप ना कोई समझाईआ। निरगुण कोलों मंगदे निरगुण मंग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ ।

श्री भगवान सुण के बात, आपणी लए अंगड़ाईआ। जन भगतो वेखो कलिजुग अन्

धेरी रात, नूरी चन्द ना कोई चमकाईआ। मेरा नाउँ रसना गाउँदे बहु भांत, कोटी कोट सिफ्त सलाहीआ। दीन मज़हब बण जमात, शरअ शरीअत नाल मिलाईआ। अंज़ील कुरानां वाली आइत, तीस बतीसा रहे गाईआ। वेद पुरानां वाली हदाइत, हद्दां विच्च समझाईआ। ज्ञान ध्यान वाली रिहाइश, रहबर रहे दृढ़ाईआ। खाणी बाणी कर अज़माइश, इस्म आज़म रहे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वडयाईआ।

जन भगतो सुणो हरि का नाम, हरि करता आप जणाईआ। जिस दा नज़र ना आए निशान, निशाने तीर रिहा चलाईआ। जिस दा आदि जुगादि पैग़ाम, पैगम्बरां करे पढ़ाईआ। जिस दा नित नवित्त ढोला गाण, सिफ्तां नाल सालाहीआ। जिस दे उत्ते सभ दा माण, दर बैठे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगत सुहेला दए वडयाईआ।

जन भगतो सुणो सोहला सच्च, हरि करता आप जणाईआ। भाग लगावे काया माटी कच्च, कंचन गढ़ रूप वटाईआ। सच संदेशा देवां हस्स हस्स, हसती आपणे नाल मिलाईआ। जुग चौकड़ी पन्ध मुक्कया नस्स नस्स, कलिजुग वेला अन्तम आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कर इक्ठ, सचखण्ड दवारे प्रभ अग्गे सीस निवाईआ। नेत्र रो पुकारन तीर्थ तट्ट, अठसठ देण दुहाईआ। पुरख अबिनाशी बदल आपणी करवट, सन्मुख आपणी दया कमाईआ। सच दवारा खोल्ह के हट्ट, बण हटवाणा दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच नाम रिहा दृढ़ाईआ।

सच नाम दा सच टिकाणा, हरि करता आप जणाईआ। सो पुरख निरञ्जण हो मेहरवाना, सच प्रेम दए दरसाईआ। शाहो भूप बण राज राजाना, महांबली अखवाईआ। जोधा सूरबीर बलवाना, बलधारी इक्क हो जाईआ। प्रितपालक बणे दो जहानां, लक्ख चुरासी सेव कमाईआ। जै जैकार गावे इक्क तराना, धुर दा राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वडयाईआ।

जन भगत सुणो हरि नाम अगम्म, अगम्मड़ी धार जणाइंदा। जो आदि जुगादि ना मरे ना पए जम्म, जन्म मरन विच्च ना आइंदा। हरख़ सोग़ ना कोई ग़म, चिन्ता रोग ना कोई सताइंदा । पवण स्वास ना कोई दम, नेत्र नीर ना कोई वहाइंदा। माल ख़ज़ाना ना दौलत धन, शाह कंगाल नज़र कोई ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, सच्चा नाम इक्क दृढ़ाइंदा।

साचा नाम सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै, आदि अन्त समझ किसे ना आईआ। नौ सौ चुरानवे जुग चौकड़ी पिच्छों पुरख अकाल आपे लए, आपणे हत्थ रक्खे वडयाईआ। जन भगतां अंदर वड़ के बहे, निरगुण आपणा आसण लाईआ। गढ़ हँकारी तोड़ के मैं, ममता कूड़ी दए मिटाईआ। प्रेम प्रीती अंदर करके लै, लहणा देणा दए चुकाईआ।

इक्को नाम आदि जुगादी रहे, जो अबिनाशी करता आपणा आप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखे सभ दे दए मुकाईआ।

इक्को नाम तेरा बथेरा, जन भगत खुशी मनाईआ। जिस नाल डुब्बदा तरे बेड़ा, वंञ मुहाणा दए लगाईआ। उजड़िआ वसे खेड़ा, घर बहार लगाईआ। सोहणा लग्गे डेरा, घर दिसे बेपरवाहीआ। नाता तुट्टे तेरा मेरा, रूप तूं ही नज़री आईआ। जन भगतां मन चाउ घनेरा, खुशीआं रंग वखाईआ। हक़ीक़त विच्चों हक़ निबेड़ा, सच तौफ़ीक नूर खुदाईआ। महिबूब मुहब्बत विच्च करे मेहरा, मेहरा मज़लस इक्क लगाईआ। परवरदिगार नूरानी दस्स के आपणा चेहरा, चमक इक्क चमकाईआ। अबिनाशी करता वेखणहारा नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मंतर इक्क समझाईआ।

साचा मंतर गाउणा सच जीव, जिह्वा रसना मिले वडयाईआ। जुग चौकड़ी पिच्छों मिल्या अजीब, अजब निराली धार वखाईआ। पुरख अकाल आपणे नाम दी दस्स के आप तरतीब, तर्ज़ राग समझाईआ। जन भगतां जागे उह नसीब, जिस दी निसबत ना कोई कढ्ढाईआ। जिस दी सिफ्त करे कुरान मजीद, शास्त्र सिमरत वेद पुरान देण गवाहीआ। सो दूर दुराडा आया क़रीब, काया काअबा वेख वखाईआ। ग़फ़लत विच्च कोई ना सोए नींद, सुत्यां रिहा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा नाम इक्क पढ़ाईआ।

धुर दा नाम गुरमुख पढ़या, भगत मिली वडयाईआ। घर मन्दर साचे चढ़या, निझ घर आपणा पड़दा लाहीआ। सच सरोवर अंदर हरया, अगनी तत्त बुझाईआ। राग अगम्मी सुणया, अनहद ताल वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वडयाईआ।

सच नाम दी सिफ्त सलाह, साहिब आप जणाईआ। आपणे नाम पिच्छे सचखण्ड निवासी लोकमात मिल्या आ, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। भगत भगवान लए जगा, जागरत जोत करे रुशनाईआ। जोग अभ्यास ना दित्ता कोई करा, साधना जगत ना कोई वडयाईआ। बोध अगाधा इक्को मंतर दिता दृढ़ा, मन मत बुध ना कोई चतराईआ। शाहरग दे उप्पर डेरा ला, नौ दवारे पन्ध चुकाईआ। रातीं सुत्यां दरस दिखा, दीद ईद करी रुशनाईआ। इस तों अग्गे नहीं खुदा, जो वक्खरा डेरा लाईआ। जन भगतां मेला सहज सुभा, सुरती शब्द नाल जुड़ाईआ। नानक कबीरा बण गवाह, शहादत आपणी रहे भगताईआ। जिस नूं लभ्भणा उत्ते आसमां, सो लबां उत्ते वेख वखाईआ। आपणी रसम रिहा बदला, अदल इक्को इक्क कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वडयाईआ।

साचे नाम दा साचा जोश, जोग जुगत आप जणाईआ। अंदर टिक्का के नाड़ी पोश, पुशत पनाह हत्थ रखाईआ। इक्को नाम खुमारी दे मदहोश, मद इक्को जाम पिआईआ। मन बुध दी जाए सोच, समझ इक्को दए समझाईआ। नेत्र अक्ख खोल्ह के लोच, लोचन लए मिलाईआ। भाग लगा के काया कोट, साढे तिन्न हत्थ दए वडयाईआ। शब्द अगम्मी लगावे चोट, सोई सुरती आप उठाईआ। मन वासना कढ्ढे खोट, ममता मोह मिटाईआ। जन्म जन्म दा कढ्ढे रोग, धुर संजोग मिलाईआ। जिन्हां सुणाया आपणा सलोक, सो सोहले गाउँदे चाईं चाईंआ। उन्हां नूं लोड़ रही कोई ना मोख, अन्तम जोती जोत मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर भगतां हत्थ टिकाईआ।

जन भगतो तुहाड्डा मन्दर इक्क, मंज़ल आपणी दए समझाईआ। जिथ्थे पैंडा जाए मुक्क, पान्धी नज़र कोई ना आईआ। प्रगट होवे जो बैठा लुक, सन्मुख हो के दरस दिखाईआ। दरस देण दी प्रभ नूं भुक्ख, जुग चौकड़ी आपणी धार चलाईआ। इस तों परे नहीं होर कुच्छ, धुर दा लेखा दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मानस मनुष आपणे रंग रंगाईआ।

जन भगत कहण तेरा सच जैकारा, जै जैकार जणाईआ। तेरा अन्त ना पारावारा, हदूद बेअन्त तेरी वडयाईआ। तूं वसें धाम नयारा, सचखण्ड सोभा पाईआ। चरन कँवल गुरू अवतारा, पीर पैगम्बर सीस निवाईआ। भिखारी ब्रह्मा विष्न शिव मंगण वारो वारा, दर ठांडे अलख जगाईआ। तेरा खेल अगम्म अपारा, अलक्ख अगोचर तेरे हत्थ वडयाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग उतरया पार किनारा, जुग चौकड़ी वेस वटाईआ। निरगुण सरगुण खेल न्यारा, पंज तत्त करे कुड़माईआ। काग़ज़ कलम ना लिखणहारा, नेत्र रोवे मारे धाईंआ। तेरा भगत तेरा वणजारा, नित नवित्त तेरी आस तकाईआ। कर किरपा हरि निरँकारा, कुदरत क़ादर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत मंगण इक्क वर, वस्त अमोलक झोली पाईआ।

वस्त अमोलक मिली दात, दाते दानी दया कमाईआ। धुरदरगाही सच सुगात, सुगंध खा के झोली पाईआ। चरन प्रीती जोड़ के नात, सिध्धा आपणा मेल मिलाईआ। कलिजुग मेट अन्धेरी रात, सति सतिवादी चन्द चमकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाउणा सच्ची गाथ, सोहँ अक्खर इक्क पढ़ाईआ। सय्यदे करदे सीस झुकांदे त्रैलोकी नाथ, गोपी काहन निउँ निउँ लागण पाईआ। तूं आप स्वामी हर घट वस्सया पास, लक्ख चुरासी डेरा लाईआ। तेरे मिलण दी इक्को ख़ाहिश, जन भगत रहे जणाईआ। जंगलां विच्च ना होवे तलाश, बन खोजण कोई ना जाईआ। कर किरपा आ जा पास, विछड़े जोड़ जुड़ाईआ। तूं साहिब स्वामी अनाथां नाथ, ग़रीब निमाणयां गोद उठाईआ। साड्डी निम्ही निम्ही सुण आवाज़, निरगुण निरवैर लए अंगढ़ाईआ। पन्ध मुका पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर डेरा ढाईआ। घर साचे वसें साथ, संगी बण के नज़री आईआ। आपणे नाम दा दस्सदे इक्को जाप, कोट

पाप मिटाईआ। सतिजुग साची थापणा दे थाप, कलिजुग कूड़ा परे हटाईआ। तेरा नाउँ रसूल पाक, परवरदिगार तेरा नूर रुशनाईआ। जन भगतां तेरी याद, मुरीद मुशर्द वेख वखाईआ। आपणे भेव दा खोल्ह आगाज़, ग़रज़ सभ दी पूर कराईआ। सानूं पढ़नी ना पए निमाज़, वुज़ूआं विच्च ना वक्त लंघाईआ। तेरा भगतां नाल बणे सच्चा समाज, चार वरन दे वडयाईआ। तेरे सीस ते सोहे ताज, हुक्मरान तेरी सरनाईआ। जन भगत तेरे मुहताज, मुहब्बत विच्च कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ।

जन भगत कहण प्रभ करा दे सोमन, सोए मात उठाईआ। एका रंग रंगाँ दे काफर मोमन, मुशर्द मुरीद मेल मिलाईआ। तेरे विछोड़े अंदर सन्त रोवण, नेत्र नीर देण वहाईआ। गुरमुख गूढ़ी नींद कदे ना सोवण, राती उठ उठ राह तकाईआ। गुरसिख हन्झआं हार परोवण, लड़ी लड़ी नाल बंधाईआ। तेरा मुखड़ा वेखण कोमल कँवल नैण तेरा दर्शन पाईआ। तूं आवीं दुरमत धोवण, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। अमृत रस आवीं चोवण, निझर धार वहाईआ। साचा बीज आवीं बोवण, फुल्ल फुलवाड़ी इक्क महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दे वडयाईआ।

जन भगत मेरा नाम अलेख, लिखत ना कोई समझाईआ। जन भगत मेरा नाम अभेख, अव्वलड़ा भेख वटाईआ। जन भगत मेरा नाम संदेश, धुर दा राग अलाईआ। जन भगत मेरा नाम परवेश, अन्तर आत्म जाए समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत सुहेले लए वेख, वेखणहारा इक्क अखवाईआ।

वेखणहारा इक्क स्वामी, हरि करता बेपरवाहीआ। आदि जुगादी अन्तरजामी, जलवा नूर रुशनाईआ। जिस दे नाम दी सिफ्त करे बाणी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपणा ढोला गाईआ। सो जन भगतां देवे इक्क निशानी, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। सच दवारे दा पद निरबाणी, इक्को वार समझाईआ। प्रभ नूं मिल के भगत अग्गे मुक्क जाए कहाणी, लिखण पढ़ण दी लोड़ रहे ना राईआ। सच दवारे दी बण के साची राणी, रंग रत्ता वेखे धुर दा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां होए सहाईआ।

जन भगतो नाम तुमारा मीत, मित्र हरि अखवाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गीत, वाहवा राग अलाईआ। नाता छुट्ट जाए मन्दर मसीत, काया काअबा सोभा पाईआ। नज़री आवे इक्क अतीत, त्रैगुण डेरा ढाईआ। लहणा चुक्क जाए ऊँच नीच, ज़ात पात ना कोई वखाईआ। साचा कलमा दस्से हदीस, हरि मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। चरन कँवल उप्पर धवल दे के आप प्रीत, प्रीतम आपणा रंग रंगाईआ। जिस दवारे दा आप वसनीक, हरिजन ओसे घर बहाईआ। लोकमात नाम शहादत पा के आपणी करन आया तस्दीक, दूजा संग ना कोई लिआईआ। कूड़ा ठीकर भन्न के ठीक, ठाकर आपणा मेल मिलाईआ। जन भगतां करके धुर दी रीझ, राज़ी खुशी दए पुचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वेखे आमदीद, आमद विच्च सोभा पाईआ।

जन भगत तुमारा गृह मन्दर, तुम ठाकर आप बणाया। घर स्वामी खोल्ह के जंदर, जगत तमाशा इक्क दृढ़ाया। भाग लगा के डूंघी कंदर, दीपक दीआ इक्क जगाया। परभास भवा के जंगल, मन्दर इक्को घर रुशनाया। शरअ ज़ंजीर तोड़ के संगल, प्रेम डोरी तन्द बंधाया। आपणे प्यार दा सुणा के मंगल, मंगलाचार इक्क जणाया। जन्म कर्म दा तोड़ के बंधन, बन्दगी साची बन्दा आप आपणे रंग रंगाया। ढोला सुणा के सोहँ छन्दन, संसा रोग मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत सुहेले रक्ख के अञ्जण, निरगुण आपणी गोद उठाया।

आपणी गोद उठा के निरगुण, निरवैर दया कमाईआ। निराधार सुणा के साची धुन, धुनी राग बेपरवाहीआ। आपणे अन्तर जणा के आपणे गुण, गुणवन्ते गुरमुख दिते बणाईआ। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिन्हां लिआ सुण, सो सरोते सन्मुख बह बह दरसन पाईआ। (७ मध्घर २०२१ बि बलवन्त सिँघ दे गृह)

जन भगत करन पुकार, प्रभ अग्गे सीस निवाईआ। किरपा कर सिरजणहार, शाह पातशाह तेरी सरनाईआ। चारों कुण्ट रैण अंधिआर, साचा चन्द नज़र ना आईआ। पढ़ पढ़ थक्के जगत संसार, शास्त्र सिमरत वेद नाल मिलाईआ। मन्दर मस्जिद शिवदवाले मठ वेखे किवाड़, दर दर अलख जगाईआ। तीर्थ तट्टां पन्ध आए मार, भज्ज भज्ज वाहो दाहीआ। उच्चे टिल्ले परबत सर्ब वेखे पहाड़, जंगल जूह खोज खुजाईआ। जल धारा तन लिआ ठार, अगनी तत्त तपाईआ। तन माटी ला के छार, ख़ाकी ख़ाक रमाईआ। गदागर हो के फिरे दर दर दवार, भिच्छया मंगी वाहो दाहीआ। गुफ़ा अंदर बैठ कर दे रहे ध्यान, नेत्र अक्ख बन्द कराईआ। पंडतां कोलों लैंदे रहे ज्ञान, अक्खरां वाली पढ़ाईआ। मुला सेख़ां कोलों सिखदे रहे कलाम, कलमा नबी सालाहीआ। नेतिआं कोलों जाणदे रहे नाम, सति सति दृढ़ाईआ। जल विच्च करदे रिहे इशनान, मैंडक रूप वटाईआ। हे प्रभू तेरा नूर ज़हूर मिल्या ना कोई श्री भगवान, साख्यात नज़र कोई ना आईआ। जन भगत होए हैरान, हैरानी सभ दे उत्ते छाईआ। कलिजुग क्रिया कूड़ बेईमान, बेवा रूप वटाईआ। किरपा कर नौजवान, हरि नौबत नाम सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर देणा दरस दिखाईआ ।

जन भगत कहण असीं फिर फिर थक्के, बण बण पान्धी राहीआ। वेख के आए मदीने मक्के, काअबे क़बरां फोल फुलाईआ। लभ्भ लभ्भ थक्के मन्दर मट्ठे, अठसठे खोज खुजाईआ। कूड़ कुड़िआरा गल धागे घत्ते, पंडे पिण्ड ना कोई समझाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द मणकिआं वाले नाम रटे, जिह्वा नाल पढ़ाईआ। सच ना मिल्या किसे हट्टे, चौदा लोक रहे कुरलाईआ। चौदां तबक चीथड़ फटे, अलफी सच ना कोई हंढाईआ। दीन मज़्हब दे झगढ़े वेखे रट्टे, ज़ात पात करे लड़ाईआ। किसे ना खाधे सूअर किसे ने वच्छे कट्टे,

काया पलीत सभ दी नज़री आईआ। तेरे नाम कोई ना दिसे रंगे, धुर दा रंग ना कोई रंगाईआ। बिन हरि ओढ़ुन सारे फिरदे नंगे, सीस हत्थ ना कोई टिकाईआ। कलिजुग अन्तम आया कन्ढे, वैहन्दी धार रिहा वहाईआ। कोई ना चढ़या आपणे डण्डे, सच डण्डौत ना कोई जणाईआ। अमृत धार ना मिल्या खण्डे, रसीआ रस ना कोई चखाईआ। मन वासना होए गंदे, दुरमत मैल ना कोई धवाईआ। बिन हरि कन्त सुहागी दिस्सण रंडे, सेज सुहञ्जणी सोभा कोई ना पाईआ। आत्म मिल्या ना किसे अनन्दे, परमानंद ना कोई समाईआ। श्री भगवान तुध बिन तुटी कोई ना गंढे, नाता धुर दा जोड़ ना कोई जुड़ाईआ। जन भगत सुहेले दर ठांडे रहे मंगे, मांगत हो के अलख जगाईआ। हउँ ख़ाकी तेरे बन्दे, बन्दीखाना दे तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

जन भगत कहण असीं गए थक्क, जुग चौकड़ी सेव कमाईआ । किरपा कर पुरख समरथ, तेरी बेपरवाहीआ। साथों हुंदा नहीं कोई तप, हठ नज़र कोई ना आईआ। साडी झोली पा दे हक़, हक़ीक़त तैनूं दित्ती समझाईआ। जे कोई अन्तर साडे शक़, शिकवा पिछला दे गवाईआ। हिरदे अन्तर आ के वस, निरगुण डेरा लाईआ। साडे जोड़े दोवें हत्थ, ढह पए सरनाईआ। तेरे मिलण दी खुल्हे अक्ख, दोए लोचन कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे मेल मिलाईआ।

जन भगत कहण असीं रहे रो, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। साड्डी फ़रयाद सुणे ना को, गुर अवतार पैगम्बर बैठे मुख छुपाईआ। जुग चौकड़ी तेरी सुणदे रहे सो, सो पुरख निरञ्जण तेरा ध्यान लगाईआ। कलिजुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण कर मोह, सरगुण इक्को ओट तकाईआ। आत्म परमात्म नाल जाह छोह, दूर दुराडा फेरा पाईआ। साचा अमृत निहकर्मी हो के चोअ, वरन बरन डेरा ढाईआ। बिन दीवा बाती करदे लोअ, कमलापाती तेरी रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर दे माण वडयाईआ।

जन भगत कहण तेरा जुग जुग पूजा पाठ, सिमरन जोग अभियास आए कमाईआ। कलिजुग अन्तम इक्को मंगदे दात, ख़ाली झोली रहे वखाईआ। सानूं खोल्ह दे आपणा राज़, नुक़ता इक्को दे समझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा होवां दास, घर साचे वज्जे वधाईआ। सानूं लोड़ रहे ना गोपीआं वाली वेखण दी रास, काहना नाल ना खुशी मनाईआ। सिध्धी तेरे नाल करीए बात, बातन ज़ाहर तेरा खेल वेख वखाईआ। अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर सगला संग बणना साथ, समरथ दया कमाईआ। तेरा पत्तण वेखीए घाट, किनारा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लैणा मिलाईआ।

जन भगत कहण साथों होए ना पूजा, सिल पत्थर पूजन कोई ना जाईआ। तुध बिन अवर ना दिसे दूजा, इष्ट देव ना कोई मनाईआ। आपणा भेव खुल्हा दे गूझा, गहर गम्भीर पड़दा दे उठाईआ। कँवल नाभ कर ऊंधा, अमृत झिरना इक्क झिराईआ। तूं हत्थ

ना आइउँ किते ढूंडा, ढूंड वेखी सर्ब लोकाईआ। जुग चौकड़ी बणया रिहों गूंगा, गुर अवतारां कोलों कराएं पढ़ाईआ। तेरे नाम दा दो जहान वॅजदा रिहा हूंगा, हू हू पीर पैगम्बर रहे सुणाईआ। तूं ना मरया ना जिउँदा, जन्म मरन दोवें वेख वखाईआ। तेरा अमृत रस बरखे बूंद बूंदा, आपणी धार दे बरसाईआ। होए प्रकाश अन्धेरा मुक्के साढ़े तिन्न करोड़ लूं लूं दा, नूर ज़हूर इक्क वखाईआ। नाम जपा के रसना जिह्वा मूंह दा, हिरदे आपणा डेरा लाईआ। झगड़ा चुक्के मैं तूं दा, तूं ही तूं ही नज़री आईआ। लेखा मुक्के बुत्त रूह दा, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। वसेरा चुक्के काया भवरी डूंघे खूह दा, डल डेरा देणा ढाईआ। माण तुट्टे पहले धरू दा, जन भगतां आपणी गोद लए उठाईआ। हुण वेला नहीं बहणा तेरी बरूह दा, तेरे तेरे विच्च समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वेख वखाईआ।

जन भगत कहण साथों होए ना तप, कोटन कोट तपीश्र बैठे ध्यान लगाईआ। इक्को ओट अकाल तेरी बैठे तक्क, नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। किरपा कर पुरख समरथ, महिंमा अकथ्थ दे दृढ़ाईआ। साचा नूर कर प्रकाश, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। निरगुण हो के वस साथ, सगला संग निभाईआ। तेरे निरअक्खर दा करीए इक्को पाठ, बाकी छुट्टे सर्ब पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या दे समझाईआ।

जन भगत कहण ना जाए पढ़या, पढ़यां हत्थ किछ ना आईआ। जन भगत कहण ना अगनी जाए सड़या, धूणी ताअ ना डेरा लाईआ। जन भगत कहण जल ना जाए ठरया, गंगा धार ना तारीआं लाईआ। जन भगत कहण डूंघी कंदर ना जाए वड़या, नेत्र मीट ना खोज खुजाईआ। जन भगत कहण टिल्ले परबत जाए ना चढ़या, प्रभास हत्थ कोई ना आईआ। जन भगत कहण शाह सवार बण के जाए ना फड़िआ, पान्धी तेरा पन्ध ना कोई मुकाईआ। जन भगत कहण कलिजुग तरनी जाए ना तरया, अणतारू बैठे डेरा लाईआ। जन भगत कहण जगत तृष्ना जाए ना मरया, मर जीवत रूप ना कोई वटाईआ। जन भगत कहण इक्को तेरा लड़ फड़िआ, नाता तोड़ के सर्ब लोकाईआ। किरपा कर नरायण हरया, हरयावल आपणी दे वखाईआ। सच सरनाई तेरी परया, परा पसन्ती मद्धम बैखरी लोड़ रही ना राईआ। आपणा खोल्ह वखा दे धुर दा घरया, जिस घर बैठा डेरा लाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिथ्थे सीस चरनां धरया, मस्तक टिक्का धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां लए मनाईआ।

जन भगत कहण असीं रहे गौंदे, रसना जिह्वा कर हलकाईआ। जगत नेत्र रहे उठौंदे, दोए लोचन सेव लगाईआ। बाहरों मथ्था रहे रगढ़ौंदे, पत्थरां नाल घसाईआ। सरवण सुण सुण रहे खुशी मनौंदे, मन मिली वडयाईआ। अन्तम खाली हत्थ वखौंदे, झोली सच ना कोई भराईआ। दोए जोड़ के वास्ता पौंदे, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे माण वडयाईआ।

जन भगत कहण प्रभ पढ़यां सुणयां मुक्कया ना पन्ध, बैठे ढेरीआं ढाईआ। दूई द्वैती ना ढठ्ठी कंध, भाण्डा भरम ना कोई भन्नाईआ। अंदर बाहर ना चढ़या रंग, दुरमत मैल ना कोई धुआईआ। शब्द अनाद ना वज्जा मरदंग, अनहद राग ना कोई सुणाईआ। धुर दा ढोला सुणया कोई ना छन्द, जो सहिंसा दए चुकाईआ। साढ्ढे तिन्न हत्थ मन्दर दवार रिहा बन्द, कुण्डा खिड़की ना कोई खुल्हाईआ। प्रेम प्यार अंदर लाए ना कोई अंग, अंगीकार ना कोई अखवाईआ। एसे कारन अबिनाशी करते तेरे कोलों रहे मंग, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। किरपा कर सूरे सरंबग, शाह पातशाह तेरी वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को अनन्द दे वखाईआ।

जन भगत कहण प्रभ बख्श अनन्द, परम पुरख तेरी सरनाईआ। लेखा चुक्के बत्ती दन्द, अन्तर आत्म कर पढ़ाईआ। सच दवार दस्स सच्चा संग, सगली चिन्त मिटाईआ। पंच विकार करना पए ना जंग, कूड़ी क्रिया ना कोई लड़ाईआ। मन वासना मेट दे मंद, मंदिउँ चंगे दे कराईआ। नाम डोरी पा तन्द, शरअ ज़ंजीर दे कटाईआ। रूप वखा के हँ ब्रह्म, सो साहिब हो सहाईआ। सोहँ ढोला तेरा छन्द, विचोला दो जहां अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

जन भगत ढोला गौणा इक्क, इक्क ओअंकार लए मिलाईआ। जिस नूं गुर अवतार पीर पैगम्बर कहन्दे गए भविख, भविख्त दए दृढ़ाईआ। जिस दी धार विच्चों गुरमुख बणदा सिख, वालों निक्की खंडिउँ तिक्खी दए जणाईआ। जग नेत्र आवे ना दिस, रसना सके ना कोई समझाईआ। ओथ्थे हरि जू करे हित, प्रीतम बेपरवाहीआ। अगला पिछला लेखा लए नजिठ्ठ, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दए वडयाईआ।

जन भगत तेरा सिमरन एक, पूजा पाठ प्रभू दृढ़ाईआ। हरि सरनाई साची टेक, टिक्का मस्तक नाम लगाईआ। अंदर वड़के खोल्हे भेत, भेव दए जणाईआ। होर लभ्भदे केती केत, कोटन कोट नैण उठाईआ। बिना भगतां किसे ना मिल्या आपणे देस, साचा घर ना कोई समझाईआ। आदि जुगादी अवल्लड़ा वेस, निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ। गुरमुखां माणे आपणी सेज, सुहञ्जणी दए वडयाईआ। ना कोई लोड़ रहे निहाली लेफ़, तकीआ नाल ना कोई मिलाईआ। ना कोई मोढ्ढे धरे खेस, खूंडी हत्थ ना कोई टिकाईआ। जिस दवारे मिल्या आ के गुर दस्मेश, सो दिशा दए जणाईआ। जिथ्थे आदि जुगादि रहे हमेश, सदा स्वामी डेरा लाईआ। निरवैर पुरख बण नरेश, नर निरँकारा हुक्म सुणाईआ। जन भगतो तुहाड्डा उथे लिखया लेख, जिथ्थे लेखा कोई ना कलम शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दए वडयाईआ।

जन भगत पढ़न लिखण दी रहे ना लोड़, पूजा पाठ ना कोई कराईआ। जिस नूं आपणे नाल लए जोड़, जोड़ी धुर दी लए बणाईआ। लग्गी प्रीत निभावे तोड़, अद्ध

विचकार ना कोई तुड़ाईआ । उहनां दा कारज गिआ सौर, मानस जन्म लेखे पाईआ। मुड़के फेर ना आवे बौहड़, लक्ख चुरासी ना कोई भवाईआ। उहनां दे सिर ते झुलदा चौर, जिन्हां मिल्या बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत लए तराईआ।

जन भगत तेरा पाठ ना को, हरि करता आप जणाईआ। परम पुरख नाल सच्चा मोह, मुहब्बत इक्को इक्क वखाईआ। उह तेरा तेरे जोगा जावे हो, होका दे के आप सुणाईआ। बिन दीवा बाती करके लोअ, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। धुर दा ढोआ देवे ढो, वस्त अमोलक झोली पाईआ। आत्म नाल आपे जाए छोह, परमात्म आपणा मेल मिलाईआ। नाम दृढ़ा के आपणा सोहँ सो, ब्रह्म लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा मालक इक्क अखवाईआ।

जन भगत की रसना पढ़ना, प्रभ मिल्या बेपरवाहीआ। हरि किरपा साची मंज़ल चढ़ना, राह विच्च ना कोई अटकाईआ। सच दवारे दर्शन करना, खुशीआं रंग वखाईआ। सन्मुख हो के चरनी पड़ना, मिले सच सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां सदा तराईआ।

जन भगत तेरा मुक्के पन्ध, पान्धी मात रहण ना पाईआ। दीन दयाल हरि बख्शंद, बख्शिश आपणी रिहा कमाईआ। जुग जन्म दी विछड़ी गंढ, टुट्टी तोड़ निभाईआ। सचखण्ड दवार चाढ़ के तेरा चन्द, आपणे घर करे रुशनाईआ। तेरा प्रेम दा प्रेमी आनंद, प्रेमका रूप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दर बहाईआ।

बिन पढ़यां लिखिआं पूरी आसा, सो पुरख निरञ्जण दया कमाइंदा। जिन्हां दिता सच भरवासा, भव सागर पार कराइंदा। कोटन कोट साध सन्त सच दवारे लिखके दे रहे दरखासां, दरखासत मनज़ूर ना किसे कराइंदा। बिन भगतां किसे नाल नहीं मेरा साका, सज्जण अवर ना कोई बणाइंदा। पैहलों उहनां दा पूरा करना घाटा, घाटी मंज़ल आप चढ़ाइंदा। जिन्हां दे पिच्छेमारे वाटां, निरगुण हो के फेरा पाइंदा। पैहलों लिखके उहनां साका, साथी जगत जहान वखाइंदा। जिन्हां दा मालक इक्को आका, बिन अकलों पार लँघाइंदा। जिन्हां दा ओस दे अंदर ख़ाका, बिन शकलों गोद बहाइंदा । आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी पूरा कर भविख्त वाका, भाखिआ आपणी इक्क दृढ़ांइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल पुरख समराथा, समरथ आपणी कार कमाइंदा।

जन भगत तेरा सच स्वामी, स्वागत इक्को करन आईआ। आदि जुगादी अन्तरजामी, अन्तर आत्मा वेख वखाईआ। जन भगतां पढ़न दी इक्को बाणी, सोहँ सदा समझाईआ। जिस दा रूप चारे खाणी, चार जुग वडयाईआ। जिस दा हुक्म चोज वडाणी, चारों कुण्ट आप वरताईआ। जिस दा हुक्म खेल महानी, ख़ालक ख़लक दए समझाईआ। जिस दा पद इक्क निरबानी, निरवैर पुरख अखवाईआ । जिस दा गुर अवतार पीर पैगम्बर मात

निशानी, भगतां दए वडयाईआ। सो खेल खेले शाह सुलतानी, कलिजुग अन्तम बेपरवाहीआ। जन भगत दवारे खा के इक्क वार महिमानी, अग्गे महिमान सदा दे लए बणाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एहो करन आया वड्डी मेहरवानी, मेहर नज़र नाल आपणे रिहा तराईआ। (८ मध्घर २०२१ बि सरदारा सिँघ दे गृह)

* * * * *

जन भगत कहे प्रभ कर रक्खया, रक्खशक इक्को नज़री आईआ। जन्म कर्म दी पूरी कर इच्छिया, नाम अमोलक वस्त झोली पाईआ। चरन प्रीती दे दे भिच्छया, मेहर नज़र उठाईआ। आपणे मिलण दी दस्सदे सिख्या, साची कर पढ़ाईआ। सृष्ट सबाई दिसे मिथ्या, थिर कोई रहण ना पाईआ। तूं माण दवावें निक्कयां वड्डयां, नीचों ऊँच बणाईआ। तेरी किरपा मन जाए जिँतिआ, दूजी वासना रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ रखाईआ।

जन भगत कहे प्रभ वेख हाल, हालत दिआं जणाईआ। वस्त अमोलक दे माल, दौलत नाम झोली पाईआ। कूड़ी क्रिया टुट्टे जंजाल, सति सच इक्क समझाईआ। भाग लगा काया माटी खाल, तत्तव तत्त दे दृढ़ाईआ। साचे ढांचे लैणा ढाल, सच कुठाली आप उपाईआ। हउँ नढ्ढे तेरे बाल, बाली रूप सरवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ रखाईआ।

जन भगत कहण प्रभ सिर दे ताज, तेरी इक्क सरनाईआ। जुग चौकड़ी रखीं लाज, सदा सदा सहाईआ। दो जहानां तेरा रिवाज, रस्म जगत बणाईआ। भगतां करीं आप काज, करनी दईं समझाईआ। मस्तक टिक्का सीस गुरू महाराज, पातशाह निवाईआ। दूसर खेल सृष्ट तमाश, वेखे जगत लोकाईआ। कूड़ी क्रिया करे नाच, घर घर डौरू वाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वडयाईआ।

जन भगत कहण प्रभ किरपा कर, करते तेरी इक्क सरनाईआ। तेरे लेखे लाया जरम, जन्म तेरी झोली पाईआ। बिरहों विछोड़े ज़ख्मां उत्ते ला मरहम, पट्टी आपणा नाम बंधाईआ। लेख मुका दे पिछले कर्म, कांड नाम दे समझाईआ। सच दवारे मिले सरन, सरनगत इक्क दृढ़ाईआ। तूं साहिब स्वामी तारन तरन, तारीं हर घट थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन साचे वेख वखाईआ।

जन भगत कहे मेरा धुर दा तरला, निउँ निउँ सीस निवाईआ। भेव खुल्ह दे आपणे घर दा, पड़दा आप चुकाईआ। वस्त अनोखी मंग मंगदा, नाम पदार्थ दे वरताईआ। सुणां नाद अगम्मी मरदंग दा, धुन आत्मक राग सुणाईआ। रंग चाढ़ दे आपणे रंग दा, दुरमत मैल धुआईआ। लेखा चुक्के द्वैती कंध दा, भाण्डा भरम भन्नाईआ। होए प्रकाश

जोती चन्द दा, सूरज चन्द मुख छुपाईआ। वेखां खेल सूरे सरबंग दा, सच दवारे दे बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लहणा दे चुकाईआ।

जन भगत कहे प्रभ तेरी आसा, तृस्ना दे बुझाईआ। चरन कँवल सच भरवासा, भउ दे मिटाईआ। आपणे मिलण दा खोल्ह के दस्स खुलासा, खुशीआं नाल समझाईआ। रसना गाईए स्वास स्वासा, सिमरन इक्क बणाईआ। करवट लै बदल लै पासा, आपणा मुख भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर आपणे लए मिलाईआ।

जन भगत कहे मैं निक्का बच्चा, बच्चयां विच्चों नज़री आईआ। काया माटी भाण्डा कच्चा, तत्तां बणत बणाईआ। हरदे अंदर तूं ही वसा, निरगुण डेरा लाईआ। आपणे मिलण दी खोल्हदे अक्खां, आखर पड़दा दे उठाईआ। आपणा हाल तैनूं दस्सां, हक़ीक़त दिआं समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी माण वडयाईआ।

जन भगत कहे मैं तेरा बरदा, बन्दीख़ाना दे तुड़ाईआ। तूं मालक घर घर दा, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तैथों डरदा, गुर अवतार सीस झुकाईआ। पीर पैगम्बर तेरा कलमा पढ़दा, तोबा तोबा रहे सुणाईआ। तेरा रूप नरायण नर दा, शाह पातशाह तेरी सरनाईआ। तूं मालक ख़ालक हुक्म अगम्मी करदा, धुर फ़रमाणा इक्क सुणाईआ। तेरे अग्गे कोई ना अड़दा, दो जहान बैठे ढेरीआं ढाहीआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरा नाम लक्ख चुरासी जीव जंत पढ़दा, सिफ्तां नाल सालाहीआ। तूं मालक ओस दर दा, जिस दा दरवाज़ा नज़र किसे ना आईआ। तेरा भगत सुहेला इक्को मंग मंगदा, मांगत हो के झोली डाहीआ। बिन तेरी किरपा अग्गे कोए ना लँघदा, पन्ध सके ना कोई मुकाईआ। सुख माणे ना तेरी सेज पलँघ दा, सुख आसण बहि ना खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां अंग लगाईआ।

जन भगत कहण प्रभ कर मिलाप, मिलणी तेरे हत्थ रखवाईआ। कोट जन्म दे उतरन पाप, दुरमत मैल धुआईआ। तूं धुर दा सज्जण साक, साहिब इक्क अखवाईआ। कर किरपा खोल्ह ताक, बजर कपाटी पड़दा लाहीआ। सच प्रीती जोड़ नात, आत्म परमात्म रंग रंगाईआ। तेरा ढोला गाईए गाथ, सोहँ इक्क पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा देणा साचा वर, सच तेरी सरनाईआ।

जन भगत कहण जग जीवण दाते, सति तेरी सरनाईआ। आदि जुगादी पुरख अबिनाशे, पतिपरमेश्वर तेरी वडयाईआ। जन भगतां जुड़े तेरे संग नाते, सगला संग बणाईआ। दूसर अग्गे करने होर ना कोई अरदासे, बेनन्ती तेरे अग्गे सुणाईआ। साड्डी होर अर्ज़ कोई ना वाचे, फ़र्ज़ तेरा नज़री आईआ। तूं लभ्भें मात गवाचे, लक्ख चुरासी विच्चों फोल फुलाईआ। अन्तम ढाल आपणे सांचे, संचा इक्को दे समझाईआ। भाग लगा दे काया माटी काचे, कच कंचन रूप वटाईआ। दरस दिखादे ज़ाहर बातन बाते, बैतल धाम दे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां रंग रंगाईआ।

जन भगत कहण प्रभ रंग रंगीला, रंग रत्ता इक्क अखवाईआ। जुग चौकड़ी बणे वसीला, कलिजुग अन्तम फेरा पाईआ। जिस दा सन्त सुहेले सच कबीला, क़िबला देवणहार वडयाईआ। जन भगतां हो अधीना, शाह सुल्ताना सेव कमाईआ। गरीबां अन्तर हो मस्कीना, मुशकल हल्ल कराईआ। लेख चुकाए लोक तीना, त्रैभवण धनी दए वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां सदा तराईआ।

भगत सुहेला सदा स्वामी, हरि करता इक्क अखवाइंदा। आदि जुगादि सदा निहकामी, निहचल धाम डेरा लाइंदा। सन्त सुहेला बण के बानी, रहबर इक्को राह समझाइंदा। नाम निधाना दे निशानी, निरअक्खर आप पढ़ाइंदा। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दा पद इक्क निरबानी, निरवैर पुरख समझाइंदा। भगत भगवान सदा सदा सद गाए इक्क कहाणी, कहावत जगत विच्च चलाइंदा। कोटन कोट कोट खोल्हदे जगत विदवानी, विद्या अन्तर भेव कोई ना पाइंदा। बिन हरि भगतां सभ दे होए हैरानी, हरि का मन्त्र ना कोई वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिन्हां उप्पर करे आप मेहरवानी, मेहरवान आपणे घर वसाइंदा। (८ मध्घर २०२१ बि गुरदयाल सिँघ ते चन्द कौर दे गृह)

✻ ✻ ✻ ✻ ✻

जन भगत कहे प्रभ कट्ट दुःख, अगनी तत्त ना कोई तपाईआ। जन भगत कहे प्रभ कट्ट भुक्ख, तृष्ना तृखा बुझाईआ। जन भगत कहे प्रभ उजल कर मुख, दुरमत मैल धवाईआ। जन भगत कहे प्रभ आत्म दे सुख, ब्रह्म निरंतर इक्क दृढ़ाईआ। जन भगत कहे प्रभ गोदी चुक्क, धुर दे कोझे कमले गले लगाईआ। जन भगत कहे प्रभ सुहा आपणी रुत्त, पत्त डाल्ही तन महकाईआ। जन भगत कहे जुग जन्म दे विछड़यां आ के पुच्छ, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। जन भगत कहे बख्श साची सुच, कूड़ी क्रिया परे हटाईआ। जन भगत कहे जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ।

जन भगत कहे प्रभ बख्श प्रीत, बिप्परीत दे तजाईआ। जन भगत कहे तेरी वेखीए साची रीत, मन्त्र नाम इक्को दे दृढ़ाईआ। जन भगत कहे नाता छुट्ट जाए मन्दर मसीत, काया काअबा दे वखाईआ। जन भगत कहे लहणा देणा चुका ऊँच नीच, राउ रंक नज़र कोई ना आईआ। जन भगत कहे रंग वखा हस्त कीट, घर घर पड़दा लाहीआ। जन भगत कहे सच कलमा दस्स हदीस, हज़रत कर पढ़ाईआ। जन भगत कहे तेरे हत्थ प्रभू बख्शीश, रहमत झोली इक्को पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, दर ठांडे सीस निवाईआ।

जन भगत कहे प्रभ आसा पूरन, पूरी इच्छया दे कराईआ। लोकमात उतरन सगल वसूरन, विख रहण कोई ना पाईआ। तेरे बरदे दर मजदूरन, सेवक चाकर पाख़ाक

नज़री आईआ। तूं साहिब हाज़र हज़ूरन, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। हउँ मूर्ख मुग्ध मूढ़न, अज्ञान अन्धेर दे मटाईआ। तेरे चरन मंगीए धूड़न, मस्तक टिक्का दे लगाईआ। नाता तुट्टे कूड़ो कूड़न, कूड़ी क्रिया दे खपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा मार्ग दे समझाईआ।

जन भगत कहण तेरा सहारा, सईआ इक्को नज़री आईआ। कलिजुग वेख जगत किनारा, नईआ डौले थाउँ थाईंआ। मिले कोई ना वंञ मुहाणा, चप्पू नाम ना कोई लगाईआ। नेत्र रोंदा राजा राणा, शाह सुल्तान दए दुहाईआ। साधां मिले ना कोई टिकाणा, सन्त भज्जण वाहो दाहीआ। कोई ना समझे तेरा भाणा, भावी सभ दे सिर ते छाईआ। तूं शहनशाह पातशाह श्री भगवाना, पारब्रह्म प्रभ तेरी आस रखाईआ। तूं देवणहारा दाना, दाता इक्को इक्क इक्क तेरी वडयाईआ। तेरा झुलदा रिहे निशाना, दो जहान सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां बेनन्ती कर परवाना, परम पुरख तेरे अग्गे इक्क सुणाईआ।

जन भगत कहण तूं ही तौफ़ीक, तेरी ओट तकाईआ। तूं सज्जण सच्चा मीत, मित्र प्यारा इक्क अखवाईआ। तेरे नाउँ दा गाईए गीत, गोबिन्द इक्क सालाहीआ। हर घट वसणा सदा चीत, ठगोरी मन ना कोई रखाईआ। अर्शी फर्शी दर ठांडे पा भीख, भिच्छया इक्क वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम भंडारा झोली पाईआ।

जन भगत कहे मैं मांगत दर दा, दरवेश नज़री आईआ। तूं मालक अगम्मी घर दा, भण्डारा इक्को दे वरताईआ। तूं रहबर सचखण्ड दा, थिर घर तेरी सुणी चतराईआ। तूं भगतां पैज रक्खदा, जुग जुग वेख वखाईआ। सन्तां दे अंदर वसदा, हिरदे हरि हरि डेरा लाईआ। प्यारा गुरमुखां दे रस दा, रस आत्म दे चखाईआ। गुरसिखां नाल बह बह हस्सदा, हसती आपणी दे समझाईआ। कलिजुग वेख अन्धेरा रैण घट दा, चारों कुण्ट चन्द ना कोई चमकाईआ। तेरा खेल पुरख समरथ दा, अकथ्थ तेरी वडयाईआ। भगत सुहेला दर इक्को वस्त मंगदा, ख़ाली झोली दे भराईआ। मैं भुक्खां फिरां अनन्द दा, निजा नंद दे चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां हो सहाईआ।

जन भगतां हो सहा साहिब, गुरमुख रहे जणाईआ। तेरी आदि जुगादि सुणदे रहे हदाइत, हज़रत करन पढ़ाईआ। कलमे विच्चों कर अनाइत, काअबा दए दुहाईआ। आपणे नाम दी दस्स शराइत, शरअ दे बदलाईआ। तेरे हत्थ सदा हमाइत, हम साजण हो के घर आईआ। तेरे मन्दर अंदर करीए रिहाइश, सच दवारे डेरा लाईआ। तेरी करे ना कोई अज़माइश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, लेखा आपणे विच्च समाईआ।

जन भगत कहण प्रभ सुरत संभाल, सोई सवाणी लए उठाईआ। नाता तोड़ जगत

जंजाल, जागरत जोत कर रुशनाईआ। सन्त सदा तेरे कंगाल, भुक्खयां विच्चों भुक्खे नज़री आईआ। दीना बंधप दीन दयाल, दया निध ठाकर ठोकर आपणी दे लगाईआ। वसल असल दे जमाल, असलीअत वसीअत दे कराईआ। ग़फ्लत विच्च होए कंगाल, उल्फ्त विच्च वडयाईआ। मुहब्बत तेरी बेमिसाल, मिसल सके ना कोई बणाईआ। किरपा कर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भाग सभ दा झोली पाईआ। (८ मध्घर २०२१ बि उजागर सिँघ दे गृह)

* * * * *

जन भगत कहण प्रभ कर मेहरवानी, मेहरवान तेरी सरनाईआ। कलिजुग अन्तम होई हैरानी, धीरज नज़र कोई ना आईआ। चार कुण्ट दहि दिशा दिसे परेशानी, सांतक सति ना कोई वरताईआ। शाह सुल्तान करन बेईमानी, सच सुच्च कोई नज़र ना आया। अमृत रस मिले ना ठंडा पाणी, अठसठ तीर्थ रहे कुरलाईआ। हिरदे वसाए कोई ना तेरी बाणी, शास्त्र सिमरत वेद पुरान तेरी देण गवाहीआ। अन्तर आत्म मिले ना सच निशानी, पड़दा दूई द्वैत ना कोई उठाईआ। बिरहों तीर निराला वज्जे ना कोई कानी, सुरती कायनात ना कोई उठाईआ। चार कुण्ट दहि दिशां दिसे शैतानी, दीन मज़हब शरअ करे लड़ाईआ। बोध अगाधा आत्म पंडत दिसे ना कोई ज्ञानी, जगत विद्या पढ़ पढ़ होए हलकाईआ। लेखा मुक्के ना चारे खाणी, अंडज जेरज उत्भुज सेतज पल्लू ना कोई छुडाईआ। भेव ना पाए कोई चारे बाणी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी समझ किसे ना आईआ। सुरत शब्द मिलावे मेल ना कोई हाणी, धुर दा जोड़ ना कोई जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान हो सहाईआ।

जन भगत कहण प्रभ वेख आपणा जग्ग, सदी वीहवीं ध्यान लगाईआ। चार वरन लग्गी अग्ग, शत्तरी ब्रह्मण शूद्र वैश अगनी तत्त ना कोई बुझाईआ। काया काअबे करे कोई ना हज्ज, हुजरा हक़ नज़र किसे ना आईआ। मन्दर मस्जिद सारे रहे नट्ठ, काया मट्ठ खोज ना कोई खुजाईआ। तेरा शब्द स्वामी सुणे ना कोई अनहद, घर घर विच्च राग ना कोई अलाईआ। अमृत झिरना झिरे ना निझर धार दए पलट, रस इक्को इक्क वखाईआ। निरगुण जोत नज़र ना आए लट लट, कमलापाती दीआ बाती गृह मन्दर दिसे ना कोई रुशनाईआ। चौदां तबक चौदां लोक रोंदे वेखे खाली हट्ट, बण वणजारा साची वस्त ना कोई विकाईआ। जीव जंत साध सन्त नाड़ बहत्तर उबली रत्त, गुरमत समझ कोई ना पाईआ। मन वासना दृष्टी सृष्टी इष्टी रही नट्ठ, साचा सज्जण मिले किसे ना माहीआ। दुरमत मैल दूई द्वैती माया ममता हउमे हंगता सके कोई ना कट्ट, सच खुमारी नाम ना कोई चढ़ाईआ। तेरी चरन प्रीती साची रीती मिले किसे ना रस, जगत रसना दवार होई हलकाईआ। तेरे मिलण दी साहिब सतिगुर किसे ना खुल्ही अक्ख, निझ नेत्र दरस कोई ना पाईआ। आत्म परमात्म मिल के तूं मेरा मैं तेरा गाए कोई ना जस, धुर दा नाअरा सच ना कोई अलाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग जो आए

दरस, सो सिख्या सारे गए भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान हो सहाईआ।

जन भगत कहे प्रभ साड्डे नेत्र वेख रोंदे, नैणां छहिबर लाईआ। बिरहों विछोड़े अंदर मूल ना सौंदे, गिट्टीआं गिण गिण रात लंघाईआ। अंदर अंदर काया मन्दर तेरे नाम दा ढोला गौंदे, दूजी अवर ना कोई पढ़ाईआ। सदा सदा सद तेरा राह तकौंदे, कवण वेला मिले सच्चा माहीआ। दोए जोड़ चरन धूढ़ी टिक्का मस्तक लौंदे, इक्को खाक रमाईआ। गल पल्लू नमो नमो निमस्कार सजदा करके खुशी मनौंदे, वाह वाह तेरी बेपरवाहीआ। चार कुण्ट दहि दिशा पृथ्मी आकाश तेरा ध्यान लगौंदे, मण्डल मंडप तेरा राह तकाईआ। कलिजुग जीव जंत तेरे कोलों अक्ख शरमौंदे, नेत्र नैण ना कोई मिलाईआ। जगत विकार करन मन भौंदे, भय भउ सिर तों गए भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ।

जन भगत कहण प्रभ कलिजुग वेख आपणी दुनियां, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप ध्यान लगाईआ। सति रिहा ना रिखीआं मुनीआं, मुल्ला शेख़ मुसाइक मसला हक़ ना कोई सुणाईआ। सिर तों ओढ़ुण लथ्थे चुनीआं, चोटी पड़दा सीस ना कोई टिकाईआ। तेरा भेव ना आया गहर गम्भीर वड वड गुणीआं, विद्दत समझ कोए ना पाईआ। तेरी अंदरों अड़के धार शब्द अनाद किसे ना सुणिआ, रागी आपणा आपणा राग रहे अलाईआ। अंदर वड़ के सुरती सुरत तेरी किरपा नाल किसे ना खुल्ल्हीआ, अकाल मूरत नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा फेरा पाईआ।

जन भगत कहण तेरा वेख्या खेल अजीब, अजब तेरी वडयाईआ। कलिजुग रोंदे वेखे निमाणे ग़रीब, मेहर नज़र ना कोई उठाईआ। भाई भाईआ बणे शरीक, पिता पूत करे लड़ाईआ। गुर चेला चेला गुरू दए हदीस, कलमा कलाम जगत सुणाईआ। लेखा चुक्किआ ना हस्त कीट, ऊँच नीच पन्ध ना कोई मुकाईआ। काया दिसे ना कोई ठांडी सीत, अगनी अग्ग रही तपाईआ। श्री भगवान तेरे नाल लाए ना कोई प्रीत, साचा संग ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तम हो सहाईआ।

जन भगत कहे वेख आपणा जहान, जहालत चारों कुण्ट नज़री आईआ। किसे नज़र ना आए धुर दा राम, जो हर घट रिहा समाईआ। कोई वेख ना सके सच्चा काहन, जो लक्ख चुरासी अंदर बंसरी नाम रिहा वजाईआ। कोई समझ ना सके उहदा अमाम, परवरदिगार नूर इल्लाहीआ। कोई जाण ना सके पुरख अकाल, की तेरी वडयाईआ। कूड़ी क्रिया चारों कुण्ट नच्चे कुद्दे पावे धमाल, मुख घुंगट रही उठाईआ। वरनां बरनां सके ना कोई संभाल, सिर हत्थ ना कोई टिकाईआ। बिन हरि नामे सारे दिसे कंगाल, खाली भाण्डे नज़री आईआ। साचा बणे ना कोई दलाल, विचोला नज़र कोई ना आईआ। हकीकत दस्से ना कोई हलाल, मनसा पूर ना कोई वखाईआ। चार कुण्ट अवल्लड़ी चाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे धुर दा वर, सिर मस्तक हत्थ टिकाईआ।

जन भगत कहण प्रभ वेख लोकमात, धरनी धरत धवल रही कुरलाईआ। साचा देवे ना कोई साथ, धुर दा संगी नज़र कोई ना आईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द पढ़न तेरा पाठ, अंदर वड़ के निरगुण तेरा दरस कोई ना पाईआ। साहिब स्वामी वेख अन्धेरी रात, अन्तरजामी फेरा पाईआ। लक्ख चुरासी किसे लेखे लग्गे ना पवण स्वास, पवण पवणी दए दुहाईआ। मंज़ल पौड़ी चढ़े कोई ना घाट, रुढ़दी वेख लोकाईआ। आत्म सेजा सुत्ता कोई ना खाट, जगत सिँघासण रहे हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान हो सहाईआ।

जन भगत कहण प्रभ तेरी ओट, आसरा दूजा नज़र कोई ना आईआ। कूड़ी क्रिया अंदरों कढ्ढ दे खोट, खोटे खरे लए बणाईआ। आपणे नाम दी ला अगम्मी चोट, सोई सुरती दे उठाईआ । आलूणिउँ डिग्गे फड़ बोट, बेपरवाह दया कमाईआ। कर प्रकाश घर निर्मल जोत, दीवा बाती लोड़ रहे ना राईआ। पड़दा चुक्क जाए चौदां लोक, चौदां तबक इक्को रंग वखाईआ। आपणे नाम दा साचा दस्स सलोक, बहुती करनी ना पए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ रखाईआ।

जन भगत कहण प्रभ दस्स दे पढ़ना, निरअक्खर दे समझाईआ। आपणी मंज़ल दस्सदे चढ़ना, घर घर विच्च राह प्रगटाईआ। टेडी बंक दस्सदे पार करना, ईड़ा पिंगल बैठे सीस निवाईआ। सच दवारे दस्स दे खड़ना, कुण्डी खिड़की आप खुल्हाईआ। साचा ढोला दस्सदे पढ़ना, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाईआ । जींवदिआं जग दस्सदे मरना, मरयां जीवत रूप वटाईआ। आपणे अंदर दस्सदे वसणा, महल्ल अट्टल डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दे समझाईआ।

जन भगत कहण प्रभ पड़दा खोल्ह, उहला रहण कोई ना पाईआ। तेरे नाम दा सुणीए अगम्मी ढोल, ढोलक छैणा ना कोई खड़काईआ। तेरा संदेशा सुणीए अनोखा बोल, जिस दा जस छत्ती राग रहे गाईआ। तेरा दरस करीए अनमोल, सनमुख आपणा मुखड़ा दे वखाईआ। सद वसीए तेरे कोल, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाईआ। अन्तर आत्म जाणा मौल, परमात्म भेव मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे हो सहाईआ।

जन भगत कहण प्रभ चाढ़ दे रंग, अनडिठड़ा आप रंगाईआ। तूं साहिब सूरा सरबंग, समरथ तेरी सरनाईआ। दर ठांडा तेरा इक्को रहे मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। आपणे प्रेम दा दे आनंद, निजानंद अनन्द विच्चों दरसाईआ। तेरा ढोला गाईए छन्द, इक्को राग अलाईआ। लेखा मुक्क जाए बत्ती दन्द, रसना जिह्वा लोड़ रहे ना राईआ। घर प्रकाश करना चन्द, जोती जोत डगमगाईआ। तेरी सेज वेखीए इक्क पलँघ, जिस उप्पर निरगुण बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे दे वडयाईआ।

जन भगत कहण साड्डा वेख सरीर, पंजां तत्तां वाला नज़री आईआ। बिन तेरी किरपा आवे ना कोई धीर, सांतक सति ना कोई कराईआ। कूड़ी क्रिया शरअ वज्झा ज़ंजीर, कल सके ना कोई तुड़ाईआ। बदली विच्च बदल सके ना कोई तकदीर, तदबीर सके ना कोई बणाईआ। तैनूं लभ्भदे फिरदे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ टिल्ले परबत वड फकीर, फिकरयां विच्च तेरा राग सुणाईआ। तूं चोटी चाढ़ ओस अखीर, जिस घर वसें शहनशाहीआ। जिस गृह मिलावा होया कबीर, सो मन्दर दे वखाईआ। तेरा लेखा बेनज़ीर, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। सदी वीहवीं होए दिलगीर, दिलबर मिल्या ना सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां लए तराईआ।

जन भगत कहण तेरी वेखी सृष्टी, चार कुण्ट ध्यान लगाईआ। लक्ख चुरासी जोड़ा जोड़ा दिसे गृहस्ती आत्म सेजा श्री भगवन्त तेरी सच ना कोई हंढाईआ। सच दवारे खुल्ही वेखी ना किसे दृष्टी, दीद ईद चन्द ना कोई रुशनाईआ। झगढ़ा रिहा स्वर्ग बहिश्ती, दोवें रहे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां इक्को घर वखाईआ।

जन भगत कहण खोल्ह दरवाज़ा, घर ठांडे इक्क अज़ीईआ । तूं शाहो भूप वड राजन राजा, शहनशाह अखवाईआ। जुग चौकड़ी नित नवित्त गुरमुखां रक्खें लाजा, हरिजन साचे गले लगाईआ। कलिजुग मेट अन्धेरी राता, भिन्नड़ी रैण दे वखाईआ। नज़री आवें इक्क इकांता, दूजा संग ना कोई निभाईआ। तूं ही माता तूं ही पिता, पिता पूत गोद उठाईआ। धुर दा दे दे आपणा साथा, संगी हो के अंग लगाईआ। नाता तुट्ट जाए तत्त आठा, नौ दवारे पन्ध चुकाईआ। दसवें वेखां इक्क तमाशा, तेरा नूर ज़हूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हत्थ टिकाईआ।

जन भगत कहण तेरे चरन लग्गे सुरती, आलस निंदरा रहण कोई ना पाईआ। इक्को धार नज़री आए निरती, निरवैर तेरी सरनाईआ। तेरे चरन कँवल लग्गी रहे बिरती, कलिजुग क्रिया ना सके तुड़ाईआ। मैं दुहागण लक्ख चुरासी विच्चों आई फिरदी, तेरी आत्म दिआं दुहाईआ। मैनूं उडीक प्रभ तेरी चिर दी, पिछला लेखा दे मुकाईआ। एह खेल अगम्मी निरवैर निर दी, निराकार दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ रखवाईआ।

जन भगत कहे मेरी आसा मनसा, प्रभ तेरी आस रखवाईआ । जन्म जन्म दा चुक्क जाए संसा, हउमे रोग रहण ना पाईआ। बण निमाणा दर ते कहिंदा, अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह तेरी ओट तकाईआ। सच दवारे कर बेनन्ती ढहन्दा, गल विच्च पल्लू पाईआ। मैनूं कोई नज़र ना आए चढ़दा लहन्दा, दक्खण पहाड़ संग ना कोई रखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, साहिब सुलतान तेरी वडयाईआ।

जन भगत कहे मेरी वेख तृस्ना, तृखा रही जणाईआ। मैं वेखे विष्न ब्रह्मा शिव विष्ना, निरगुण सरगुण खोज खुजाईआ। मैं राह तक्कया रामा कृष्ना, ईसा मूसा मुहम्मद नैण अक्ख उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा आपणा घर, जिस गृह मिले माण वडयाईआ।

जन भगत कहे मैं तेरा चन्द, कोटन कोट चन्दरमा बैठे सीस निवाईआ। तेरे नाम दा ढोला सदा गावां छन्द, धुर दा राग इक्क अलाईआ। तेरे प्रेम दा माणा अनन्द, नाता तोड़ के जगत लोकाईआ। तूं ठाकर स्वामी पतिपरमेशवर अन्तरजामी जुग जन्म दी टुट्टी लैणी गंढ, गंढणहार तेरे हत्थ वडयाईआ। स्वच्छ सरूपी बिन रंग रूपी शाहो भूपी दर्शन दे के करना अनन्द, अनन्द आपणा मेरी झोली पाईआ। हउँ भिक्खक भिखारी दरवेश तेरे दर ते रिहा मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। नाता छड्ड सृष्ट सबाई वरभंड, ब्रह्मण्ड तेरे चरनां हेठां नज़री आईआ। तूं दीन दयाल सदा बख्शंद, शाह पातशाह जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लहणा देणा मुकाईआ।

जन भगत कहे मैं तेरा जोगी, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ खोजण कोई ना जाईआ। तूं ठाकर मेरा धुर संजोगी , जन विछड़े लएं मिलाईआ। तूं आत्म रसीआ साचा भोगी, साची सेजा इक्क सुहाईआ। मैं बिरहों विजोगी धुर दा रोगी, जुग जुग तेरा ध्यान लगाईआ। तूं लक्ख चुरासी साचा खोजी, कोटन कोटां विच्चों गुरमुख आपणे लए उठाईआ। तूं अन्तर आत्म बुध बिबेक सभ दी रिहा सोधी, दुरमत मैल आप धवाईआ। धन्न भाग प्रभ जे आपणे मिलण दी देवें सोझी, पड़दा उप्पर उठाईआ। बेशक मैनूं ताअने देवण लोकीं, झगड़ा करे लोकाईआ। मैं कहां मैनूं ठाकर मिल्या मौजी, जो मेरी काया मन्दर अंदर आपणी मजलस सदा लगाईआ। उह बण के धुर दा धोबी, मेरी दुरमत मैल रिहा धवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समरथ देणी इक्क सरनाईआ।

जन भगत कहे मैं छड्डया झगड़ा झेड़ा, प्रभ चरन कँवल मिली सरनाईआ। मेरा साढे तिन्न हत्थ वस्सया खेड़ा, बंक होई रुशनाईआ। आवण जावण चुक्कया गेड़ा, लक्ख चुरासी पन्ध कटाईआ । मात गरभ पौणा पए ना फेरा, दस दस मास अगन ना कोई तपाईआ । शौह दरयाए डुब्बे ना बेड़ा, बिन वंझ मुहाणे पार लंघाईआ। जिस नाम जणाया तेरा मेरा, सोहँ सच दृढ़ाईआ। सो साहिब स्वामी नेरन नेरा, घर घर बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत प्रीती तोड़ निभाईआ।

जन भगत कहे मेरी निभ जाए तोड़, अद्ध विचकार ना कोई रखवाईआ। पुरख अकाल कहे मैं निरगुण हो के आपणे नाल लिआ जोड़, सरगुण मेला सहज सुभाईआ। जन भगत कहे मेरा लेखा मुक्के अन्धेरा घोर, अन्ध अज्ञान नज़र ना आईआ। श्री भगवान कहे तेरी मेरे हत्थ डोर, चोर यार लुट्ट कोई ना जाईआ। जन भगत कहे मैं वेखां कर के ग़ौर, गहर गंभीर इक्को नज़री आईआ। अबिनाशी करता कहे प्रभू जन भगतां रक्खे सदा लोड़,

भगत भगवान इक्को रंग समाईआ। कलिजुग अन्तम जाए बौहड़, बौहड़ी बौहड़ी करनी ना पए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे मेल मिलाईआ।

जन भगत कहे प्रभ तेरा मिलाप, मेल मिलावा साचा नज़री आईआ। तूं ठाकर स्वामी धुर दा बाप, पिता पुरख अकाल अखवाईआ। मैं तेरा करां इक्को जाप, अवर ना कोई सरनाईआ। त्रैगुण माया मेट सन्ताप, पंज तत्त ना कोई लड़ाईआ। दर्शन दे साख्यात, घर घर विच्च नज़री आईआ। सुरती शब्दी जोड़ नात, नाता आपणे नाल रखाईआ। अन्तर आत्म पूरी होवे ख़ाहिश, आपणा रंग रंगाईआ। बिरथा जाए कोई ना सांस, साह साह तोहे ध्याईआ। रूह बुत्त पतित पुनीत दोवें करने पाक, पतित रहण कोई ना पाईआ। अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर एथ्थे ओथ्थे दो जहानां देणा सगला साथ, धुर दे मालक ख़ालक बण प्रितपालक आपणी सेव कमाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दी इक्को ज़ात, पारब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म पारब्रह्म विच्च समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां इक्को देणी दात, वस्त अमोलक काया गोलक नाम भण्डारा बण वरतारा झोली पाईआ। (१६ मध्घर २०२१ बि हरचन्द सिँघ दे गृह)

✵ ✵ ✵ ✵ ✵

जन भगत कहे प्रभ खोल्ह पड़दा, बेऐब नजरी आईआ। दर्शन करां तेरे सच्चे घर दा, जिथ्थे जलवा नूर इक्क रुशनाईआ। दर दरवेश बणा बरदा, बन्दीखाना रहे ना राईआ। जल वेखां साचे सर दा, अमृत इक्को नज़री आईआ। झगड़ा रहे ना भय डर दा, भवजल विच्च ना कोई भवाईआ। मंज़ल जावां आपणी चढ़्दा, राह विच्च ना कोई अटकाईआ। दर्शन करां नरायण नर दा, नर निरँकार सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

जन भगत कहे प्रभ तेरी आस, तृष्ना जगत ना कोई जणाईआ। तेरे प्रेम दी सच प्यास, बिलप करे कुरलाईआ। सद वसां तेरे पास, होवे ना कदे जुदाईआ। निझ घर कर वास, निवास अस्थान दे समझाईआ। जोती जोत कर प्रकाश, प्रकाशवान तेरी बेपरवाहीआ। झगड़ा मुक्क जाए धरती आकाश, गगन पताल दी लोड़ रहे ना राईआ। परम पुरख परमात्म आत्म तेरी जात, क्यों नाता बैठा तुड़ाईआ। तेरा लेखा सदा बाहर कलम दवात, अक्खर सके ना कोई समझाईआ। कलिजुग वेख अन्धेरी रात, चार कुण्ट अन्धेरा छाईआ। झगड़ा पिआ जात पात, दीन मज़हब करे लड़ाईआ। साचा मिले ना कोई अहिबाब, मुहब्बत विच्च ना कोई समाईआ। निरगुण वजाए ना कोई रबाब, हक़ आवाज ना कोई शनवाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों करे ना कोई आज़ाद, बंधन बन्दीखाना ना कोई तुड़ाईआ। दीन दुनी हुंदी वेखी बरबाद, उजड़िआ घर ना कोई वसाईआ। राए धर्म दए अज़ाब, जूनी जून विच्च रखाईआ। बिन अक्खरां वाली दस्स दे आपणी अगम्मी किताब, जिस दी लुगात वंड ना कोई वंडाईआ।

तूं शहनशाह पातशाह नवाब, नौबत इक्को दे सुणाईआ। मेरा सजदा तैनूं आदाब, नमस्ते कह के सीस झुकाईआ। महल्ल अट्टल वखा महिराब, महिबूब इक्को नज़री आईआ। लहणा देणा देदे हो के दस्तयाब, दरे दरबार मंग मंगाईआ। तेरी मंज़ल मिले सच खताब, ख़ता रहण कोई ना पाईआ। कलिजुग अन्त श्री भगवन्त सन्त सुहेले इक्को मंगण तेरी इमदाद, दूजी ओट ना कोई रखाईआ। सोई सुरती जाए जाग, आलस निंदरा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा मेला लैणा मिलाईआ।

जन भगत कहण प्रभ तेरे प्रेम दी वज्जे खिच, मन सुरती दे बदलाईआ। प्रगट हो जा काया विच, बाहर लभ्भण दी लोड़ रहे ना राईआ। बिनां अक्खां आवें दिस, निझ नेत्र कर रुशनाईआ। धन्न वड्डिआई गुरमुख प्रगटा आपणे सिख, गोबिन्द साचे हो सहाईआ। तूं मालक खालक प्रितपालक आदि जुगादि दो जहानां पित, पतिपरमेश्वर तेरी बेपरवाहीआ। तूं साहिब स्वामी इक्क, एकँकार तेरी इक्को वडयाईआ। करवट दे बदल लै पिट्ठ, सन्मुख हो के सोभा पाईआ। साची धार दा दे के हित्त, नित्त नवित्त आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साख्यात पड़दा दे उठाईआ।

जन भगत कहण क्यों लुक्यों उहले, प्रभ तेरी बेपरवाहीआ। असां तक्कणां तैनूं काया चोले, साढे तिन्न हत्थ तेरी वज्जे इक्क वधाईआ। तेरे प्रेम दे गौंणे ढोले, सोहला सच सच सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर अग्गे बणदे रहे विचोले, अग्गे तेरी ओट रखाईआ। जिहड़ा इक्को कंडा सच तराज़ू तोले, धड़ी वट्टा हत्थ ना कोई रखाईआ। आत्म परमात्म हो के मौले, मौला आपणी कार कमाईआ। लक्ख चुरासी आवण जावण जन्म मरन दे चुकण रौले, मात गरभ ना कोई फिराईआ। सच स्वामी अन्तरजामी अन्तर आत्म हो के बोले, अनबोलत राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा मेला लैणा मिलाईआ।

जन भगत कहे प्रभ तेरी वेखी बेदरदी, दर्दवंद रहे कुरलाईआ। आत्म बणा लै आपणी बरदी, बन्दीखाने विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। साची मंज़ल जावे चढ़दी, राह विच्च ना कोई अटकाईआ । नित दर्शन रहे करदी, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। मालक बणे तेरे घर दी, दूजा दर ना कोई फिराईआ। विछोड़े अंदर रहे ना सड़दी, आदि अन्त दी कट्ट जुदाईआ। तेरा नाम रहे पढ़दी, तूंही तूंही राग अलाईआ। मुहब्बत प्यार अंदर रहे मरदी, मुरदे मुरीद गुफ्त शनीद मुशर्द तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रंग इक्को देणा रंगाईआ।

जन भगत कहे प्रभ मेरे ठाकर, ठोकर आपणी दे लगाईआ। तूं गहर गम्भीर डूंघा सागर, तेरी बेपरवाहीआ। गरीब निमाणयां कोझयां कमलयां जुग जन्म दिआं विछड़यां दे आदर, आदरश आपणा दे वखाईआ। तूं परवरदिगार सांझा यार धुर दा कादर, कुदरत दा मालक नज़री आईआ। सच दवारे करीं सच्चा आदल, अदल इन्साफ़ आपणे हत्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ

विष्नूं भगवान, तेरा तक्कीए जलवा नूर बातन, बैतल मुक्दस इक्को नज़री आईआ। (१५ फग्गण श सं १ जोरा सिँघ दे गृह)

⁕ ⁕ ⁕ ⁕ ⁕

जन भगत कहे प्रभू धन्न, धन्न धन्न तेरी बेपरवाहीआ। जिस वासना बदल के मनुआ मन, ममता कूड़ दित्ती गवाईआ। भाग लगा के काया माटी चंम, चम्म दृष्टी दित्ती बदलाईआ। घर चाढ़ के साचा चन्न, सति सति कीती रुशनाईआ। नेत्रहीण रिहा ना अन्न्हा, नैण इक्को दिता खुल्हाईआ। तेरा नाउँ सुण के जस सरवण कन्न, मिली माण वडयाईआ। लोकमात बेड़ा दित्ता बन्न्ह, गुण निधान हो के आपणे कंध उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा राह रिहा वखाईआ।

जन भगत कहे तूं प्रभू आदि जुगादी खोजी, जन भगतां लएं जगाईआ। किसे हत्थ ना आवें अभिआसी जोगी, जुगतीआं विच्च मरे लोकाईआ। गुरमुखां दे के आपणी सोझी, सोई सुरती लएं उठाईआ। आत्म रस रहे भोगी, जगत दुक्खड़ा ना कोई सताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साजण बण के धुर दा मौजी, मेला रिहा कराईआ।

जन भगत कहे मैं झलक निराली तक्की बांकी, निरवैर निराकार नज़री आईआ। मेरी अंदरों खुल्ह गई ताकी, भेव रिहा ना राईआ। प्रभ मिल्या अंदर दा साकी, जाम याला इक्क प्याईआ। मनुआ मन रिहा ना आकी, मनमत दित्ती गवाईआ। सुणया नाम अगम्मा अनादी, नाद धुंन रिहा वजाईआ। हंगता गढ़ होई बरबादी, गृह मन्दर दए वसाईआ। आत्म परमात्म होया विस्मादी, मेहर नज़र आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण हो के भगतां करे आप वैरागी, वैरागीआं हत्थ किसे ना आईआ। (१५ फग्गण श सं १ मेला सिँघ दे गृह)

⁕ ⁕ ⁕ ⁕ ⁕

जन भगत कहे प्रभ सुणा अगम्मी राग, रसना जिह्वा बत्ती दन्द पढ़न दी लोड़ रहे ना राईआ। सोई सुरती जाए जाग, आलस निंदरा मोह विकारा ममता रहे ना राईआ। मन वासना कूड़ रहे ना काग, हँस आपणा रूप दे समझाईआ। दुरमत मैल धो दाग़, पतित पुनीत दे बणाईआ। गृह मन्दर निर्मल जोत होए प्रकाश, अबिनाशी करते आपणी दया कमाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म वसीं सदा साथ, सगला संग बणाईआ। निरगुण तेरी सरगुण धार अंदर वेखीए रास, गोपी काहन दी लोड़ रहे ना राईआ। बिन अक्खां नज़री आवें साख्यात, नेत्र ज्ञान कर रुशनाईआ। चरन चरनोदक अमृत रस दे आबेहयात, हयाती विच्चों हयाती दे बदलाईआ। तन वज़ूद वजा अगम्मी रबाब, अहिबाब हो के ढोला दे सुणाईआ। कलिजुग अन्त श्री

भगवन्त इक्को तेरी मंगी इमदाद, नाते सारे दिते तुड़ाईआ। घट भीतर खोल्ह राज़, पड़दा उहला रहे ना राईआ। झगड़ा मिट जाए जगत निमाज़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर दवारा दे खुल्हाईआ।

जन भगत कहे प्रभू आपणा पूरा कर फ़र्ज़, फैसला हक़ दे सुणाईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमलयां दी सुण अर्ज़, ख़ाहिश तेरे अग्गे टिकाईआ। जोधा सूरबीर मरदाना बण मरद, मेहर नज़र इक्क टिकाईआ। पूरब जन्म दा करनी दे करते लाह कर्ज़, लेखा धुर दा फोल फुलाईआ। प्रेम प्यार प्रीती अंदर भगवन हो के वंड दर्द, दुखी मज़लूम रहे कुरलाईआ। शरअ छुरी चले कोई ना करद, कायनात कातल रहण कोई ना पाईआ। नाम निधान श्री भगवान बिन अक्खरां कर पढ़त, कलम शाही काग़ज़ लहणा दे मुकाईआ। निरगुण निरवैर निरँकार निराकार हो के वेख उप्पर धरत, धौल धवल खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहणा देणा चुक्का फ़रस, अर्शां दे मालक आपणा फेरा पाईआ।

जन भगत कहे परम पुरख परमात्म आत्म दे वस नेड़े, दूर नेड़ा रहण कोई ना पाईआ। दीन दुनी चुका दे झेड़े, झगड़ा अवर ना कोई रखाईआ। भाग लगा दे साढ़े तिन्न हत्थ काया माटी खेड़े, बन्द कवाड़ी खिड़की दे खुल्हाईआ। झगड़े चुक जाण तेरे मेरे, तूं मेरा मैं तेरा इक्को नूर नज़री आईआ। इक्को रंग रंगा संझ सवेरे, कलिजुग काली रैण जगत अन्धेरा दे मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा खोल्ह घर, गृह मन्दर कर रुशनाईआ।

जन भगत कहे प्रभ किरपा निधान, दयानिध तेरी सरनाईआ। बिन अक्खरां दे दे उह ज्ञान, जिस दी शास्त्र सिमरत वेद पुरान अञ्जील कुरान सिफ्त रहे सालाहीआ। धर्म वखा सचखण्ड निशान, शाह पातशाह शहनशाह तेरी इक्को नज़री आए शहनशाहीआ। चार कुण्ट दह दिशा डंका वज्जे दो जहान, नाउँ निरँकारा सच जैकारा करे शनवाईआ। कूड़ी क्रिया कलिजुग अन्त श्री भगवन्त मेट निशान, हराम नज़र कोई ना आईआ। परम पुरख परमात्म आत्म आपणी दस्स सच्ची पछाण, बजर कपाटी काया माटी पड़दा देणा उठाईआ। हर घट रविआ नज़री आ अगम्मे राम, जिस नूं आदि अन्त जुगा जुगन्त जन्मे कोई ना माईआ। मन मनुआ जगत विकारा रहे ना कोई शैतान, शैतानां दी शरअ दे गवाईआ। मानस मानुख मानव तेरे प्रेम अंदर बणन इन्सान, इन्सानीअत इक्को दे दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची बख्श इक्क परनाम, डण्डौत सजदा इक्को दे दरसाईआ।

जन भगत कहे प्रभ आपणा वेख कौल इकरार, पूरब लहणा रिहा जणाईआ। लिख के गए गुर अवतार, पैगम्बर संदेसयां विच्च सुणाईआ। कल कलकी आवे अन्त अवतार, निरगुण निरवैर दाता फेरा पाईआ। रूप रंग रेख तों वसे बाहर, पंज तत्त वंड ना कोई वंडाईआ।

बेख़बरां करे ख़बरदार, शब्द संदेशा नाम कलमा इक्को नग़मा करे शनवाईआ। मुकामे हक़ दा सांझा यार, जलवागर बेऐब वेस वटाईआ। सचखण्ड सुहाए महल्ल अटार, उच्च अगम्म अथाह आपणी दया कमाईआ। रहबर बणे संसार, चारे खाणी पावे सार, बाणी आपणा नाम ढोला गीत सुणाईआ। आत्म परमात्म देवे सच अधार, उदर अगन ना कोई तपाईआ। मंज़ल चढ़ के खोल्हे बन्द किवाड़, पौड़ी डण्डा ब्रह्मण्डां खण्डां उप्पर आपणा दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ।

जन भगत कहण प्रभ पूरी कर दे आस, आसा तृष्ना दे मिटाईआ। जन्म जन्म दी कर्म कर्म दी मेट प्यास, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। तूं दाता दानी साहिब सर्ब गुणतास, शाह पातशाह सच्चा शहनशाहीआ। तेरे अग्गे कीती इक्को इक्क अरदास, बेनन्ती हक़ हक़ सुणाईआ। चार कुण्ट दह दिशा दिवस रैण घड़ी पल वसीं पास, विछोड़ा नज़र कोई ना आईआ। सच किनारा पार करा दे घाट, घाटा रहण कोई ना पाईआ। जन्म जन्म दी अग्गे मुक्क जाए वाट, लक्ख चुरासी ना कोई भुआईआ। तूं इक्को दाता इक्को तेरा नाम सुग़ात, खाली भंडारे दे भराईआ। कलिजुग अन्त वेख अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोई चमकाईआ। गुरमुखां सन्त सुहेले सूफ़ी फ़कीरां जन भगतां अन्तर आत्म अन्तश्करन पुच्छ वात, निजानंद वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर दरवेश हो के अलख जगाईआ।

जन भगत कहण पुरख अकाल दीन दयाल क्यों फिरें लुकदा, आपणा पड़दा पाईआ। बिन तेरी किरपा किसे दा पैंडा नहीं मुक्कदा, चार जुग लक्ख चुरासी पन्ध ना कोई मुकाईआ। मेहरवान हो के नाता जोड़ शब्दी धार सुत दा, अबिनाशी अचुत तेरी इक्क सरनाईआ। कलिजुग वेला होवे सुहञ्जणा अगम्मी रुत्त दा, रुत्तड़ी आपणे नाल महकाईआ। भाग अनोखा करदे काया माटी बुत्त दा, पंज तत्त वज्जे वधाईआ। तेरा विछोड़ा सभ तों वड्डा दुख दा, पारब्रह्म झल्ले ना तेरी जुदाईआ। तेरी मंज़ल चढ़ हद्द तेरा भगत कदे ना रुकदा, रुकावट अग्गे रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को सहारा दस्स निर्मल जोत दा, जोती जोत होवे रुशनाईआ।

जन भगत कहे मैं तेरा तक्कणा नूर, नूर नुराना इक्को नज़री आईआ। मेहरवान महिबूब मुहब्बत विच्च कट्ट सर्ब कसूर, कसर अशारीए नाल उडाईआ। तूं दाता दानी सर्ब भरपूर, देवणहार इक्क अखवाईआ। पैंडा मुका दे नेड़े दूर, घर विच्च बैठा घर ही नज़री आईआ। तेरा मिलणा आत्म दा परमात्म सदा ज़रूर, ज़रूरत सभ दी पूर कराईआ। निवण सु अक्खर दस्स के सूझ गढ़ तोड़ ग़रूर, हंगता अंदरों दे कढ्ढाईआ। जिध्धर तक्का ओधर हाज़र हज़ूर, हर घट बैठा सोभा पाईआ। सच बेनन्ती परम पुरख परमात्म आत्म करनी मनज़ूर, मनसा अवर ना कोई रखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, किरपा निधान किरपन आपणे गले लगाईआ। (१६ फग्गण श सं १ तेजा सिँघ दे गृह)

✵ ✵ ✵ ✵ ✵

कबीर कहे जन भगतो सोहणा मिल गिआ मौका, वक्त आपे रिहा सुहाईआ। मेरे वांग किसे नूं भरना नहीं पिआ हौका, दुःख भुक्ख ना कोई सताईआ। मेहरवान हो के लै के आ गिआ धुर दी नौका, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहीआ। तुहाड्डा समां सुहावणा बणाया चाउ का, खुशीआं रंग वखाईआ। झगड़ा मुका के हउमे हउँ दा, हरिजन आपणे विच्च समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सरन इक्क दृढ़ाईआ।

कबीर कहे करनी पई नहीं कोई बन्दगी, बंधन दुनी दित्ते तुड़ाईआ। कट्टणी पई नहीं कोई मुशंदगी, मुशकल आपे हल कराईआ। किरपा नाल कढ्ढ के अंदरों गंदगी, मन वासना करे सफ़ाईआ। धार बख्श के आपणे अनन्द दी, अनन्द अंदरों इक्क प्रगटाईआ। खेल कर साहिब बख्शंद दी, बख्शिश रहमत आप कमाईआ। एह वस्त अमोलक अन्न दी, आदि अन्त कार कमाईआ । तुहाड्डी खुशी सदा धन्न धन्न दी, धन्न वज्जदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वासना मेट के मनुआ मन दी, ममता आपणे विच्च रखवाईआ। (२३ चेत श सं २ बीबी ध्यानो दे गृह)

* * * * *

जन भगत कहे प्रभ वेख कलिजुग अन्त अख़ीर, बिन अक्खां ध्यान लगाईआ। चार कुण्ट दह दिशा वरन बरन होया दिलगीर, सांतक सति ना कोई कराईआ। नाता छड्ड गए पैगम्बर गुर अवतार पीर, सगला संग ना कोई निभाईआ। दीन मज़हब जात पात ऊँच नीच राउ रंक शरअ कट्टे ना कोई जंजीर, इक्को रंग सूरे सरबंग साचे घर ना कोई रंगाईआ। अमृत आत्म साचा मिले किसे ना नीर, अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ सृष्टी दृष्टी भज्जी वाहो दाहीआ। हक़ हकीकत मंज़ल पैंडा लए कोई ना चीर, चार कुण्ट दह दिशा वेखण थाउँ थाईंआ। मेहरवान बेनज़ीर, नज़र आपणी इक्क उठाईआ। जन भगतां बदल दे तकदीर, तक्बर माण अंदरों बाहर कढ्ढाईआ। तेरी याद विच्च शाह सुल्तान होए फ़कीर, फ़िकरे ढोले तेरा नाम गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पड़दा उहला दे चुकाईआ।

जन भगत कहे प्रभ कलिजुग वेख कूड़ कुड़िआर, साचा धर्म ना कोई वखाईआ। झगढ़ा पिआ पुरख नार, पिता पूत करे लड़ाईआ। घर घर गृह गृह मन्दर मन्दर दिसे विभचार, सति सच ना कोई समझाईआ। दुखीआं सुणे ना कोई पुकार, भुक्खयां भुक्ख ना कोई गवाईआ। चार वरन हाहाकार, शत्तरी ब्राह्मण शूद्र वैश रहे कुरलाईआ। नव नौं चार दिसे अंधिआर, साचा चन्द ना कोई रुशनाईआ। किरपा कर आप निरँकार, निरगुण आपणा हुक्म सुणाईआ। सदी चौंधवी दिसे खुआर, खालस रूप ना कोई प्रगटाईआ। पीर पैगम्बर ईसा मूसा मुहम्मद नेत्र लोचण नैण रहे उठाल, चौदां लोक चौदां तबक वेखण थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म दे समझाईआ।

जन भगत कहण प्रभ कलिजुग वेख अन्त, चार कुण्ट रिहा कुरलाईआ। माया भुल्ले

भेखाधारी सन्त, सहिब सतिगुर तेरा भेव ना कोई खुल्हाईआ। बोध अगाधा शब्द अनादा दिसे कोई ना पंडत, शास्त्र सिमरत वेद पुरान अंजील कुरान पढ़ पढ़ रहे सुणाईआ। तेरे मिलण दी किसे अन्तर सति ना दिसे हिम्मत, हौसले सारे बैठे ढाहीआ। कलिजुग कूड़ी क्रिया घर घर कीती इल्लत, इल्म वाले आलम दिते भुलाईआ। दर दरवेश तेरे अग्गे जन भगत करदे मिन्नत, पुरख अकाल दीन दयाल निउँ निउँ सीस झुकाईआ। मनुआ मन जगत वासना करे कोई ना इल्लत, शब्द डोरी तन्द लैणा बंधाईआ। मानुख जन्म मनुष ना आवे ज़िल्लत, मानव देणी इक्क सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा धुर दा देणा वखाईआ।

जन भगत कहण प्रभू वेख आपणा कलिजुग कूड़ कुड़िआरा वक्त, वाकिआ वाकिआत देवे गवाहीआ। भरमे भुल्ला माया ममता जगत, जागरत जोत ना कोई रुशनाईआ। फिरे दरोही उत्ते फर्श , अर्श रिहा कुरलाईआ। गरीब निमाणयां कोझयां कमलयां उत्ते कर तरस, मेहर नज़र नज़र इक्क उठाईआ। अमृत मेघ अगम्मी बरस, बूंद स्वांती मुख चवाईआ। लोकमात मार झात खोल्ह ताक पुरख अबिनाशी निरगुण धार आइउँ परत, पति पतवन्ते तेरे हत्थ वड्डी वडयाईआ। गुर अवतारां पैगम्बरां नाल पूरी हो गई शर्त, शरीअत विच्चों शरअ दे बदलाईआ। तेरे हुक्में अंदर एथ्थे ओथ्थे दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर पए कोई ना फ़रक, रव सस सूर्या चन्द मण्डल मंडप सीस ना कोई उठाईआ। पिछला हुक्म मनसूख़ कर करदे तरक, तुरत आपणा हुक्म दे दृढ़ाईआ। जन भगतां नाल कर आत्म परमात्म हो के दर्द, दीनां अनाथां दीन दुनी विच्चों लैणा मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे मनज़ूर कर अर्ज़, अर्ज खाहश गुरमुख रहे जणाईआ।

जन भगत कहण प्रभ इक्क वारां वेख चुक्क के पड़दा, लोकमात ध्यान लगाईआ। तेरा नाम कोई ना पढ़दा, सिफ्ती ढोले सारे गाईआ। हक़ मंज़ल कोई ना चढ़दा, अद्धवाटे दिसी लोकाईआ। तेरा दरस कोई ना करदा, मन्दर मस्जिद शिवदवाले मट्ठ रहे कुरलाईआ। तेरा प्रेम प्यार मुहब्बत विच्च कोई ना वरदा, वारता सारे रहे सुणाईआ। पड़दा खोल्लया ना किसे आपणे घर दा, साढे तिन्न हत्थ वज्जी ना कोई वधाईआ। निरँकार तेरा नाम अक्खर कोई ना पढ़दा, जगत विद्या पढ़ पढ़ ढोले रहे सुणाईआ। बिरहों वैराग विछोड़े अंदर कोई ना मरदा, मर जीवत रूप बदलाईआ। तूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित्त नवित्त आपणा खेल करदा, करनी दा करता इक्क अखवाईआ। जन भगत सुहेला तेरा दीदार, दीद नाल इक्क मंगदा, दरे दवार होणा सहाईआ। पड़दा लाह दे हँ ब्रह्म दा, पारब्रह्म बेपरवाह बेपरवाही विच्च समाईआ। लहणा देणा मुक्क जाए काया माटी चम्म दा, आवण जावण पतित पावन रहे ना राईआ। तूं साहिब सुहेला सदा सदा जन भगतां बेड़ा बन्ह्दा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आपणे कंध उठाईआ। कलिजुग अन्त श्री भगवन्त वक्त सुहञ्जणा कर तेरा ढोला गाईए धन्न धन्न धन्न दा, धर्म दवार एकँकार किरपा धार विच्च संसार इक्को दे बणाईआ। (२४ चेत श सं २ बूड़ सिँघ दे गृह)

✵ ✵ ✵ ✵ ✵

जन भगत कहे प्रभ वेख कलिजुग कूड़ कुड़िआर, चार वरन अठारां बरन धुर दा मीत नज़र कोई ना आईआ। नौं खण्ड पृथमी सत्त दीप हाहाकार, चार कुण्ट दहि दिशां दए दुहाईआ। मन वासना सृष्टी दृष्टी गई हार, धुर दा इष्ट एकँकार ना कोई मनाईआ। जूठ झूठ माया ममता हउमे गढ़ बणया हँकार, सति सच हिरदे हरि ना कोई वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरवैर हो सहाईआ।

जन भगत कहे प्रभ वेख आपणा लोकमात, कलिजुग अन्त ध्यान लगाईआ। सदी चौधवीं दिसे अन्धेरी रात, निरगुण नूर साचा चन्द ना कोई चमकाईआ। आत्म परमात्म मिल के करे कोई ना बात, जगत विद्या पढ़ पढ़ मन ममता होई हलकाईआ। निझ मन्दर काया अंदर अगम्मी सुणे कोई ना गाथ, अनहद नादी धुन ना कोई शनवाईआ। झगड़ा पिआ जात पात, आत्म ब्रह्म पारब्रह्म भेव ना कोई खुल्हाईआ। वस्त अमोलक सच पदार्थ तेर नाम देवे कोई ना दात, माया ममता मोह होई हलकाईआ। साची मंज़ल चढ़े कोई ना घाट, अद्धवाटे बैठी सर्ब लोकाईआ। दुरमत मैल सके कोई काट, अठ्ठ सॅठ तीर्थ पत पुनीत ना कोई बणाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुरान अंजील कुरान खाणी बाणी धुर दा संग ना बणया कमलापात, पतिपरमेश्वर बेपरवाह तेरी सिफ्त सालाह सारे रहे गाईआ। गुर अवतार पैगम्बर शब्द संदेशा भविख्तां विच्च जो गए आख, नाम निधान श्री भगवान मेहरवान मेहर झोली ना कोई भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तम वेख ख़लक खुदाईआ।

जन भगत कहण प्रभ वेख लोकमात आपणा जगत, जागरत जोत ना कोई रुशनाईआ। निरगुण निरवैर निरँकार तेरा करे कोई ना दरस, दृष्ट इष्ट विच्च तेरा ध्यान ना कोई लगाईआ। कूड़ी क्रिया हउमे लग्गी हिरस, हवस सके ना कोई मिटाईआ। कोटां विच्चों सन्त सुहेले थोड़े रहे तरस, जो दिवस रैण अठ्ठे पहर बिन नेत्र निझ नैण तेरा राह तकाईआ। साहिब स्वामी अन्तरजामी पुरख बिधाते कर तरस, महिबूब मुहब्बत विच्च आपणा फेरा पाईआ। लहणा देणा चुका उप्पर फर्श, अर्शी प्रीतम आसा भगतां पूर कराईआ। दीन दुखीआं वंड दर्द, ग़रीब निमाणे कोझे कमले आपणी गोद उठाईआ। सच बेनन्ती सुण अर्ज़, डण्डौत बन्दना नमस्ते कहि के सीस झुकाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी भगत उधारना तेरा फर्ज़, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग तेरा राह तकाईआ। कलिजुग कूड़ी क्रिया वेख अन्धेरा गर्द, सति सच बैठा मुख छुपाईआ। शरअ छुरी मारी जाए सभ नूं करद, हक हकीकत समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण हो के वेख दर, गृह मन्दर पड़दा आप उठाईआ।

जन भगत कहण प्रभ कलिजुग अन्तम वेख मार झाकी, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी तेरी ओट तकाईआ। परवरदिगार सांझे यार मुकामे हक़ खोल्ह ताकी, तख़त निवासी शाहो शाबाशी आपणी दया कमाईआ। कलिजुग अन्त श्री भगवन्त धुर दे कन्त भगतां बण साथी, सन्त सुहेले सूफ़ी फ़कीर बैठे राह तकाईआ। निझ आत्म काया मन्दर अंदर निरगुण

जोत कर प्रकाशी, अन्ध अन्धेरा संझ सवेरा इक्को रंग रंगाईआ। मन चिंदिआ रहे ना कोई उदासी, संसा रोग ना कोई सताईआ। लक्खं चुरासी कॅट जा फासी, आवण जावण पत्तत्त पावण अगला गेड़ कटाईआ। नित्त नवित्त निरगुण सरगुण जन भगतां मन्नदा रहें आखी, अक्खर आपणा दे पढ़ाईआ। तूं साहिब स्वामी अन्तरजामी पुरख बिधाता कमलापाती, पतिपरमेशवर बेपरवाह बेनज़ीर नज़र आपणी लै बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाईआ।

जन भगत कहण प्रभ वेख कलिजुग अन्तम वेला, वेला वक्त दए गवाहीआ। साचा दिसे ना कोई गुरू गुर चेला, चेला गुर इक्क रंग ना कोई समाईआ। दरगाह साची बणे ना कोई सज्जण सुहेला, सचखण्ड दवारे सहजे सहज ना कोई पुचाईआ। शब्दी धार करे कोई ना मेला, आत्म परमात्म जोड़ ना कोई जुड़ाईआ। तूं समरथ महिंमा अकथ्थ जन भगतां मिलदा रिहा अकेला, एकँकार निहकरमी आपणा कर्म कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान हो के वेख वखाईआ।

जन भगत कहण प्रभ लोकमात आ, धरनी धरत धवल रही कुरलाईआ। अन्तर आत्म परमात्म हो के बण मलाह, नईआ नौका नाम इक्क चलाईआ। सच दवार दी देणी हक़ सलाह, लाशरीक शरकत अंदरों देणी कढ्ढाईआ। मेहरवान महिबूब कोटन कोट बख्श गुनाह, गहर गम्भीर आपणा रंग चढ़ाईआ। तेरे दवारे दरवेश हो के इक्क अलख रहे जगा, जागरत जोत कर रुशनाईआ। बिन दीवे बाती कमलेपाती होवे रुशना, दिवस रैण इक्को रंग समाईआ। अमृत आत्म निझर झिरना बूंद स्वांती दे चवा, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। निझ नेत्र लोचन नैण दरस दीद ईद दरसा, पड़दा उहला दे उठाईआ। रहमत कर परवरदिगार ऐ खुदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

जन भगत कहण प्रभ कलिजुग कूड़ी क्रिया वेख जहालत, चार कुण्ट सच सुच्च नज़र कोई ना आईआ। धुरदरगाही बेपरवाही हकीकत विच्च करे ना कोई हक़ अदालत, जूठ झूठ चार वरन अठारां बरन करी कुड़माईआ। सच सरूप दिसे ना कोई सही सलामत, काम क्रोध लोभ मोह हँकार घर घर होई हलकाईआ। कलिजुग अन्त अख़ीर सच दवारे देवे ना कोई ज़मानत, गुर अवतार पैगम्बर पलू गए छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त सुहेले गुरमुख वर, दूर दुराडे नेरन नेरा फेरा पाईआ।

जन भगत कहण प्रभ काया मन्दर चढ़ जा उप्पर चोटी, चोट शब्द नगारे दे लगाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोती, अन्ध अन्धेर दे मिटाईआ। मन वासना रहे ना खोटी, कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म तूं आदि जुगादी गोती, दूजा नज़र कोई ना आईआ। नाम इशारे सुरत उठा सोती, आलस निंदरा दे गवाईआ। गल लगा कमली कोझी, मेहर नज़र नाल पार कराईआ। बिन तेरी किरपा श्री भगवन्त किसे ना आवे सोझी, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। जगत वासना सारे होए रोगी, हँ ब्रह्म पड़दा ना कोई उठाईआ।

विछोड़े विच्च बण विजोगी, धुर संजोगी मेल ना कोई कराईआ। तेरी धार निरगुण सरगुण वेदी सोढ्ढी, सो पुरख निरञ्जण लेखा लहणा देणा देणा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पड़दा लाह लोक परलोकी, सलोक इक्को दे जणाईआ।

जन भगत कहण प्रभ दस्स अगम्मा सलोक, निरअक्खर विच्चों अक्खर दे समझाईआ। जिस दे नाल आत्म परमात्म मिले मौज, मजलस तेरे विच्च समाईआ। सच दवारे कर खोज, पड़दिआं विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। निरगुण धार तेरा दर्शन होवे रोज़, जोती जोत जोत रुशनाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुरान अंज़ील कुरान खाणी बाणी करना पए कोई ना बोध, सिमरन पूजा जोग अभिआस तत्त साधन दी लोड़ रहे ना राईआ। मन मत बुद्धि दी रहे कोई ना सोच, अनभव पड़दा दे उठाईआ। बिन अक्खां पैंडा मुक्क जाए चौदां लोक, ज़िमीं असमानां पड़े आपणा डेरा देणा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तम वेख हरि, भगत सुहेले मंगण वर, दीन दयाल दयावान जोती जाते पुरख बिधाते वस्त अनमोल गुरमुखां झोली देणी पाईआ। (२५ चेत श सं २ देवराज दे गृह)

✵ ✵ ✵ ✵ ✵

जन भगत कहे मैं गिआ जाग, पुरख अबिनाशी घट घट वासी दया कमाईआ। मेरे अन्तर उपजिआ इक्क वैराग, वैरी दुशमण अंदरों दित्ते कढ्ढाईआ। बिन नग़मे सुणी आवाज़, बिन गीत संगीत वज्जे वधाईआ। बिन तेल बाती होए प्रकाश, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर वसे पास, सदा सुहेला शहनशाहीआ। काया मन्दर अंदर पावे धुर दी रास, सुरती शब्दी गोपी काहन रूप वटाईआ। साढ्ढे तिन्न हत्थ कट्टदा फिरे बनबास, सीता सुरती राम राम दुहाईआ। पूरब जन्म करौंदा फिरे याद, लेखा लहणा लहणे विच्चों प्रगटाईआ। धुर दा खेड़ा कर आबाद, गुलशन इक्को इक्क महकाईआ। जिथ्थे दिसे कोई ना दाग़, पतित पुनीत रिहा बणाईआ। गुरमुख हँस बणा के काग, कागों हँस रिहा उडाईआ। मेल मिला के कन्त सुहाग, विछोड़ा जगत रिहा कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा सच घर, जिस घर वज्जदी रहे वधाईआ।

जन भगत तक्क इक्क महिबूब, जो मुहब्बत विच्च समाईआ। अर्श कुर्श तों उच्चा जिस दा अरूज, आलीशान बैठा डेरा लाईआ। जिस दी हक़ मंज़ल मकसूद, हक़ मुकाम डेरा लाईआ। जिस दीआं सिफ्तां करे हज़ारा दरूद, अलफ़ ये नाल वडयाईआ। जिस दी कोई समझ ना सके हदूद, आर पार ना कोई समझाईआ। जगत तत्त ना कोई वजूद, वसल सभ नूं पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

जन भगत बिन अक्खां वेख श्री भगवान, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। जिस दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी सभ तों वक्खरा ज्ञान, निरवैर निराकार निरँकार आपणी सूझ

दए समझाईआ। नित्त नवित्त निरगुण सरगुण खेले खेल जहान, जुग चौकड़ी हुक्मे हुक्म आप सुणाईआ। लक्ख चुरासी जीव जंत साध सन्त काया मन्दर अंदर वेखे आण, पड़दा उहला माटी चोला रहण कोई ना पाईआ। जोधा सूरबीर बली बलवान, बलधारी आपणी खेल दए वखाईआ। सतिजुग त्रेता दुआपर कलिजुग करदा आया कल्याण, कायनात दीन दुनी वेखे चाईं चाईंआ। कलिजुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण रूप हो प्रधान, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर आपणा हुक्म सुणाईआ। नाम पदार्थ वस्त अमोलक काया गोलक देवणहारा दान, बिन हत्थां जन भगतां झोली दए भराईआ। सृष्टी दा मालक दृष्टी दा ख़ालक इष्टी दा प्रितपालक विशेष नरेश हमेश, हरिजन हमसाजण लए बणाईआ। जिस दे अग्गे आदि जुगादि एथ्थे ओथ्थे दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल चले कोई ना पेश, पेशवा पेशतर संदेशे गए सुणाईआ। जो साहिब स्वामी अन्तरजामी सदा सुहेला रहे हमेश, सचखण्ड दवार एकँकार इक्क इकल्ला सच महल्ला आप वसाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सजदयां विच्च बणे दरवेश, विष्न ब्रह्मा शिव नमो कह के सीस निवाईआ। जो पुरख अकाला दीन दयाला सुहावणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाला कलिजुग अन्त सुनेहड़ा देवे इक्क संदेश, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी धुर दी धार आप दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घट भीतर गृह मन्दर हर घट लए वेख, पेखत पेख दया कमाईआ। (२५ चेत श सं २ देवराज दे गृह)

* * * * *

जन भगत कहण प्रभ वेख कल अन्धेरी राती, अन्तर आत्म पारब्रह्म ब्रह्म ज्ञान ना कोई दृढ़ाईआ। सन्त सुहेले कहण पुरख अकाल अमृत मिले ना बूंद स्वांती, चार कुण्ट दहि दिशा ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल तृष्ना भुक्ख ना कोई मिटाईआ। गुरमुख कहण दीन दयाल साची देवे वस्त कोई ना दाती, चार वरन अठारां बरन वस्त अमोलक काया गोलक हक़ हकीकत झोली कोई ना पाईआ। गुरमुख कहण साचा जुड़े ना कोई नाती, धरनी धरत धवल साची धारा कोई ना रिहा मवल, पत्त टैहणी फुल्ल फुलवाड़ी ना कोई महकाईआ। अबिनाशी करते तुध बिन दूजा दिसे ना कोई साथी, गुर अवतार पैगम्बर आपणा लहणा गए चुकाईआ। नव नौं चार लहणा रहे कोई ना बाकी, परवरदिगार सांझे यार शाह पातशाह शहनशाह तेरा मेल ना कोई मिलाईआ। मनूआं मन विकारी होया आकी, ममता मोह हँकार ना कोई गवाईआ। साचा जाम प्याए कोई ना बण के साकी, मधर प्याले पीवे ख़लक खुदाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल जीवण विच्चों जीवण बदले ना कोई हयाती, काया मन्दर अंदर तेरा रूप सति सरूप सति सतिवादी दरस ना कोई कराईआ। कोटां अरबां वधदी दिसे आबादी, साचा मीत मित्र प्यारा बिन रसना जिह्वा गावणहारा गीत नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तम वेख लोकमात आपणा दर, धुर दरबारी आपणा फेरा पाईआ।

जन भगत कहण प्रभ वेख कलिजुग अन्धेरी रैण, साचा चन्द जलवा नूर ना कोई रुशनाईआ। तेरा दरस करे ना कोई निझ लोचण नैण, आत्म परमात्म मिल के खुशी ना कोई मनाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुरान अंजील कुरान खाणी बाणी ढोले सारे कहण, गा गा थक्की जगत लोकाईआ। चार कुण्ट दह दिशा अठसठ्ठ तीर्थ भज्ज भज्ज नहाइण, दुरमत मैल अन्तर भीतर बाहर ना कोई कढ्ढाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म मिल्या ना साक सज्जण सैण, मात पित भाई भैण नार पत कोटन कोट सज्जण जगत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तम वेख दर, दर दरवाज़ा ग़रीब निवाजा मेहर नज़र इक्क खुल्हाईआ।

जन भगत कहण प्रभ वेख कलिजुग वेला अन्त अख़ीर, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। शरअ कट्टे ना कोई जंजीर, लाशरीक तेरा नूर ना कोई रुशनाईआ। झगड़ा पिआ ग़रीब अमीर, नास्तिक रूप बणी लोकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जो दीन मज़हब दे के गए तरतीब, हुक्म हुक्मे अंदर सुणाईआ। सो खेल निराला हरि निरँकारा वेख अज़ब अज़ीब, जिस दी चौदां विद्या सार कोई ना पाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी पुरख बिधाते तेरे नाम दी देवे कोई ना भीख, गुरदवार मन्दर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ नेत्र रोवण मारन धाहींआ। भविख्तां विच्च लिखतां विच्च तेरी रक्खदे गए सर्ब उडीक, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। परवरदिगार सांझे यार कलिजुग अन्तम बदल दे तवारीख, जूठ झूठ कूड़ कुड़िआर डेरा ढाहीआ। चार वरन अठारां बरन आत्म परमात्म साची दस्स इक्क प्रीत, प्रीतम हो के अंदरों पड़दा दे उठाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला साचा दस्स गीत, जो गुर अवतार पैगम्बर भगत भगवान मिल के आदि जुगादि जुग चौकड़ी मिल मिल सदा गाईआ। लक्ख चुरासी जीव जंत साध सन्त बदल दे अंदरों नीत, काया काअबे अंदर कर रुशनाईआ। साहिब स्वामी अन्तरजामी नज़री आ इक्क अतीत, त्रैगुण लेखा दे मुकाईआ। सदी चौधवीं रही बीत, वातावरन वेख आपणी जगत लोकाईआ। निरगुण हो के सरगुण कर तस्दीक, शहादत इक्को वार भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सृष्टी दृष्टी वेख घर, निरगुण हो के वेस वटाईआ।

जन भगत कहण प्रभ आ जल्दी, लोकमात फेरा पाईआ। चारों कुण्ट कूड़ी क्रिया अग्ग बलदी, अमृत मेघ ना कोई बरसाईआ। कल वरती कलिजुग कल दी, कालख मस्तक टिक्के लग्गे शाहीआ। किसे सार ना जल थल दी, महीअल खोज ना कोई खुजाईआ। दीपक जोत कोई ना बलदी, शमां गुल होई लोकाईआ। किसे नूं ख़बर नहीं घड़ी पल दी, भेव अभेदा अछल अछेदा तेरा पड़दा ना कोई उठाईआ। आत्म परमात्म विच्च मूल ना रलदी, रसना जेहवा ढोले गा गा खुशी मनाईआ। लहर मुक्के ना अंदरों दूई द्वैती सल दी, तन्द सतार अन्तर आत्म ना कोई हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तम वेख घर, गृह मन्दर फोल फुलाईआ।

जन भगत कहण प्रभ दीन दुनी दी वेख आदत, अदली हो के फेरा पाईआ। साची

करे ना कोई इबादत, हिरदे हरि ना कोई वसाईआ। मनूआं घर घर करे बग़ावत, पंज तत्त करन लड़ाईआ। ममता मोह ना मिटे अलामत, हउमे रोग रिहा सताईआ । गुर अवतार पैगम्बर देवे ना कोई ज़मानत, बरीख़ाना ना कोई वखाईआ। चार वरन अठारां बरन जगत वासना होई जहालत, ज़ाहर ज़हूर तेरा दरस कोई ना पाईआ। दीनां मज़हबां दिसे अदावत, हक़ इन्साफ़ ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी जीव जंत तन माटी ख़ाकी वेख बनावट, घट भीतर खोज खुजाईआ।

जन भगत कहण प्रभ वेख आपणी दुनियां दुनियां दे दुनीदार, काअबिआं विच्च जगत लोकाईआ। जूठ झूठ वधिआ हँकार, हउमे हंगता गढ़ ना कोई तुड़ाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुरान पढ़ पढ़ गए हार, आत्म ब्रह्म बोध ना कोई वखाईआ। तेरा शब्द करे ना कोई प्यार, धुन आत्मक अनादी नाद ना कोई शनवाईआ। अमृत जल निझर झिरना कोई ना पीवे ठंडा ठार, अठ्ठ सठ तीर्थ सृष्टी दृष्टी होई हलकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बेख़बर कर ख़बरदार, शब्द संदेशा नर नरेशा एकँकार इक्क सुणाईआ।

जन भगत कहण प्रभ साचे भगवन्त, भगवन तेरी ओट रखाईआ। तूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी धुर दा कन्त, कन्त कन्तूहल तेरे हत्थ वडयाईआ। नाम संदेशा इक्को दे धुर दा मंत, जिस नूं गुर अवतार पैगम्बर पढ़ के खुशी मनाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरी गाथा कहण अनन्त, ढोले गीत संगीत बिन रागाँ राग सुणाईआ। तूं बोध अगाधा शब्द अनादा दो जहानां सच्चा पंडत, पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर दूजी करें ना कोई पढ़ाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा सन्त सुहेले गुर अवतार पैगम्बर बणा अगम्मी संगत, जिस दे संग रहि के आपणा रंग चढ़ाईआ। जन भगत किसे दवारे ना जाए मंगत, खाली झोली ना कोई वखाईआ। दूजे दर ना कढ्ढे मिन्नत, सीस अवर ना कोई झुकाईआ। मनुआ मन ना करे इल्लत, वासना जगत ना कोई हलकाईआ। सिंद्धी दस्स दे आपणी सिम्मत, सिमरन पूजा जोग अभिआस दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तम हो सहाईआ।

जन भगत कहण प्रभ दे दे उह जाप, जिस नूं रसना नाल पढ़न दी लोड़ रहे ना राईआ। अंदर वड़ के मन्दर चढ़ के खोल्ह दे ताक, पड़दा उहला दे उठाईआ। निरगुण निरवैर जोत सरूप नजरीं आवीं साख्यात, स्वच्छ सरूपी रूप आपणा दरसाईआ। आत्म परमात्म हो के वसीं साथ, सगला संग आप बणाईआ। रूह बुत दोवें कर दे पाक, ख़ाकी ख़ाक मिले वडयाईआ। कलिजुग अन्धेरी रहण ना पाए रात, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। झगड़ा मुक्क जाए जात पात, वरन गोत वंड ना कोई वंडाईआ। साची दस्स दे प्रीती चरन नात, चरन कँवल इक्क सरनाईआ। तूं आदि जुगादी शाहो शाबाश, पुरख अबिनाशी अबिनाशी करते तेरे हत्थ वडयाईआ। भगत सुहेले कर दासी दास, सेवक सेवा सच समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कल काती वेख वखाईआ।

जन भगत कहण प्रभू वेख आपणा परदेस, जो लोकमात दिता बणाईआ। जिथ्थे आवें नित्त नवित्त कर अवल्लड़ा वेस, पंज तत्त काया माटी चोला तन हंढाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग देंदा रिहों संदेश, निरअक्खर अक्खर विच्च बदलाईआ। कलम शाही कागज़ लिखौंदा रिहों लेख, कातब हो के कर्म कमाईआ। जन भगतां अंदर वड़ के दसदा रिहों भेत, पड़दा उहला आप उठाईआ। नज़री औंदा रिहों नेत नेत, निझ नेत्र कर रुशनाईआ। कलिजुग अन्त स्वामी आत्म परमात्म कर हेत, हितकारी हो के वेख वखाईआ। अन्त सुहञ्जणा सुहावणा कर महीना चेत, चेतन्न सुरती भगत कराईआ। सभ कुछ तेरे अग्गे अरपन कीता भेट, आत्म परमात्म तेरी झोली पाईआ। तूं एथ्थे ओथ्थे दो जहानां निरगुण सरगुण बण खेवट खेट, नईआ नौका आपणी इक्क चढ़ाईआ। धुर फ़रमाण श्री भगवान शब्द अगम्मी दे संदेश, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आप दृढ़ाईआ। गृह मन्दर तेरा तक्कीए महल्ल अट्टल उच्च मुनार एक, एकँकार जिस घर बैठा निरगुण जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कल अन्तम फेरा पाईआ।

जन भगत कहण प्रभ किरपा कर धुर मेहरवान, महिबूब तेरी इक्क सरनाईआ। बुद्धि तों परे़ दे ज्ञान, अक्खरां दी लोड़ रहे ना राईआ। धुर दा मन्दर वखा मकान, पौड़ी डण्डा ना कोई चढ़ाईआ। झगढ़ा चुक्के ज़िमीं असमान, ब्रह्मण्डां खण्डां चरनां हेठ दबाईआ। बिनां अक्खां तों प्रतक्ख नज़री आएं श्री भगवान, स्वच्छ आपणी कार कमाईआ। बिन तेरी किरपा लोकमात किसे ना होवे कल्याण, कलमयां वाले काअबे देण दुहाईआ। तूं परवरदिगार सांझा यार मालक हक़ मकान, साढ्ढे तिन्न हत्थ समरथ तेरी धार नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तम दे वर, वारता अगली दे समझाईआ।

जन भगत कहण प्रभ पिछला लेखा दे चुका, पूरब रहे ना राईआ। अगली मंज़ल दे चढ़ा, जिथ्थे वसें बेपरवाहीआ। इक्को नूर होवे रुशना, दीआ बाती ना कोई जगाईआ। इक्को सिँघासण रिहा सुहा, साहिब सुल्तान डेरा लाईआ। भगतां नाल मिल के भगवन आपणे विच्च समा, समापत होवे खेल जगत लोकाईआ। तूं दाता दानी दयावान बेपरवाह, बेपरवाही विच्च समाईआ। जलवागर नूर खुदा, मुकामे हक़ डेरा लाईआ। वाहद लाशरीक सच तौफीक हक रफीक चरन कँवल कदमे कदीम दे पनाह, सहारा इक्को इक्क तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी आत्म परमात्म होवे ना कदे जुदा, जुज़ अंग वक्खरी वंड ना कोई वंडाईआ। (२६ चेत श सं २ दर्शन सिँघ दे गृह)

✻ ✻ ✻ ✻ ✻

जन भगत कहे मैं प्रभ दा वेखणा चमन, दवारा सोहणा सोभा पाईआ। जिथ्थे आदि जुगादि सदा अमन, अगनी अग्ग ना कोई तपाईआ। पुरख अकाल इक्को सारे मन्नण, निउँ निउँ बिन सीस सीस झुकाईआ। जिस दी धार विच्चों गुर अवतार पैगम्बर लोकमात

जम्मण, जन्म लै के सरगुण रूप बदलाईआ। भय विच्च देवत सुर सारे कम्बण, सिर सके ना कोई उठाईआ। जिथों वड्डिआई मिली दुष्ट दमन, दामनगीर दामन लिआ फड़ाईआ। सन्त सुहेले सोहणे लभ्भण चन्नण, सुगंधी सोहणा आपणा रंग बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां बेड़ा आए बंनण, फड़ बाहों आप उठाईआ।

जन भगत कहण प्रभ दा वेखणा उह बाग़, जो निरगुण हो के रिहा लगाईआ। जिथे दीपक जगे इक्क चराग, बिन तेल बाती करे रुशनाईआ। बिनां तम्बुरी वज्जदे साज, बिन लोड़ां नाद, बिन पढ़यां खुल्हदा राज़, बिन सुणयां होए शनवाईआ। बिन कीत्यां हुंदा काज, कर्मी दा लेखा जाए चुकाईआ। बिन सेवा बणदा चाक, चाकर हो के फेरा पाईआ। लेखा चुकौंदा माटी ख़ाक, ख़ालस घर वखाईआ। नाम निधान दूजा वजा नाद, नादी सुत लए उठाईआ। दुरमत मैल धो दाग़, दरदी हो के दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दस्स के धुर दा इक्क समाज, समें दा गेड़ा दए भवाईआ।

जन भगत कहे मैं प्रभ दा वेखणा सच बग़ीचा, बाग़बान जिथे इक्को नज़री आईआ। कोई बूटा दिसे ना ऊँचा नीचा, इक्को रंग रिहा वखाईआ। अमृत धार नाल जिस ने प्रेम रस सींचा, सुच्च संजम रिहा समझाईआ। नाम भंडारा दे के किणका, किरन किरन करे रुशनाईआ। लहणा देणा देवे जिन का, जमां तों लए छुडाईआ। खेल करे आपणा छिन का, शहनशाह हो के वेख वखाईआ। जन भगतां मुहब्बत आपणे प्रेम पैमाने नाल मिणदा, मिणती गिणती होर ना किसे समझाईआ। निशाना दस्स के आपणे छन्द दा, चिन्ता कूड़ी दए चुकाईआ। झगड़ा मुका के जीओ पिण्ड दा, घर साचे दए बहाईआ। जिथे श्री भगवान नूं नहीं कोई निन्द दा, निन्दक नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खेल करे सदा बख़शिंद दा, बख़्शणहार फेरा पाईआ।

(१६ जेठ श सं २ इन्दरो देवी दे गृह)

* * * * *

जन भगत कहण प्रभू सहारे तक्के सच सतिगुर दे, सति सतिवादी हो के वेख वखाईआ। मेहरवान हो के जगत उधार ग़रीब गुरबे, दरदी हो के दरदीआं दर्द वंडाईआ। बिन तेरे प्रेम सारे होए मुरदे, मुद्दतां दे विछड़े बैठे ध्यान लगाईआ। बिन तेरे गृह दूजे घर मूल ना तुरदे, चार कुण्ट ना अक्ख बदलाईआ। राग दस्सदे आपणी सुर दे, सुत्यां लै जगाईआ। विछोड़े मेटदे पिछले अनन्दपुर दे, पुरीआं लोआं विच्चों लेखा बाहर कढ्ढाईआ। असीं मूर्ख हो के सारे रहे भुल्लदे, अभुल्ल तेरे हत्थ वडयाईआ। बिन तेरे दर तों रुलदे, कोझयां कमलयां गले ना कोई लगाईआ। तूं टुकड़े खा के चुल्ल्ह चुल्ह दे, राजे बल दा लेखा दे मुकाईआ। असीं भगत ओस कुल दे, जिथों भगवान नज़री आईआ। साड्डी सेवा दा सानूं मुल्ल दे, कीमत नाम वाली झोली पाईआ। बिन तेरी किरपा तेरे तोल कोई ना तुलदे, जगत तराज़ू

कम्म किसे ना आईआ। सानूं माण दे ओस कमल फुल दे, जो कँवल नैण आपणे विच्च छुपाईआ। टिक्के लाईए तेरी सच्ची धूल दे, धूड़ मस्तक ख़ाक रमाईआ। राह तक्कीए तेरे सच असूल दे, असल विच्च वसल दे वखाईआ। झगड़े मुक जाण गुर अवतार पैगम्बर रसूल दे, रस्ता इक्को दे दृढ़ाईआ। जिथ्थे भगत भगवान इक्क दूजे नूं कबूल दे, मिल के वज्जदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ रखाईआ।

जन भगत कहे प्रभ करीं रच्छा, रच्छक हो के वेख वखाईआ। बल बावन वाली इच्छा, सभ दी लेखे देणी लगाईआ। इस बन खण्ड अंदर तेरां सौ सतासी रिषी रहिंदा सी इक्ठा, इक्क मन हो के इक्को ध्यान लगाईआ। जिन्हां नूं बल ने भेजीआं गड्डां, गंढ्डां नाल बुलाईआ। सभ ने औणा नट्ठा, भज्जणा वाहो दाहीआ। असमेध यग इक्क रचा, रचना कीती बेपरवाहीआ। सन्त साध सद्दणा सच्चा, सच मिले वडयाईआ। ओसे वेले सभ ने कर के मता पक्का, इरादा लिआ बणाईआ। जिस वेले दिन आया अच्छा, भज्जे वाहो दाहीआ। बल दवारे खा खा सभ रज्जा, खुशी खुशी ढोले गाईआ । बावन बुड्ढा उठ के कोल आया पासे सज्जा, डंगोरा सहज दित्ता हलाईआ। रिषीओ मैनूं दस्सो केहड़ी वजह, जिस नाल प्रभ नूं मिल के शुकर मनाईआ। सभ ने खब्बा हत्थ मार के उप्पर ढिड्डां, होका दे के दित्ता जणाईआ। साड्डा मंगतिआं दा सड़ गिआ पिण्डा, प्रभ नूं खोजिआ थाउँ थाईंआ। अजे दरस नहीं किसे नूं दिन्दा, नज़र कोई ना पाईआ। बावन किहा आह मैं तुहानूं देवां नेंदा, सतिजुग दा त्रेता त्रेते दा द्वापर द्वापर दा कलिजुग कलिजुग दा अन्त खेल भगवन्त सहजे दिआं समझाईआ। मैं ओस वेले निरगुण धार हो के फिर होणा जीउँदा, जागरत जोत रूप वखाईआ। लहणा देणा चुकावां साचे नेंहु दा, निहकरमी हो के दिआं दृढ़ाईआ। तुहाड्ढे नाल फेर नाता जोड़ां पिता पिउ दा, पुरख अकाल वेस वटाईआ। जिस कन्या मेरे लई थाल परोसिआ खण्ड घिउ दा, चार भैणां पंजवां रल के छोटा वड्डा भाईआ। मैं ओस दा कीता धन्न धंनिआं, खुशी विच्च खुशी दिती बदलाईआ। जिस वेले लोकमात निरगुण चढ़या चन्नया, जोत नूर होवे रुशनाईआ। ओस वेले इक्क शब्द संदेशा तुहाड्ढे पावां कन्या, कन्नां विच्च जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा समझाईआ।

सारे रिखी कर के निमस्कार, इक्क दूजे वल बैठे ध्यान लगाईआ। बावन किहा तुहाड्ढे नहीं कुछ अख्त्यार, करन करावणहार इक्को नज़री आईआ। जिस दा खेल सदा जुग चार, विछड़यां लए मिलाईआ। तुसीं राजे बल दा खा के अहार, मन शात ना कोई कराईआ। क्यों तुहानूं मिल्या नहीं निरँकार, मन वज्जी ना सच वधाईआ। उह मेरे आह मेरे नाम दा लवो प्यार, तुहाड्ढे हत्थ देवां फड़ाईआ। कलिजुग अन्त तुहाड्ढे विच्चों लवां निकाल, एह मेरे हत्थ वडयाईआ। मैं लेखे लौणा ओस कन्या दा थाल, जिस दे पिच्छे घर घर जा के गुरमुखां दे भोग लगाईआ। सभ दा पूरा करां सवाल, लेखा सभ दा दिआं चुकाईआ। ओस दा काज रचणा विच्च जहान जहान जहान, जुग ओस नूं सके ना कोई परनाईआ।

कुछ थोड़ा लेखा रक्खणा गोबिन्द नाल, पड़दा पड़दिआं विच्चों टिकाईआ। अग्गों रिषी चरनां वल कर ध्यान, सारे नीर वहाईआ। सानूं सच दस्स मेहरवान, किस बिध एथे इक्ठे लएं कराईआ। बावन किहा एह मेरा खेल कमाल, जुग जुग मेरा भेव कोई ना पाईआ। दूर दुराडे मेलां आण, डेरा जंगलां विच्च लगाईआ। फेर आपणे निउँदे दा तुहानूं सनेहा देवां आण, रिषीआं दा रिषी चेला सिँघ नाल मिलाईआ। तुहानूं खवावां उह पकवान, जिस दे नाल मिले भगवान, सेवा करे जगत महान, बच्चे बणा के गोद उठाईआ। घर औंदिआं नूं मुड़ के दे के जीवन जिंदगी दा दान, तुहाडु अगला लेखा कर परवान, परवाने घर घर दिआं पुचाईआ। जन भगतो तुसीं खुशीआं नाल खायो आण, तेरां सौ सतासीआं विच्चों जिन्हां नूं मिल्या माण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरब लेखे कारन सभ नूं आया उठाण, इकठ्ठयां कर के इक्ठा हुक्म जणाईआ। (१६ जेठ श सं २ कुलवन्त सिँघ पिण्ड धींगा वाली)

* * * * *

जन भगत कहण प्रभ तेरे दर दीआं गोलीआं, गोलक काया नाम देणी भराईआ। सानूं जगत जहान मारे बोलीआं, अनबोलत देणी माण वडयाईआ। तेरा नाम निधाना सुणीए अगम्मा ढोलीआं, ढोला आपणा देणा सुणाईआ। प्रेम प्रीती अंदर खेलीए होलीआं, लाल गुलाला रंग चढ़ाईआ। सति सच नाल रंग दे चोलीआं, चोजी प्रीतम होणा सहाईआ। तेरे चरन कँवल आत्मा घोल घोलीआं, घोली घोल घुंमाईआ। मनुआ मन पाए ना रौलीआं, मनसा कूड़ देणी मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ऐका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरी बेपरवाहीआ।

जन भगत कहण प्रभ शब्द नाद सुणा बिनां कन्न, धुंन आत्मक राग प्रगटाईआ। मनसा कूड़ मिटा दे मन, ममता मोह रहे ना राईआ। भाग लगा दे काया माटी तन, तन वजूद वज्जे वधाईआ। निरगुण नूर चाढ़ दे चन्न, जोती धार धार प्रगटाईआ। भेव खुल्हा दे हँ ब्रह्म, पारब्रह्म परदा आप चुकाईआ। भगत सुहेले बणा लै जन, बण आप जणेंदी माईआ। वसेरा होवे बिनां छप्परी छन्न, तेरे चरन कँवल कँवल सरनाईआ। सति सच दा साडा होवे धरम, धरनी धरत धवल धौल उत्ते सोभा पाईआ। प्यार मुहब्बत दा बख्श दे कर्म, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। झगढ़ा रहे ना वरन बरन, आत्मक धार देणी वडयाईआ। तूं आदि जुगादी करनी करन, करता पुरख इक्क अखवाईआ। तेरे सन्त सुहेले तूं मेरा मैं तेरा ढोला पढ़न, सोहँ सति सति दरसाईआ। तेरी धुर दी मंजल चढ़न, अग्गे हो ना कोई अटकाईआ। लेखे लाउणा सीस धड़न, पंज तत्त आपणे संग मिलाईआ। तूं आदि जुगादी तरनी तरन, तारनहार इक्क अखवाईआ। तेरे भय विच्च सारे डरन, सिर सके ना कोई उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक दया कमाईआ।

जन भगत कहण लेखे ला लै तन माटी ख़ाक, वजूद तेरे चरन टिकाईआ। पतितां पुनीत हो के कर पाक, दुरमत मैल धवाईआ। बन्द कवाड़ी खोल्ह दे ताक, बज़र कपाटी कुण्डा लाहीआ। शब्द घोड़े चढ़ा राक, जगत जहान बाहर दुड़ाईआ। आत्म परमात्म रहे साक, नाता तुट कदे ना जाईआ। ग़रीब निमाणयां पुच्छ वात, कोझे कमलयां हो सहाईआ। धर्म दी धार बख्श दे दात, दौलत इक्को नाम वरताईआ। अंदरों मेट अन्धेरी रात, नूरी चन्द कर रुशनाईआ। अठ्ठे पहर रहे प्रभात, घड़ी पल ना वंड वंडाईआ। तूं सभ दा पिता मात, पतिपरमेश्वर इक्क अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ।

जन भगत कहण प्रभ साडा अन्तश्करन कर पवित्र, मेहरवान दया कमाईआ। आत्म धार बख्श दे हित, हितकारी होणा धुरदरगाहीआ। ठगोरी मन करे ना चित, चिन्ता चिखा ना कोई जलाईआ। तेरा दर्शन होवे नित्त, नवित्त वज्जदी रहे वधाईआ। लेखे लाउणी बूंद रित, दर ठांडे मंग मंगाईआ। तेरे चरन कँवल उत्ते धवल जाईए लिट, लिटां खोल्ह के साड्डी दुहाईआ। मनसा सच दवारे जावे टिक, टिक्के मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। झगड़ा मिटा दे पत्थर इट्ट, पाहना सीस ना कोई निवाईआ। हउँ वारी विटो विट, आपणा आप भेट कराईआ। साड्डी सुहञ्जणी करदे थित, घड़ी पल नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म प्रभ तेरी बेपरवाहीआ। (१६ माघ श सं ६ अरजन सिँघ दे गृह)

✵ ✵ ✵ ✵ ✵

जन भगत कहण प्रभ साड्डे अन्तर मेट दे दुःख, निरंतर तेरा ध्यान लगाईआ। जगत कल्पणा रहे ना भुक्ख, तृष्ना तामस ना कोई सताईआ। लेखे ला लै आपणा बूटा रुक्ख, गरभवास ना फेर भवाईआ। तेरी सुखणा रहे सुख, सुख सागर रूप बेपरवाहीआ। साड्डा उजला करना मुक्ख, दुरमत मैल धवाईआ। लेखे लाउणा मानस जन्म मानुक्ख, चुरासी वंड ना कोई वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरी बेपरवाहीआ।

जन भगत कहण प्रभ तेरा होवे सच संजोग, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। दर्शन करीए नित्त अमोघ, बिन नेत्रां दर्शन पाईआ। तेरे प्रेम दी चुगीए चोग, चुगली निन्दिआ जगत तजाईआ। चिन्ता हरख रवे ना सोग, ग़मी ग़मखार देणी मिटाईआ। विछोड़ा रहे ना कोई विजोग, विछड़यां मेल मिलाईआ। सच दवार दी माणीए मौज, मजलस तेरे नाल रखाईआ। सभ दी लेखे लाउणी औध, आयू तेरे चरन टिकाईआ। भेव अभेद दस्सणा अगाध बोध, बुद्धि तों परे समझाईआ। साड्डा हिरदा देणा सोध, शुद्ध आपे लैणे बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ।

जन भगत कहण प्रभ साडी दुरमत मैल धो, पतित पुनीत बणाईआ। नाम समझा दे सोहँ सो, सो पुरख निरञ्जण तेरी शरनाईआ। हरि पुरख निरञ्जण आपे हो, परदा परदिआं विच्चों देणा उठाईआ। एकंकार सच प्यार बख्शणा मोह, मुहब्बत आपणे नाल जुड़ाईआ। आदि निरञ्जण कर के लोअ, लोइण तीजा देणा खुल्हाईआ। अबिनाशी करते पंच विकारा मेटणा मोह, गिरोह रहण कोई ना पाईआ। श्री भगवान अमृत रस देणा चोअ, निझर झिरना आप झिराईआ। पारब्रह्म ब्रह्म धार आपे हो, निरगुण निरगुण लैणा मिलाईआ। सतिगुर शब्द लहणा देणा चुकाउणा इक्क दो, दूआ एके विच्च मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धुर दे नाम दा ढोआ देणा ढोअ, वस्त अगम्म काया अन्तर आप टिकाईआ। (१६ माघ श सं नौं गुरबख्श सिँघ दे गृह)

✵ ✵ ✵ ✵ ✵

जन भगत कहण असीं कूक सुणाएए उठा के बाहींआ , हत्थ हत्थां नाल मिलाईआ। किरपा कर अगम्मड़े गुसाईंआ, गोदी आपणी लैणा टिकाईआ। साडीआं लेखे लौणीआं जगत किरसाणी वाहीआं, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। मेल बणाउणा भैणा भाईआं, भार सीस ना किसे टिकाईआ। जे तूं माण दवाया जगत बछड़े गाईआं, काहन रूप दरसाईआ। जे जोड़ जुड़ाया झीवर छींबे नाईआं, गोबिन्द संग बणाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी साड्डे अंदर कर सफ़ाईआ, कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। सच प्रीतां तेरे नाल लाईआं, प्रीतम लैणीआं तोड़ निभाईआ। साड्डीआं रूहां होण ना कदे पराईआं, परम पुरख आपणे गृह टिकाईआ। बिरहों विछोड़े विच्च साड्डीआं निकलीआं धाहींआ, आह भर के दईए सुणाईआ। सानूं मार्ग लावीं भुल्लयां राहीआं, रहबर रस्ता इक्क विखाईआ। झगड़ा रहे ना थल अस्गाहीआं, जल थल महीअल पार कराईआ। मन विच्च ना रहण बुराईआं, बुरयारां पन्ध मुकाईआ। तेरीआं तुकां तूं मेरा मैं तेरा गाईआं, इक्को नाम शनवाईआ। साडा लेखा पार करदे शरअ वाले विच्चों कसाईआं, कसमां खा के दईए सुणाईआ। असां जगत वाशना ढेरीआं ढाईआं, ढईआ गोबिन्द दए गवाहीआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरी शरनाईआ।

जन भगत कहण प्रभू असीं तेरीआं आसां रक्खीआं, ओट इक्क अकाल रखाईआ। आत्म धार धर्म दीआं सखीआं, काहन लैणा आप प्रनाईआ। कीमत पाउणी करोड़ करोड़ी लक्खीआं, कक्खां रंग रंगाईआ । तेरे प्रेम प्यार विच्च होवण रत्तीआं, रंग इक्को देणा चढ़ाईआ। मसती विच्च होवण मत्तीआं, खुशीआं ढोले गाईआ। अंदर वासना रहण ना रत्तीआं, अमृत मेघ देणा बरसाईआ। कलिजुग कूड़े हिस्से मेटणे पत्तीआं, पतिपरमेश्वर होणा सहाईआ। साडे अंदर जगा दे नूर दीआं बत्तीआं, अन्ध अन्धेर देणा गवाईआ। असीं तेरे सत्थर लथ्थीआं, यारड़े होणा आप सहाईआ। साड्डीआं कल्पणा जाण मथीआं, मथन करना चाईं चाईंआ। सच सरनाई सरनगत लथ्थीआं, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। कलिजुग अन्तम हो के इक्ठीआं, दर तेरे

वास्ता पाईआ। फिरना पए ना अठ्ठ सठीआं, तीरथां तट्टां ना कोई भवाईआ। झगड़ा मुका दे मन्दर मट्टीआं, काअबिआं वंड ना कोई वंडाईआ। इक्को नाम पढ़ा दे पट्टीआं, पाटल तेरी ओट तकाईआ। वणज करा दे साचे हट्टीआं, हटवाणा इक्को नज़री आईआ। तेरे बिरहों वैराग विच्च सारीआं जाण फटीआं, घाउ आपणा नाम लगाईआ। चुरासी डोरां जावण कट्टीआं, तन्दी आपणे नाल बंधाईआ। साडीआं पवित्र कर दे काया मट्टीआं, मटके अमृत जल भवाईआ। असीं आसां तेरे ते सट्टीआं, तेरी आस रखाईआ। चरन कँवल होईआं इक्ठीआं, दर ठांडे सोभा पाईआ। आत्म धार निरगुण तेरे दर ते ढठ्ठीआं, बिन सीस सीस जगदीश निवाईआ। साडे नाल कर लै पक्कीआं, मता आपणा दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा दर्शन कर कर जन भगत धारां अन्तर हस्सीआं, हस्स हस्स तेरी खुशी बणाईआ। (१६ माघ श सं नौं चन्नण सिँघ दे गृह)

✵ ✵ ✵ ✵ ✵

जन भगत कहण प्रभ तेरे गाईए गीत, गोबिन्द तेरा नाम वडयाईआ। सति सच समझाउणी रीत, रीतीवान आपणी दया कमाईआ। निरगुण धार बणना मीत, मित्र प्यारा इक्क अखवाईआ। काया करनी ठांडी सीत, अगनी तत्त बुझाईआ। भेव चुका दे मन्दर मसीत, मठ शिवालिआं पन्ध मुकाईआ। सभ दी पवित्र करीं नीत, द्वैत रहण कोई ना पाईआ। हिरदे स्वामी वसणा चीत, चेतन्न हरिजन लैणे कराईआ। आपणा भेव खोल्हणा अनडीठ, परदा परदिआं विच्चों चुकाईआ। धुर दा रंग चाढ़ना बसीठ, लोकमात उतर कदे ना जाईआ। झगड़ा मुकाउणा हस्त कीट, ऊँचां नीचां गोद टिकाईआ। तेरा भाणा लग्गे मीठ, मिठ्ठड़े स्वामी देणी वडयाईआ। मनसा कूड़ रहे ना मीठ, अमृत रस देणा चखाईआ। घट स्वामी वस्सणा भीत, भीतर डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, पारब्रह्म प्रभ आसा पूर कराईआ।

जन भगत कहण प्रभ तेरा अन्तर होए वसेरा, श्री भगवान विसर कदे ना जाईआ। पन्ध मुकाउणा दूर नेरा, नेरन नेरा नज़री आईआ। सभ दे अन्तर होए चाउ घनेरा, खुशीआं रंग रंगाईआ। ढोला गावण तूं मेरा मैं तेरा, इक्को राग अलाईआ। भेव चुकाउणा संझ सवेरा, रुतड़ी आपणा संग बणाईआ। जगत जहान ना रहे अन्धेरा, अन्तश्करन करनी सफ़ाईआ। कलिजुग अन्तम बन्न्हणा बेड़ा, नईआ नौका ना कोई डुबाईआ। चुरासी वाला कट्टणा गेड़ा, चक्करां विच्च ना कोई भवाईआ। भाग लगाउणा साढे तिन्न हत्थ काया खेड़ा, खिड़की अंदरों आप खुल्हाईआ। शरअ कूड़ दा कट्टणा जेड़ा, तन्दी डोर ना कोई बंधाईआ। अन्तम करना हक़ नबेड़ा, हकीकत दे मालक होणा आप सहाईआ। कलिजुग वक्त बीत्तया बथेरा, आपणा पन्ध मुकाईआ। बिन तेरी किरपा रूप सच दिसे ना गुरू चेरा, चेला गुर संग ना कोई बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि सच तेरी वडयाईआ।

जन भगत कहण प्रभ साडा मेट अन्धेरा अन्ध, अज्ञान रहे ना राईआ। अगला पिछला चुका पन्ध, पान्धी पन्ध विच्च ना कोई भवाईआ। निझ आत्म दे अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। सद तेरा गाईए छन्द, सोहँ ढोला धुरदरगाहीआ। दर ठांडे रहे मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। तूं साहिब सूरा सरबंग, देवणहार गुसाईंआ। ग़रीब निमाणयां लाउणा अंग, होणा आप सहाईआ। तेरी सोईए सेज पलँघ, सुख आसण देणा लिटाईआ। जिथ्थे तेरे नाम दा वज्जे मरदंग, अनादी धुंन करे शनवाईआ। अमृत धार वहे अगम्मी गंग, जगत सुरसती दी लोड़ ना कोई वखाईआ। सदा सुहेले इक्क इकेले एहो मंग रहे मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ । दीन दयाल दयानिध बख्शंद, बख्शणहार तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर दवारे निरगुण धार आउणा लँघ, आप आपणी दया कमाईआ। (१६ माघ श सं नौं जगीर सिँघ दे गृह)

* * * * *

जन भगत कहण प्रभ तेरे अनादी बच्चे, बचपन तेरी झोली पाईआ। लेखे ला लै काया माटी भाण्डे कच्चे, कंचन गढ़ दे सुहाईआ। धुर दे प्यार बख्श दे सच्चे, सुच्च संजम नाल मिलाईआ। मनुआ उठ ना दह दिश नच्चे, चार कुण्ट ना उठ उठ धाहीआ। कलिजुग अगनी तत्त मूल ना मच्चे, अमृत मेघ देणा बरसाईआ। सति सति दी बख्श सते, सति सतिवादी होणा सहाईआ। तेरे नाम विच्च रहीए मते, रतन अमोलक हीरे लै बणाईआ। तेरे सदा जैकारे डंके वज्जण फतिह, सिर सके ना कोई उठाईआ। कूड़ी क्रिया साडे अंदरों करदे हत्ते, हत्यारा रूप नज़र कोई ना आईआ। असीं तेरे सत्थर लथ्थे, तेरी ओट तकाईआ। गाईए तेरी कथ्थे, कथनी नाल सिफ्त सलाहीआ। चरन कँवल टेकीए मथ्थे, मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। तूं साहिब पुरख समरथे, हरि करता धुरदरगाहीआ। साड्डे सगल वसूरे जाइण लथ्थे, दर तेरा दर्शन पाईआ। धुर दी धार बख्श दे वथ्थे, अमोलक आपणा नाम वरताईआ। सति सच चढ़ा लै रथ्थे, रथवाही आपणा रंग रंगाईआ। निरधन हो के तेरी सरन ढठ्ठे, सरगुण देणी माण वडयाईआ। साडे चीथड़ पुराणे फटे, ओढण सीस ना कोई टिकाईआ। तेरा नूर प्रकाश वेखीए लट लट्टे, जोती जाते देणा चमकाईआ। नाम बख्शणा आपणे हट्टे, सचखण्ड दवारिउँ झोली पाईआ। साड्डे कर्म कांड पिछले जाण ठप्पे, अग्गे ठप्पा आपणा नाम मोहर लगाईआ। हरिजन तेरा तेरा नाम जपे, रसना जेहवा नाल धिआईआ। आत्म परमात्म रिस्ते कर लै पक्के, पक्की आपणी गंढु पवाईआ। दुनी विच्च मिलण ना धक्के, चुरासी सज़ा ना कोई रखाईआ। असीं पूरबले जन्मां विच्च अक्के, अग्गे लेखा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि सच तेरी सरनाईआ।

जन भगत कहण प्रभू साड्डे वेख लै अन्तश्करन विचार, विचरन दी लोड़ रहे ना राईआ। तूं करता पुरख करतार, कुदरत दा मालक बेपरवाहीआ। जिउँ भावें तिउँ लैणा

तार, सिर सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। तूं साहिब स्वामी बख्शणहार, रहमत आपणी आप कमाईआ। असीं मांगत दर भिखार, भिक्खक हो के झोली डाहीआ। तेरा अतोट अतुट्ट भंडार, देवणहार देणा वरताईआ। साडी नमो नमो निमस्कार, निरमाणता विच्च सीस झुकाईआ। जन भगत सुहेले तेरा आत्म धार परिवार, परम पुरख बंस सरबंस देणा सुहाईआ। असीं करीए कूक पुकार, बौहड़ी बौहड़ी कर सुणाईआ। निरगुण धार पाउणी सार, सरगुण मेला मेलणा सहज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी एकँकार, अकल कलधारी तेरे हत्थ वडयाईआ। (१६ माघ श सं नौं दलीप सिँघ दे गृह)

* * * * *

जन भगत कहण प्रभ साड्डीआं पूरीआं कर दे आसां, तृष्ना सभ दी पूर कराईआ। ठांडे दर रहे ना कोई निरासा, झोली नाम देणी भराईआ। चरन कँवल बख्श भरवासा, भाण्डा भरम देणा भन्नाईआ। जाप जपा स्वास स्वासा, साह साह आपणा रंग रंगाईआ। आपणा भेव खुल्ा खुलासा, परदा परदिआं विच्चों उठाईआ। घर स्वामी तेरी वेखीए रासा, आत्म परमात्म मिल के खुशी बणाईआ। लेख मुका आकाश अकाशा, गगन गगनंतरां पन्ध मुकाईआ। तेरा इक्को नूर दिसे जोत प्रकाशा, दूजा नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ।

जन भगत कहण प्रभ साड्डी पूरी कर दे मनसा, ममता मोह विकार गवाईआ। फड़ फड़ काग बणा दे हँसा, सोहँ साची चोग चुगाईआ। मानव जाती तेरा इक्क होवे बंसा, इक्को घर देणा वसाईआ। मन मनुआ मार हँकारी कंसा, धर्म दी धार देणी समझाईआ। तेरी वड्डिआई कोटन कोट गाउँदे सहँस सहँसा, सहँसर मुख शेष रिहा सुणाईआ। सति सच बणा बणता, घड़न भन्नणहार होणा आप सहाईआ। सचखण्ड निवासी धुर दे कन्ता, कन्त कन्तूल तेरी सरनाईआ। हउमे गढ़ तोड़ दे हंगता, हँ ब्रह्म दे दृढ़ाईआ। बोध अगाधा बण के पंडता, बुद्धि तों परे देणा समझाईआ। मेल मिलाउणा साची संगता, सगला संगी इक्क अखवाईआ। लेखे लाउणा भुक्खा नंगता, कोझयां कमलयां गोद टिकाईआ। हरिजन दरवेश तेरे दर दा मंगता, भिक्खक हो के झोली रिहा विखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेल मिलाउणा साचे सन्ता, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आपणी दया कमाईआ। (१६ माघ श सं नौं मुखत्यार सिँघ दे गृह)

* * * * *

जन भगत कहण प्रभ किरपा कर दीन दयाल, ठाकर स्वामी तेरी ओट तकाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत कर रुशनाईआ। मातलोक कर संभाल, सम्बल

दे स्वामी होणा आप सहाईआ। हरिजन सन्त सुहेले बणा आपणे लाल, लालन आपणा रंग रंगाईआ। शब्द विचोला बख्श दलाल, दूसर लोड़ रहे ना राईआ। काया मन्दर अंदर दरसा सच्ची धर्मसाल, गृह इक्को सोभा पाईआ। जिथ्थे दीपक दीआ जोती जाते जगे कमाल, बिन तेल बाती होए रुशनाईआ। नाम निधाना नौजवाना श्री भगवाना अगम्मा दे धन माल, खाली झोलीआं दे भराईआ। भाग लगा दे तन वजूद माटी खाल, ख़ालक ख़लक होणा सहाईआ। तेरे नाम दा अनादी वज्जे ताल, धुन आत्मक राग देणा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ।

जन भगत कहण प्रभू कलिजुग वेख अन्धेरी रैण, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। आत्म परमात्म मेल मिले ना साचे सैण, साक सज्जण नज़र कोई ना आईआ। तेरा गृह सच दवार होया तरफैण, घर मिले ना माण वडयाईआ। बिन तेरी किरपा नेत्र खुल्हे ना किसे निझ नैण, लोचन नूर ना कोई चमकाईआ। शब्द अगम्मा बिन रसना जेहवा सुणे कोई ना गायन, आत्मक राग ना कोई दृढ़ाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर कूड़ी क्रिया वहिंदा वहण, दुरमत मैल ना कोई धवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, देवणहार तेरी सरनाईआ।

जन भगत कहण प्रभ कलिजुग अन्त मार लै झाकी, सचखण्ड निवासी ध्यान लगाईआ। बिन तेरी किरपा अन्तर खुल्हे किसे ना ताकी, बज़र कपाटी परदा ना कोई उठाईआ। अमृत मिले ना बूंद सवांती, निझर झिरना कँवल नाभी ना कोई उलटाईआ। प्रकाश होवे ना निरगुण जोत तेरी बाती, बिन तेल बाती जहूर कोई ना डगमगाईआ। तूं पुरख अकाला दीन दयाला पुरख करता अबिनाशी, अलख अगोचर अगम्म अथाह तेरे हत्थ वडयाईआ। आत्म परमात्म जुड़े कोई ना नाती, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोई मिलाईआ। झगड़ा लै वेख दीन मज़हब जात पाती, ऊँच नीच रहे कुरलाईआ। साची मंज़ल चढ्हे कोई ना घाटी, निरगुण तेरा दरस कोई ना पाईआ। मानस जन्म मुक्के किसे ना वाटी, लक्ख चुरासी पन्ध ना कोई चुकाईआ। तूं पुरख अकाला दीन दयाला सभ दा कमलापाती, पतिपरमेशवर इक्क अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ।

जन भगत कहण प्रभ साचा सुहाए कोई ना बंका, बंक दवारी नज़र किसे ना आईआ। शब्दी धार ना लग्गे तणका, तन वजूद ना वज्जे वधाईआ। मन का फेरे कोई ना मणका, मनसा मोह ना कोंइि गवाईआ। भेव समझे ना कोई ब्रह्म का, पारब्रह्म तेरा दर्शन करन कोई ना आईआ। इक्को मार्ग दस्स दे साचे धर्म का, धर्म दी धार दे दृढ़ाईआ। झगढ़ा मेट दे वरन बरन का, श्त्री ब्रह्मण शूद्र वैश वंड ना कोई वंडाईआ। इक्को सहारा दे दे आपणे चरन का, चरन चरनोदक आपणा जाम देणा प्याईआ। साचा मार्ग दस्स दे हकीकी मंज़ल चढ्हन का, अग्गे हो ना कोई अटकाईआ। नाम निधाना दस्स दे पढ्हन का, तूं मेरा मैं तेरा सृष्टी दृष्टी अंदर ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखवाईआ।

जन भगत कहण प्रभ तुध बिन दिसे कोई ना मीत, मित्र प्यारा नज़र कोई ना आईआ। तूं स्वामी वस्सणा चीत, चित ठगोरी रहे ना राईआ। इक्को तेरा नाम निधाना होवे गीत, गोबिन्द मेल मेलण सहज सुबाईआ। काया करनी ठांडी सीत, अगनी तत्त बुझाईआ। पापीआं करना पतित पुनीत, दुरमत मैल देणी धवाईआ। धुर दा दस्सणा कलमा नाम हदीस, हज़रतां तों करनी बाहर पढ़ाईआ। तूं आदि जुगादि जगदीश, जगदीशर इक्क अखवाईआ। जिस दी सिफ्त सलाह करदे राग छतीस, सिफ्तां वाले सिफ्ती ढोले गाईआ। सभ दी आसा मनसा पूरी कर उम्मीद, तृष्ना तेरे चरनां विच्च टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सचखण्ड निवासी आपणी दया कमाईआ।

जन भगत कहण प्रभ साडे अंदर दे नाम अगम्मी वस्त, अमोलक आप वरताईआ। सच खुमारी होईए मस्त, सति सरूप विच्च समाईआ। लेखा दे दे दस्त बदस्त, कर तेरे अग्गे रहे वखाईआ। तूं मालक ख़ालीक वाली अर्श, अर्शी प्रीतम बेपरवाहीआ। भाग लगा दे उप्पर फर्श, धरनी धरत धवल धौल ध्यान लगाईआ। साड्डी मनज़ूर करनी अर्ज़, आरज़ू तेरे अग्गे रखवाईआ। तूं योधा सूरबीर मरदाना मरद, बलधारी वड वडयाईआ। ग़रीब निमाणयां वंडीं दर्द, दुखीआं हो सहाईआ। तेरा खेल तक्कीए असचरज, अचरज लीला देणी विखाईआ। कलिजुग छुरी शरअ लेख मिटाउणा करद, कातल मकतूल दा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुग चौकड़ी आदि जुगादि दी वेखणी फरद, बिन अक्खरां हरफ़ हरूफ़ा ध्यान लगाईआ। (१६ माघ श सं नौं वरयाम सिँघ दे गृह)

* * * * *

जन भगत कहण पुरख अकाले अकाल मूरत, अकल कलधारी तेरी बेपरवाहीआ। सति सरूप वखा आपणी सूरत, नूर नुराने नज़री आईआ। शब्द अनादी जणा तूरत, तुरीआ तों बाहर भेव देणा खुल्हाईआ। साडी आसा मनसा कर पूरत, पूरन भेव देणा समझाईआ। तूं शहनशाह आदि अन्त हाज़र हज़ूरत, हज़रतां तों बाहर अगम्म अथाहीआ। तेरा जोती जलवा नूर नूरत, नव नौं चार दा पन्ध मुकाईआ। साची बख्श दे चरन धूड़त, टिक्के मस्तक ख़ाक रमाईआ। नाता तोड़ दे कूड़ी क्रिया कूड़त, सति सच सति समझाईआ। चतुर सुघड़ बणा मूर्ख मूढ़त, परदा परदिआं विच्चों उठाईआ। तूं सर्ब कला भरभूरत, समरथ पुरख तेरे हत्थ वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार अगम्म अथाहीआ।

जन भगत कहण साड्डे पुरख अकाले अन्तरजामी, अन्तश्करन वेखणा चाईं चाईंआ। आत्म धार सति स्वामी, पारब्रह्म तेरी बेपरवाहीआ। सो पुरख निरञ्जण सदा निहकामी, निहचल धाम तेरी वज्जदी रहे वधाईआ। हरि पुरख निरञ्जण करनी मेहरवानी, महिबूब मुहब्बत विच्च आपणा रंग रंगाईआ। आदि निरञ्जण तेरा रूप अनूप महानी, महिंमा अकथ्थ कथी ना जाईआ।

श्री भगवान तेरी सति दी सति निशानी, जगत नेत्र लोचन नैण वेखण कोई ना पाईआ। अबिनाशी करते तेरा लेखा दो जहानी, दुहरी आपणी कल प्रगटाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक्को बख्शणा पद निरबाणी, निरवैर पुरख देणी माण वडयाईआ। सतिगुर शब्द गहर गम्भीर बणना धुर दा बानी, वस्त अमोलक अगम्म आप वरताईआ। निरअक्खर धार बिनां अक्खरां तों सुणीए तेरी बाणी, अणयाला तीर देणा लगाईआ। बिन रसना जेहवा अमृत रस पीए पाणी, बूंद सवांती देणी टपकाईआ। तेरा जलवा जोत तक्कीए काया मन्दर अंदर श्री भगवानी, भगवन आपणा परदा देणा उठाईआ। तूं रहीम रहमतां वाला रहमानी, ख़ालक ख़लक तेरी ओट तकाईआ। जगत झगड़ा मेट जिस्म जिस्मानी, जिस्म जमीर बेनज़ीर अंदरों दे बदलाईआ। दरगाह साची मुकामे हक़ सचखण्ड दवार तेरा दरस करीए नौजवानी, जोबनवन्ता श्री भगवन्ता धुर दा कन्ता इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, वर दाते तेरी ओट रखाईआ।

जन भगत कहण तूं परम पुरख समरथ, हरि करता धुरदरगाहीआ। वस्त अमोलक दे दे वॅथ, वास्तविक तेरे अग्गे वास्ता पाईआ। काया अंदर टिकाउणी बिना हत्थ, आप आपणी खुशी बणाईआ। तेरे सत्थर जाईए लथ्थ, यारड़ा गोबिन्द होए सहाईआ। तेरी महिंमा सदा गाईए अकथ्थ, कथनी तों बाहर देणी समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ।

जन भगत कहण प्रभ तेरी अन्त अखीरी इक्को ओट, ओड़क तेरा ध्यान लगाईआ। नाम निधाने ला दे चोट, चोटी चढ़ के वेख वखाईआ। तैनूं लभ्भदे कोटी कोट, खोजिआं हत्थ किसे ना आईआ। तेरा प्रकाश तकीए निर्मल जोत, जोती जाते आपणा भेव देणा खुलाईआ। आत्म रूप तेरा नूर इक्को गोत, दूसर वंड ना कोई वंडाईआ। मन मनसा दी अंदरों कढ्ढ के खोट, खोटे खरे लै बणाईआ। सदी चौधवीं सारे आलणिउँ डिग्ग बोट, फड़ बाहों विच्च ना कोई टिकाईआ। उठ वेख संदेसा देवे चौदां लोक, चौदां तबक रहे जणाईआ। नव सत्त तेरा आत्म धार इक्क सलोक, पारब्रह्म ब्रह्म ढोला देणा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी सरनाईआ।

जन भगत कहण साड्डी दुरमत मैल धो, मेहरवान आपणी दया कमाईआ। तेरा नाम निधाना सुणीए सो, सो साहिब तेरी वज्जदी रहे वधाईआ। तुध्ध बिन सहाइक नाइक अवर ना कोअ, सिर सिर हत्थ ना कोई टिकाईआ। आत्म धार तेरे नाल जावे छोअ, शहनशाह आपणा रंग देणा रंगाईआ। काया मन्दर अंदर तेरा जोत दा होवे नूर नुराना अगम्मी लोअ, दोए लोचनां तों बाहर नज़री आईआ। सृष्टी नालों दृष्टी होवे निर्मोह, मुहब्बत तेरे नाल रखाईआ। पंच विकार रहे ना गिरोह, कूड़ी क्रिया देणी गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, मालक ख़ालक प्रितपालक आपे हो, हौका सुणना थाउँ थाईंआ। (१६ माघ श सं नौं महिंदर सिँघ दे गृह)

❋ ❋ ❋ ❋ ❋

जन भगत कहण परम पुरख बड़ा दयालू, दीन दयाल इक्क अखवाईआ। किरपानिध सदा किरपालू, परम पुरख वड वडयाईआ। जो सभ दी सुरत संभालू, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। जिस दा मार्ग सति धर्म दा होवे चालू, चाल निराली इक्क जणाईआ। लेखा पूरा करे जो सतिगुर नानक दिता पुत कालू, कलमयां तों बाहर समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ।

सतिगुर शब्द कहे प्रभ जुग जुग भगत उधारदा, उदर दा लेखा दए मुकाईआ। पूरब जन्म कर्ज़ उतारदा, मकरूज़ हो के खेल खिलाईआ। लेखा जाणे जगत विवहार दा, विवहारी हो के परदा लाहीआ। सति सरूप शाहो भूप हुक्म वरते इक्को सच्ची सरकार दा, जिस नूं ना कोई सके मेट मिटाईआ। लहणा देणा पूरा होवे पैगम्बर गुर अवतार दा, अवतरी आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ।

सतिगुर शब्द कहे किरपा करे सूरा सरबंग, हरि करता धुरदरगाहीआ। जन भगतां मानस जन्म लेखे जाए लग्ग, जिन्नां बख्शे चरन सच्ची सरनाईआ। जगत तृष्ना रहे ना अग्ग, अगनी तत्त ना कोई तपाईआ। कूड़ी क्रिया मेटे हद्द, हदूद आपणी दए विखाईआ। किरपा कर सूरा सर्बग्ग, लहणे देणे दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ।

सतिगुर शब्द कहे जन भगत कदे ना मरदा, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। उह निवासी उस घर दा, जिथ्थे वसे बेपरवाहीआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला पढ़दा, आत्म धार वज्जदी रहे वधाईआ। दर्शन करे नरायण नर दा, जोती जाता नज़री आईआ। दर ठांडे सच सरनाई परदा, बिन सीस जगदीश झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर साचा इक्क विखाईआ।

जन भगत सुहेला सच दवारे वसदा, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। बिन रसना बुल्ल्हीआं हस्सदा, आत्म ढोले खुशीआं गाईआ। प्यासा बण प्रभू दे जस दा, सिफ्त सिफ्तां नाल सलाहीआ। जिस दी पैज पुरख अकाला रक्खदा, दर देवे माण वडयाईआ। उह चुरासी विच्च कदे ना तपदा, जूनी जून ना कोई भवाईआ। सो सोहँ ढोला धुर दे हुक्म नाल जपदा, तिस दा लहणा देणा रहे ना राईआ। मेल मिलावा होवे धुर दे बप्प दा, पिता पूत गोद उठाईआ। जगत नाता जगत रहि जाए तत्त दा, अगनी ख़ाक रूप दरसाईआ। आत्म सचखण्ड दवारे फिरे नट्ठदा, उछले कुद्दे चाईं चाईंआ। मेल मिलावा होवे परमेश्वर पत दा, पारब्रह्म मिल के वज्जे वधाईआ। झगड़ा रहे ना काया माटी हड्ड मास नाड़ी रत्त दा, रतन अमोलक हरिजन आपणा रंग रंगाईआ। एह खेल पुरख समरथ दा, जुग जुग जन भगतां देवे आप वडयाईआ। हरिजन कहे मेरा नाता सदा सति दा, सति सति विच्च समाईआ। मेरा लहणा देणा पक्क दा, पक्की प्रभ दे नाल पकाईआ। जन भगत आत्मा

कहे प्रभ लेखा अगम्म अकथ्थ दा, कथनी कथ ना सके राईआ। जो रथवाही धुर दे रथ दा, दो जहानां मात चलाईआ। हरपाल कहे मैं उस दवारे वस्सदा, जिथ्थे वसल मिले यार अलाहीआ। मेरा लहणा देणा अग्गे अलक्ख दा, अलक्ख अगोचर हो के वेख विखाईआ। जो लक्ख चुरासी मथ दा, मथणहार बेपरवाहीआ। उह मेरा बूटा पाले सच दा, सच देवे माण वडयाईआ। सहारा बण के काया माटी कच्च दा, कंचन गढ़ दए विखाईआ। जो लूं लूं अंदर रचदा, रचना आपणी दए समझाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, खेल खेले आप समरथ दा, दूसर अवर ना कोई जणाईआ। (१६ माघ श सं नौं हरि भगत दवार जेठूवाल हरपाल सिंघ)

* * * * *

जन भगत कहण प्रभ हिरदे अंदर वसणा, वसनीक लाशरीक इक्को नज़री आईआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार हो के मार्ग दस्सणा, जगत जहान तों मेहरवान देणा समझाईआ। निझर झिरना अमृत धार देणा रसना, रसना रस ना कोई वडयाईआ। कूड़ विकार हँकार काया मन्दर अंदर मथणा, तन वजूद रहण ना पाईआ। चरन प्रीत जोड़ना नतना, प्रीतम हो के होणा सहाईआ। सानूं वखाउणा आपणा वतना, बेवतन हो के दईए दुहाईआ। तूं साहिब स्वामी पुरख अकाला सर्ब कला समरथणा, समरथ तेरी वडयाईआ। हउ बाले अंझाणे चरन कँवल तेरे ढठ्ठणा, ढह ढह धूढ़ी खाक रमाईआ। आवण जावण लख चुरासी जम की फांसी रहे ना रटना, गेड़ा गेड़िआं विच्चों दए मिटाईआ। सभ दा लहणा देणा पूरा कर दे जो कौल इकरार कीता नाल गोबिन्द विच्च पटना, पाटल आपणा परदा देणा चुकाईआ। असीं तेरे दवारे बिन रसना जेहवा खुशीआं नाल हस्सणा, आत्म परमात्म वज्जदी रहे वधाईआ। साहिब सुल्ताने नौजवाने श्री भगवाने तूं तीर निराला कसणा, शाह हकीर बेनज़ीर आपणा देणा लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक होणा आप सहाईआ।

जन भगत कहण प्रभू साडे वस जा अंदर हिरदे, हार्दिक खुशी बणाईआ। असीं तैथों विछड़े चिर दे, चिरी विछुन्ने लै मिलाईआ। दर्शन करीए अगम्मे पर दे, घर प्रीतम तक्कीए नूर अलाहीआ। तेरे जुग चौकड़ी गेड़े रहे गिड़दे, सतिजुग त्रेता दवापर कलिजुग भज्जण वाहो दाहीआ। सानूं अग्गे पैंडे दिसदे नेड़ दे, दूर दुराडा पन्ध रहे ना राईआ। साड्डा लेखा लोकमात मार झात आप निबेड़ दे, दूसर हत्थ ना कदे फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ।

जन भगत कहण प्रभ साडा अन्तश्करन वेख लै आप, जगत शास्त्रां लोड़ रहे ना राईआ। त्रैगुण माया मेट दे ताप, अगनी तत्त ना कोई जलाईआ। आत्म ब्रह्म दा दस्सदे जाप, निरअक्खर आप समझाईआ। सभ दा पूरा कर दे भविख्त वाक, वाकिआ वेख ख़लक

खुदाईआ। जन भगतां अंदरों खोल् दे ताक, परदा उहला आप चुकाईआ। घर स्वामी जोड़ना नात, विछोड़ा अगला देणा मिटाईआ। तूं परम पुरख सुल्ताना मैं बाल अंजाणा आत्म तेरी जात, अजाती रूप ना कोई विखाईआ। मेहरवान महिबूब हो के पुच्छ वात, वारस हो के वेख विखाईआ। दर ठांडे सीस झुका बिन हत्थां तों जोड़े हाथ, हथेली हथेली नाल मिलाईआ। हउँ बाल अंञाणे अनाथां अनाथ, तूं देवणहार बेपरवाहीआ। सगले स्वामी होणा साथ, आपणा संग बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सच वस्त नाम वरताईआ।

जन भगत कहण प्रभू जगदीश, जगदीशर तेरी बेपरवाहीआ। तेरे कदमां झुके इक्को सीस, दूसर ओट ना कोई तकाईआ। साड्डा लेखा रहे ना तीस बतीस, छतीसा वंड ना कोई वंडाईआ। तेरा नाम निधाना इक्को होवे हदीस, हज़रतां तों बाहर देणा समझाईआ। सति धर्म दी दस्सणी रीत, सतिजुग साचा जोड़ जुड़ाईआ। झगढ़ा रहे ना मन्दर मसीत, काअबिआं तों बाहर देणा वखाईआ । तूं स्वामी त्रैगुण अतीत, त्रैभवण धनी तेरी बेपरवाहीआ । साडी काया करदे ठांडी सीत, अगनी तत्त ना कोई तपाईआ। हर हिरदे वस्सणा चीत, मन चित ठगोरी रहे ना राईआ। मेहरवान मेहरवान मेहरवान हो के कर बख्शीश, रहमत आपणी साडी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध्ध बिन अवर दीसे कोई ना मीत, मित्र प्यारा नज़र कोई ना आईआ। (१७ माघ श सं नौं गुरदेव सिँघ दे गृह)

जन भगत कहण प्रभ साड्डे उत्तम कर भाग, भगवन भागशाली दे बणाईआ। दुरमत मैल धो दाग़, पत्तत्त पुनीत हो सहाईआ। अन्तर उपजे इक्क वैराग, वैरी अंदरों बाहर कढ्ढाईआ। कूड़ी क्रिया करीए त्याग, त्रैगुण अतीते सिर आपणा हत्थ रखाईआ। अन्तश्करन उपजे तेरा प्यार मेला होए कन्त सुहाग, परम पुरख तेरे प्यार दी वज्जदी रहे वधाईआ। कलिजुग जीव हँस बणा काग, तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म माणक मोती चोग चुगाईआ। माया ममता डस्से ना डसणी नाग, सांतक सति देणा वरताईआ। निझ नेत्र लोचन नैण खुल्णी जाग, अनुभव दृष्टी आपणा परदा देणा उठाईआ। तेरी सरन सरनाई इक्को जाईए लाग, दूजा इष्ट नज़र कोई ना आईआ। धर्म दी धार बणा लै साध, सति पुरख निरञ्जण आपणी दया कमाईआ। दिवस रैण तैनूं लईए अराध, सिमरन इक्को दे समझाईआ। अन्तर रहे ना वाद विवाद, विख कूड़ी बाहर देणी कढ्ढाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म विच्च होवे विस्माद, बिस्मिल आपणा आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच मेला लैणा मिलाईआ।

जन भगत कहण प्रभ साचे नाम दी दे दे धुन, धुन आत्मक राग जणाईआ। साडी अंदरों खुल्हे सुन्न, जगत समाधी लोड़ रहे ना राईआ। भेव अभेदा दस्स दे आपणा गुण,

गुणवन्त धुरदरगाहीआ। सच स्वामी अन्तरजामी भगत सुहेले आप चुण, लक्ख चुरासी विच्चों वेख विखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ।

जन भगत कहण प्रभ अन्तर आत्म बख्श दे ठंड, त्रैगुण अगनी तत्त बुझाईआ। पारब्रह्म आपणे नाल पा लै गंढ, ब्रह्म आपणा संग निभाईआ। तेरा खेल वेखीए विच्च ब्रह्मण्ड, ब्रह्मांड ध्यान लगाईआ। झगढ़ा मेटणा जेरज अंड, उत्भुज सेतज पन्ध मुकाईआ। कूड़ी क्रिया करनी खण्ड खण्ड, खण्डा खड़ग नाम हत्थ उठाईआ। शब्दी धार इक्को चमके चंड, प्रचंड रूप बदलाईआ। जगत वासना देणा दंड, सिर सके ना मूल उठाईआ। भेव खुल्हाउणा तत्त पंज, पंचम नाद धुंन शब्द कर शनवाईआ। अन्तर रहे ना अगम्मी रंज, सति सतिवाद आपणा रंग वखाईआ। जगत जहान मंज़ल जाईए लँघ, बिन कदमां कदम उठाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी परम पुरख बख्शणा आपणा इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। नूर नुराना चाढ़ना चन्द, निज घर करनी आप रुशनाईआ। साडा खुशी होवे बन्द बन्द, तेरी बन्दगी विच्च आपणा आप समाईआ। आत्म सेज सुहाउणी पलँघ, सच सिँघासण डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच मेला लैणा मिलाईआ।

जन भगत कहण प्रभ साचे नाम दी दे दे दाती, दयावान दया कमाईआ। निगाह मार लै लोकमाती, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। जिध्धर तक्कीए अन्धेरी राती, साचा चन्द ना कोई चमकाईआ। तेरे नाम दी भुल्ली गाथी, रसना जेहवा कूड़ लोभ हलकाईआ। आत्म परमात्म बणाए कोई ना साथी, सगला संग ना कोई बणाईआ। तूं किरपानिध अनाथ अनाथी, दीनण दीना लैणा मिलाईआ। साड्डी भुल्ल बख्श गुस्ताख़ी, होणा आप सहाईआ। दर ठांडे मंगीए मुआफ़ी, मुआफ़ करना आप गुसाईंआ। सति धर्म करनी इन्साफ़ी, अदल धुर दा इक्क जणाईआ। शंकर नाल मिलाउणा कैलाशी, ब्रह्मा ब्रह्म धार वडयाईआ। विष्नूं शिव दी तक्के अयाशी, नव नौं दा भेव चुकाईआ। तूं परम पुरख अबिनाशी, हरि करता धुरदरगाहीआ। दीन दुनी तक्क बदमवासी, घट घट अंदर वेख विखाईआ। प्रेम प्यार दा दिसे ना कोई अभिलाशी, अबला होई लोकाईआ। चुरासी विच्चों तुध बिन करे ना कोई खुलासी, ख़ालक रंग ना कोई रंगाईआ। साचे मण्डल दिसे कोई ना रासी, सुरती शब्दी गोपी काहन ना कोई नचाईआ। मेहरवाना नौजवाना श्री भगवाना लोकमात मार झाती, परदा परदिआं विच्चों उठाईआ। बिन तेरी किरपा बजर कपाटी खुल्ही किसे ना ताकी, तकवा हक़ ना कोई वखाईआ। झगड़ा वेख लै मानस मानुख ख़ाकी, तन वजूद हक़ हक़ महिबूब दीन मज़हब विच्च लड़ाईआ। तेरे नाम कलमयां झगड़ा पाया भरांती, भाण्डा भरम ना कोई भन्नाईआ। अमृत बूंद निझर झिरने किसे ना मिले स्वांती, नाभी कँवल ना कोई उलटाईआ। ज़िंदगी विच्चों जीवन बदले ना किसे हयाती, हिरदे हरि ना कोई वसाईआ। तूं सभ दा परम पुरख कमलापाती, पतिपरमेशवर इक्क अखवाईआ। चरन कँवल उप्पर धवल जोड़ लै नाती, मेल मिलाउणा सैहज सुभाईआ। दिवस रैण सदा साड्डी रहे प्रभाती, प्रभू आपणा

रंग देणा रंगाईआ। साडी मनसा कूड़ रहे ना नार कमजाती, कन्त सुहाग लैणा जुड़ाईआ। असीं तेरी धार साड्डी पुच्छणी वाती, गृह गृह होणा आप सहाईआ। तेरा नाम कलमा इक्को होवे सफाती, सिफ्तां नाल तेरी वडयाईआ। साडा लेख रहे ना कागजाती, कुदरत कादर मेला लैणा मिलाईआ। तेरा नूर जहूर तक्कीए ब्रह्मादी, ब्रह्माण्ड तेरा परदा देणा उठाईआ। तेरा हुक्म सुणीए अहिलादी, शब्दी शब्द करनी शनवाईआ। अन्त कलिजुग तेरी इक्क इमदादी, दूसर ओट ना कोई तकाईआ। बिन नेत्र नैण तेरे प्यार दी लग्गी रहे समाधी, सुरती शब्द विच्च समाईआ। तेरा लेखा बाहर इशक हकीकी ते मजाजी, मजा निरगुण धार देणा चखाईआ। शरअ दा झगड़ा दिसे कोई ना पंडत काजी, कजा दा लेखा देणा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सच वस्त नाम वरताईआ।

जन भगत कहण प्रभ हर हिरदे जाणा वस, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। साचा मार्ग देणा दस्स, दहि दिशा तों बाहर देणा पढ़ाईआ। तीर अणयाला मारना कस, नाम निधाना आप चलाईआ। निझर धारों बख्शणा रस, अमृत जाम देणा प्याईआ। मनुआ साड्डा होवे वस, वसल यार देणा नूर अलाहीआ। खुशी विच्च ढोले गाईए जस, सिफ्तां नाल सिफ्त सलाहीआ। कलिजुग मेट अन्धेरी मस, सतिजुग सच चन्द कर रुशनाईआ। तैनूं झुकदे रव सस, सूर्या चन्द दिवस रैण सेव कमाईआ। मण्डल मंडप रहे हस्स, ढोले सोहले राग दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच मेला लैणा मिलाईआ।

जन भगत कहण प्रभ साडा अन्तर खोल्ह दे राज़, राजक रहीम भेव चुकाईआ। सूफ़ी कहण झगड़ा रहे ना रोज़ा निमाज़, बांग सदा इक्को देणी सुणाईआ। तेरी हकीकी कलमे दी सुणीए आवाज, बिन कन्नां देणी जणाईआ। तेरे उत्ते सानूं नाज, साड्डा अंदरों निजाम देणा बदलाईआ। सति दा सच करना काज, करते पुरख देणी वडयाईआ। लोकमात रक्खणी लाज, सिर सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। तेरे सीस जगदीश तक्कीए ताज, तख्त निवासी इक्को नज़री आईआ। सतिगुर शब्द उडा दे बाज, बाजी दीन दुनी उलटाईआ। तेरा धर्म दा होवे इक्क समाज, चार वरन अठारां बरन दीन मज़हब इक्को रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरी वडयाईआ।

जन भगत कहण प्रभ साडे अंदरों कढ्ढ दे रोग, हउमे हंगता दे मिटाईआ। तेरा होवे सच संजोग, विछोड़े विच्च विछड़ कदे ना जाईआ। चरन प्रीत बख्श दे जोग, जुगीशरां तों बाहर मेला लैणा मिलाईआ। तेरा दर्शन होवे रोज, निरगुण मिलणा चाईं चाईआ। बिन तत्तां तों करना भोग, आत्म परमात्म रस बणाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म रक्खणा आपणी गोद, फड़ बाहों गले लगाईआ। साड्डा अन्तश्करन आपे सोध, सुदी वदी दा लेखा देणा मुकाईआ। तूं मालक जोधन जोध, सूरबीर इक्क अखवाईआ। बुद्धि तों परे दा करना बोध, अकल तों बाहर देणा दृढ़ाईआ। आपणा भेव खोल्हणा गोझ, परदा परदिआं विच्चों चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साचे मन्दर होणा सहाईआ।

जन भगत कहण प्रभू साड्डा सुहा दे काया मन्दर, तन अंदर वज्जदी रहे वधाईआ। भाग लगा दे अन्धेरी कंदर, बिन तेल बाती कर रुशनाईआ। बजर कपाटी तोड़ दे जंदर, परदा परदे विच्चों उठाईआ। मनुआ दहि दिशा ना उठ उठ धाए बन्दर, बन्दगी आपणे विच्च लगाईआ। शरअ जगत रहे ना कलंदर, कलमा इक्को देणा दृढ़ाईआ। तेरा दर ठांडा आए मंगण, मांगत हो के झोली डाहीआ। चरन प्रीती चाढ़ दे रंगण, जगत जहान उतर कदे ना जाईआ। आत्म परमात्म बख़्श दे अनन्दन, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ । धूढ़ी ख़ाक रमा दे चन्दन, मस्तक तेरे चरन छुहाईआ । जन भगत सुहेले तेरा दरस करन दर ठांडे तेरे लँघण, अग्गे हो ना कोई अटकाईआ। पन्ध मुका दे आकाश पताल पुरी लो गगन गगनंतर जगत ब्रह्मण्डण, पान्धीआ पन्ध रहे ना राईआ। सचखण्ड दवार एकंकार आत्म धार दा होवे सगन, परमात्म खेल वखाउणा चाईं चाईंआ। तेरा दीपक जोत नूर नुराना जिस विच्च होईए मग्न, मसती तेरे विच्च समाईआ। साड्डा लेखे लाउणा बन्दगी वाला कीता भजन, भय भंजन देणी माण वडयाईआ। तूं आदि पुरख स्वामी जोती जाता इक्क निरञ्जण, निरवैर निराकार निरँकार तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मूरत गोपाल मोहण माधव मदन, माधव आपणी दया देणी कमाईआ। (१६ माघ श सं ६ सेवा सिँघ दे गृह)

* * * * *

जन भगत कहण प्रभू साड्डे धुर दे बाप, पिता पुरख अकाल तेरी शरनाईआ। मेहरवाना श्री भगवाना किरपा करी आप, प्रीतम आपणी दया कमाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म जपाउणा जाप, जग जीवण दाते देणी वडयाईआ। मेल मिलाउणा तीनो ताप, त्रैगुण अतीते होणा सहाईआ। किरपा करनी लोकमात, धरनी धरत धवल धौल उत्ते वेख वखाईआ। कोटन कोट जन्म दे मेटणे पाप, पतित पुनीत कराईआ। दुःख रोग ना रहे सन्ताप, सुक्ख सागर विच्च समाईआ। अंदरों मेट अन्धेरी रात, साचा नूर चन्द दे चमकाईआ। निरगुण धार पुच्छणी वात, सरगुण होणा आप सहाईआ । तेरे चरन कँवल सच प्रीती नात, रिश्ता अगम्म देणा बणाईआ। तेरा दर्शन करीए बहुभांत, बहुभांती आपणा रंग रंगाईआ। किरपा करनी इक्क इकांत, इक्क इकल्ले देणी वडयाईआ। सभ दी अन्तम पुच्छणी वात, वातावरन वेखणा जगत लुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच प्रीती चरन कँवल नात।

जन भगत कहण दुक्खड़ा कट्ट दे रोग, हउमे रहण ना पाईआ। साचे नाम दी बख़श दे चोग, चुगली निन्दया विच्चों बाहर रखाईआ। चिन्ता ग़म रहे ना सोग, चिखा कूड़ ना अगन जलाईआ। तेरे नाम दी चुणीए चोग, रस अमृत देणा चखाईआ। चरन प्रीत बख़्शणा जोग, जुगीशरां बाहर पढ़ाईआ। तेरा करीए दरस अमोघ, अमुल्ल तेरी सरनाईआ। तेरे खेल करीए चोज, चोजी प्रीतम तेरे हत्थ वडयाईआ। सति सच दा बख़्श दे जोग, भिच्छया

सच वाली वरताईआ। तेरे नाम दी माणीए मौज, मजलस भगतां देणी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा लेखा पूर कराईआ।

जन भगत कहण प्रभ तेरा नाम ध्याईए मुख, रसना सिफ्त सलाहीआ। साडे अंदर रहे ना दुःख, तृष्ना देणी मिटाईआ। अमृत धार मिटाउणी भुक्ख, हउमे हंगता गढ़ तुड़ाईआ। सुफ़ल कराउणी जननी कुक्ख, मिले माण जणेंदी माईआ। साडा पैंडा जावे मुक्क, आवण जावण रहे ना राईआ। तेरा नाम गाईए तुक, तेरी सिफ्त सिफ्त सलाहीआ। सीस जगदीश जावे झुक, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। साड्डा पैंडा पन्ध जाए मुक्क, चुरासी विच्च ना कोई भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगत कहण साड्डे उप पर तुठ, मुठ्ठी भर सारे लै तराईआ। (२६ माघ श सं नौं हरि भगत दवार मनजीत कौर नूरपुर)

✵ ✵ ✵ ✵ ✵

.... सतिगुर पूरा गुर गोपाल, गोपालन आपणी दया कमाइंदा। उठ गुरमुख मुख वेख दीन दयाल, मुख मुखड़ा आप सुहाइंदा। जिस नीहां हेठां दिते बाल, सो बाले बाल्यां झोली पाइंदा। आ के सुणे मुरीदां हाल, मुशर्द आपणा वेस वटाइंदा। निरगुण हो के सरगुण बणे दलाल, सच दलाली इक्क कमाइंदा। वेखणहारा हक़ हलाल, हकीकत घर घर खोज खोजाइंदा। भज्जा फिरे मशरिक मग़रिब जनूब समाल, शमूलीअत आपणी ना किसे समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा मार्ग इक्क समझाइंदा।

सच्चा मार्ग प्रभ सिकदार, तेरा इक्को इक्क नज़री आईआ। जन भगत बणे रहे सदा हक़दार, हक़ आपणा तेरे घर रखाईआ। तूं देवणहार दातार, जुग जुग तेरी सरनाईआ। आपणा खोल्ह बन्द किवाड़, बन्द ताकी किउं कराईआ। कर प्रकाश बहत्तर नाड़, निज नूर मिले रुशनाईआ। बिरहळ विछोड़े तेरे दित्ता साड़, अगनी अग्ग रही तपाईआ। आ सतिगुर प्रभ मेरे कर प्यार, तेरी प्रीती इक्को भाईआ। लारयां विच्च लंघे जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग बैठे पन्ध मुकाईआ। अन्तम वेख आपणी धार, धार धार विच्चों प्रगटाईआ। बख्शणहार साहिब दातार, बख्शीश आपणी दे वरताईआ। तेरा नाउं सदा निरँकार, निरवैर रूप आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, दर दरवेश मंगण चाईं चाईंआ।

दर दरवेश मंगो मंग, मांगत सच रूप जणाईआ। श्री भगवान सूरा सरबंग, शाह पातशाह सच्चा शहनशाहीआ। आत्म देवे इक्क अनन्द, अनन्द आत्म विच्च वखाईआ। भेव चुकाए परमानंद, परम पुरख हत्थ वड्डिआईआ। गीत सुणाए आपणा छन्द, सोहँ ढोला इक्क अलाईआ। दूई द्वैती ढाहे कंध, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। सुरत सवाणी ना होवे

रंड, शब्दी कन्त इक्क मिलाईआ। घर प्रकाश करे चन्द, जोती जोत नूर रुशनाईआ। लेखा चुक्के बत्ती दन्द, रसना जिह्वा सिफ्त ना कोई सालाहीआ। काया चोली चढ़े रंग, रंग रंगीला इक्को रंग दए रंगाईआ। माणस जन्म ना होवे भंग, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। लेखा चुक्के विच्च वरभंड, ब्रह्मण्ड चरनां हेठ दबाईआ। अन्तर अन्तम आत्म परमात्म पिता पूत लै के जाए सचखण्ड, जिस खण्ड वेखण कोई ना जाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि सदा बख्शंद, बख्शिश रहमत रहीम रहमान राम आपणी आप वरताईआ।
(४ अस्सू २०२० बि बलवन्त सिँघ दे गृह)